Machine Translated by Google

संयुक्त राज्य अमेरिका नौसेना अकादमी

दूरी और संवाद:
चर्च मिशनरी सोसाइटी और उभरते हिंदू समूह
औपनिवेशिक भारत

इतिहास विभाग के संकाय को ऑनर्स की डिग्री के लिए आवश्यकताओं की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत किया गया एक पेपर

द्वारा
MIDN 1/C मेगन मोयेट

सलाहकार:
प्रोफेसर हेडन जे.ए. बेलेनोइट

एनापोलिस, मैरीलैंड
17 दिसंबर 2010

Machine Translated by Google

1. शब्दावली

अद्वैत- दर्शन जो सभी चीजों की एकता सिखाता है, जिसमें मतभेद के लिए कोई जगह नहीं छोड़ी जाती।
व्यक्तिगत आत्मा

आर्य - शाब्दिक अर्थ: कुलीन; इस उद्देश्य के लिए, एक आर्य हमेशा स्वामी दयानंद के समुदाय का सदस्य होता है।
आर्य समाज समूह

भजन- एक भक्ति गीत

भक्ति- भगवान के प्रति समर्पण के लिए हिंदू शब्द

देशी- देशवासी; भारतीयता

धर्म - "धर्म" के लिए सबसे निकटतम हिंदू शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता है

द्वैत- द्वैतवादी दर्शन जो सिखाता है कि ईश्वर और प्रकृति की अलग-अलग आत्माएं बनी रहती हैं
अनंत काल तक एक दूसरे से अलग

मठ- मठ

माया- भ्रम

मोक्ष- पुनर्जन्म से आत्मा की मुक्ति

पाप- अशुद्धता, शारीरिक और नैतिक दोनों

परीक्षा - शाब्दिक अर्थ: परखा हुआ; अक्सर किसी ईश्वर को झूठा साबित करने के लिए विशिष्ट संदर्भ में प्रयोग किया जाता है (अर्थात,
कृष्ण परीक्षा, या मिशनरियों के लिए निर्देशित, ईसा परीक्षा, जिसका अर्थ है "यीशु
परीक्षण किया गया")

संसार- आत्माओं का स्थानांतरण

Machine Translated by Google

Samaj- society

संस्कृत - हिंदू धर्म की पवित्र भाषा

शुद्धि- एक शुद्धिकरण संस्कार; स्वामी दयानंद ने इसे पुनः धर्मांतरण के संस्कार के रूप में प्रयोग किया

वेद - भारतीय धर्मग्रंथों का एक विशाल संग्रह

Machine Translated by Google

1. परिचय और इतिहासलेखन

यह शोध प्रबंध ईसाइयों और ईसाइयों के बीच बातचीत के कुछ क्षणों का पता लगाने का प्रयास करता है
औपनिवेशिक भारत में हिंदुओं से यह पूछा गया कि उभरते भारत में उनकी क्या भूमिका थी, यदि कोई थी?
19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के आरंभ के "हिंदू" समूहों के बीच संबंधों को लेकर बहस चल रही है । अंततः, यह तर्क देने का प्रयास किया गया है कि
धर्म के मामलों में, [1] मिशनरी और हिन्दू प्रायः एक दूसरे से पूरी तरह से अनजान रहते थे।
ईसाइयों और हिंदुओं के बीच धार्मिक संचार की कमी जरूरी नहीं थी
भाषा संबंधी बाधाओं के कारण नहीं, बल्कि स्वयं के बारे में पूरी तरह से असंगत विचारों के कारण,
ईश्वरत्व और मोक्ष की धारणाएँ। एक तरह से, यह एक वैचारिक, लगभग
ज्ञानमीमांसा संबंधी बाधा। उत्तर भारत के उभरते धार्मिक समूह बहुत परिचित थे
मिशनरियों और उनकी शिक्षाओं के साथ, और वे, काफी हद तक, भारतीय विचारधारा को प्रतिबिंबित करते हैं
मिशनरियों के साथ आदान-प्रदान। कुछ मामलों में, ऐसा लगता है कि उन्होंने सोचा होगा कि
पश्चिमी "रणनीति" और संगठन के तरीकों, लेकिन अंत में उन्होंने बनाए रखा
ईश्वर और मोक्ष की प्रकृति के बारे में पारंपरिक रूप से “हिंदू” अवधारणाएं और समझ।

आधुनिक विद्वानों ने "हिंदू धर्म" को इस रूप में चित्रित करने के अनगिनत प्रयास किए हैं
19वीं सदी से पहले अस्तित्व में था । फिर भी कठिनाइयाँ आती हैं, और बिना किसी कारण के नहीं। एक देश में
भारत जितना विशाल और विविधतापूर्ण है, एक क्षेत्र में जो बात सत्य है, उसका विपरीत भी निश्चित रूप से सत्य है।
महाद्वीप के किसी अन्य कोने में। हिंदू धर्म एकेश्वरवादी था और आज भी है,
बहुदेववादी, देववादी, यहाँ तक कि नास्तिक, चौंकाने वाले द्वैतवाद को सत्य मानते हैं, बिना कभी सोचे समझे।
खुद का विरोधाभास। जब पश्चिम से सामना हुआ, तो इकबालिया पहचान की कमी
और मानकीकृत अनुष्ठानों ने कई लोगों को यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित किया कि "हिंदू धर्म" एक धर्म नहीं था, बल्कि

[1] इस शोधपत्र के उद्देश्य के लिए, एक "धर्म" को विश्वासों और प्रथाओं की एक प्रणाली के रूप में परिभाषित किया जाएगा जो पवित्र और अपवित्र की अवधारणाओं पर आधारित है। "पवित्र और अपवित्र" वाक्यांश इस शोधपत्र के लिए "धर्म" का वर्णन करने का सबसे उपयोगी तरीका है, लेकिन यह शोधपत्र एलिएड के बाकी काम या श्रेणियों से जुड़ा नहीं है।
मिर्सिया एलियाडे, द सेक्रेड एंड द प्रोफेन: द नेचर ऑफ रिलिजन, (ऑरलैंडो: हरकोर्ट इंक., 1987).

Machine Translated by Google

बल्कि यह एक दार्शनिक परंपरा है जिसमें विभिन्न प्रकार की परंपराएं और रीति-रिवाज शामिल हैं।

पश्चिम के साथ संबंधों, विशेष रूप से दबंग साम्राज्यवादी संबंधों के प्रति प्रतिक्रिया

ब्रिटिश साम्राज्य के साथ, हिंदू धर्म की नई धाराएं उभरीं, जिससे एक महत्वपूर्ण दौर शुरू हुआ

पहचान निर्माण। इस आदान-प्रदान की अनगिनत विशेषताएं हैं। कुछ लोगों के लिए,

हिंदू धर्म 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया के रूप में धर्म बना।

ब्रिटिश राज और उसकी ईसाई धर्म। दूसरों के लिए, हिंदू धर्म हमेशा से अस्तित्व में था, सनातन

(शाश्वत) धर्म, [2] और समय, स्थान और चिकित्सकों में परिवर्तन के साथ ही इसमें परिवर्तन हुआ है,

कोई भी धर्म ऐसा करेगा। इस अर्थ में, हिंदू धर्म अधिक ऐतिहासिक धर्मों से अलग है जैसे

यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म की शुरुआत किसी व्यक्ति या घटना से नहीं मानी जा सकती।

इस तरह के भिन्न वैचारिक (और लगभग ज्ञानात्मक) दृष्टिकोणों के साथ, बहस बहुत दूर है

बंद किया हुआ।

इस प्रश्न के प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण वर्तमान में प्रत्यक्ष रूप से प्रतिबिम्बित होते हैं।

हिंदू धर्म और व्यापक दुनिया के बीच संबंधों पर इतिहासलेखन

19वीं सदी। रॉबर्ट ई. फ्राइकेनबर्ग उन विद्वानों में से हैं जो "हिंदू धर्म" को

अंग्रेजों के आगमन से पहले यह एक भौगोलिक वर्णनकर्ता के अलावा कुछ नहीं था,

सिंधु नदी के लिए विदेशी शब्द,3 जिसका उपयोग "भारत की मूल निवासी किसी भी चीज़, चाहे वह हो" की पहचान के लिए किया जाता है

लोग, भाषा, रीति-रिवाज या धार्मिक परंपरा।"4 फ्राइकेनबर्ग के अनुसार, "हिंदू धर्म" का अर्थ है

किसी भी आवश्यक इकबालिया बयान से अधिक इसकी भौगोलिक पहचान और दिशा के बारे में,

सैद्धांतिक या यहां तक कि प्रथागत। उनका तर्क है कि यह बिल्कुल भी धर्म नहीं था, क्योंकि एक धर्मांतरित व्यक्ति

---

[2] "सनातन धर्म" शब्द का अनुवाद "शाश्वत कर्तव्य" के रूप में किया जा सकता है। यह कमोबेश "हिंदुओं" को एक साथ जोड़ने वाली चीज़ के लिए स्वदेशी शब्द है। यह इस धारणा से उपजा है कि वेद इतिहास के किसी बिंदु पर नहीं लिखे गए थे बल्कि वे अनंत काल से अस्तित्व में हैं।

3हिंदू शब्द संभवतः सिंध के लिए फारसी शब्द से लिया गया है, जिसका उपयोग सिंधु नदी घाटी में रहने वाले किसी भी व्यक्ति का वर्णन करने के लिए किया जाता है। हालाँकि इसे अंततः पूरे उपमहाद्वीप को शामिल करने के लिए व्यापक बनाया गया था, लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है कि इसे कभी भी "हिंदुओं" द्वारा खुद का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया गया था। यह निश्चित रूप से एक धार्मिक पहचानकर्ता नहीं था। सीए बेली, द बर्थ ऑफ़ द मॉडर्न वर्ल्ड 1780-1914 ग्लोबल कनेक्शन और तुलना
(माल्डेन, एमए: ब्लैकवेल पब्लिशिंग, 2007), 342.

[4] रॉबर्ट एरिक फ्राइकेनबर्ग, "भारत में ईसाई धर्म", ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ द क्रिश्चियन चर्च में, हेनरी चैडविक और ओवेन चैडविक द्वारा संपादित (ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2009), 268.

Machine Translated by Google

ईसाई धर्म या इस्लाम आसानी से अपने “हिंदू” सांस्कृतिक और पारंपरिक दिखावे को बनाए रख सकते हैं।

उदाहरण के लिए, धर्मांतरित लोगों के लिए “हिंदू” जैसे रीति-रिवाजों को बनाए रखना असामान्य नहीं था

आहार कानून या मौसमी छुट्टियां। इसी तरह, कोई भी व्यक्ति अपने विरासत में मिले "कम" को खत्म नहीं कर सकता

अधिक समतावादी धर्मों में से एक में शामिल होने से जाति की स्थिति और कलंक से मुक्ति मिलती है ।

भारत की धार्मिक संस्थाओं को केवल सुविधा के लिए "एक साथ वेल्ड" किया गया था

फ्राइकेनबर्ग जिसे ब्रिटिश ताज के अपने हिंदू साम्राज्य का “शाही तंत्र”6 कहते हैं

और ब्राह्मण राज.7 फ्राइकेनबर्ग अपने तर्क में अकेले नहीं हैं। सीए बेली हिंदू धर्म को देखते हैं,

19वीं सदी के दौरान अन्य धर्मों के साथ-साथ इसमें भी नाटकीय परिवर्तन हुए ।

संदेह व्यक्त करता है कि “इस पारंपरिक अर्थ में कोई धर्म अस्तित्व में था,”8 लेकिन वह देखता है

“स्थापित” अब्राहमिक धर्मों में भी कई परिवर्तन एक साथ हो रहे हैं,

जैसे कि मिशनरी ईसाई धर्म और यहां तक कि यूरोपीय साम्राज्य के अंतर्गत इस्लामी दुनिया के क्षेत्र भी।

औपनिवेशिक सत्ता। चूंकि इतिहास के बाहर कोई धर्म मौजूद नहीं है, इसलिए वह स्पष्ट रूप से इसका उपयोग नहीं करता है

हिंदू धर्म की वैधता पर हमला करने के लिए समय के साथ बदलाव। बेली ने समानताओं पर ध्यान दिया

"दर्शन, अनुष्ठानों और गूढ़ ज्ञान का दोहन करने की तकनीकों" की विशाल श्रृंखला के बीच

भारत में मौजूद "शक्ति"9 को मान्यता दी गई है, लेकिन यह भी स्वीकार किया गया है कि "हिंदू चर्च" का जन्म एक ज़रूरत से हुआ था।

"अपमान का सामना करने पर एक सुलभ परंपरा और ऐतिहासिक मूल्य की भावना

विदेशी शासन।”10

जेफ्री ए. ओडी, इसी तरह से तर्क देते हैं कि "हिंदू" शब्द का उपयोग

विशाल उपमहाद्वीप के उन सभी निवासियों का वर्णन करें जिन्होंने यूरोपीय लोगों को खोज पर भेजा था

---

[5] इसी तरह, उच्च जाति के ईसाइयों ने अपनी उच्च प्रतिमा को त्यागा नहीं। वास्तव में, फ्राइकेनबर्ग कहते हैं कि, भारत में “सभी ईसाई चर्च, संप्रदाय या धार्मिक दृष्टिकोण के साथ-साथ जन्म, जाति और समुदाय से भी खुद को पहचानने के लिए प्रवृत्त थे।” फ्राइकेनबर्ग के अनुमान के अनुसार, “प्रत्येक ईसाई समुदाय के पास अपना स्वयं का हाइफ़नाइज़्ड और हाइब्रिडाइज़्ड चरित्र, अपनी स्वयं की “दोहरी पहचान” या “दोहरी नागरिकता” थी, एक पृथ्वी पर और सीज़र के अधीन और दूसरा स्वर्ग में और ईश्वर के अधीन।” वही। 263.

[6] वही. 269.

[7] वही. 286. 8

बेली, आधुनिक विश्व का जन्म, 336.

[9] वही .342. 10 वही

.343.

Machine Translated by Google

समानताएं और अंततः "हिंदू धर्म" का आविष्कार।11 ओडी के लिए,

एक धर्म के रूप में हिंदू धर्म के निर्माण में प्रोटेस्टेंट उपस्थिति की भूमिका महत्वपूर्ण है।

आधुनिक विद्वत्ता में इस पर कम जोर दिया गया है।12 ओडी हिंदू धर्म में परिवर्तन की प्रेरणा ढूंढते हैं।

मिशनरी उद्यम के भीतर "स्व" की अवधारणाएँ काफी हद तक हैं। इसी तरह, ब्रायन के.

स्मिथ का तर्क है कि सभी धर्म बाहरी लोगों के आविष्कार हैं; हिंदू धर्म केवल सेवा करता है,

इसकी सभी बहुलता और स्पष्ट विरोधाभासों के साथ, इसके खतरों को उजागर करने के लिए

वर्गीकरण.13 हालाँकि, स्मिथ का मानना है कि जो लोग सभी के खिलाफ रैली करते हैं

मानविकी में वर्गीकरण, विशेष रूप से धर्म के संबंध में, केवल नुकसानदायक है

वे उन बहुमूल्य विषयों की रक्षा करना चाहते हैं।14 परिभाषा के दुश्मन, स्मिथ का मानना है,

यह समझना चाहिए कि किसी चीज़ का नाम लेने से आगे की चर्चा बाधित नहीं होती,15 बल्कि

उपयोगी चिंतन को सुगम बनाने के लिए जो आवश्यक है वह प्रदान करता है।16

हालाँकि, जूलियस लिपनर जैसे विद्वान इस संबंध में महत्वपूर्ण वैचारिक मुद्दे उठाते हैं

"हिंदू धर्म" पर बहस। वह वर्गीकरण के सभी प्रयासों को मुद्दे से भटका हुआ मानते हैं

पूरी तरह से। "हिंदू धर्म" अंग्रेजों द्वारा आविष्कार किया गया धर्म नहीं था, न ही यह कभी था

धर्म। इसके बजाय, यह एक जीवन शैली, सोचने का एक तरीका, देखने का एक तरीका था (और बना हुआ है)

उस दुनिया में जो जरूरी नहीं कि धार्मिक हो, लेकिन अनिवार्य रूप से धार्मिक रूप में खुद को प्रकट करती है

---

[11] जेफ्री ए. ओडी, "हिंदू धर्म का निर्माण: प्रोटेस्टेंट मिशनरी आंदोलन का हिंदू आत्म-समझ पर प्रभाव" भारत में ईसाई और मिशनरी: 1500 के बाद से क्रॉस-सांस्कृतिक संचार, जाति, धर्मांतरण और उपनिवेशवाद के विशेष संदर्भ के साथ, रॉबर्ट एरिक फ्राइकेनबर्ग द्वारा संपादित

(मिशिगन: डब्ल्यूएम. बी. एर्डमैन्स पब्लिशिंग कंपनी, 2003), 156.

[12] वही. 155.

[13] ब्रायन के. स्मिथ, "एक्सॉर्साइज़िंग द ट्रांसेंडेंट: स्ट्रैटेजीज़ फ़ॉर डिफ़ाइनिंग हिंदूइज़्म एंड रिलिजन" इतिहास
धर्म 27 नंबर 1 (1987), 34.

[14] यहाँ, वे "मानविकी के संदेहशील विद्वानों" का वर्णन करते हैं, जिनके लिए "परिभाषा वही है जो "कठिन" विज्ञानों में प्रयोगशाला-लेपित विश्लेषक करते हैं, और मानवतावादी अध्ययनों की वस्तुओं को इतना कीमती माना जाता है कि उन्हें उसी भाग्य के अधीन नहीं किया जा सकता जो प्राकृतिक वस्तुओं ने झेला है... एक मायावी तितली को क्रूरता से पिन किया जाना।" वही.33.

15यहां तक कि वह डराने वाली "परिभाषा" के विकल्प के रूप में "कार्यकारी परिभाषा" भी प्रदान करता है, जो इस विषय पर और अधिक काम करने की अनुमति देगा, यहां तक कि इसकी आवश्यकता भी होगी और "इसलिए कार्यकारी परिभाषा के निरंतर पुनर्लेखन को संभव बनाता है।" वही. 34.

16 वही. 33.

Machine Translated by Google

पश्चिम की धार्मिक धारणाओं को भारत में प्रतिरूप नहीं मिला, क्योंकि
परंपराओं में "धार्मिकता" की समान अवधारणाएँ, अर्थात् विश्वास, पंथ और
मोक्ष की धारणाएँ। फ्राइकेनबर्ग और ओडी की एक छिपी हुई आलोचना में, ब्रायन
पेनिंगटन ने उन लोगों को फटकार लगाई जो हिंदू धर्म को साम्राज्यवादी आविष्कार कहते हैं,
इस तरह की विद्वता को "फैशनेबल"18 कहा जाता है और तर्क दिया जाता है कि यह "कुल मिलाकर बहुत अधिक शक्ति प्रदान करता है
उपनिवेशवाद...और हिंदू एजेंसी और रचनात्मकता को मिटा देता है।"19 हिंदू धर्म न तो सख्ती से लागू किया गया था
अंग्रेजों से पहले धर्म की परिभाषा क्या थी, न ही यह कोई औपनिवेशिक निर्माण था, बल्कि "
निरंतर ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का परिणाम है।"20 इसी तरह का निष्कर्ष निकाला गया है
डेविड लोरेंजेन, जो तर्क देते हैं कि "यदि हिंदू धर्म एक निर्माण या आविष्कार है," तो यह
(किसी भी अन्य धर्म या संस्था की तरह) कई व्यक्तियों का सहयोग
बहुत लम्बे समय का क्रम.21

व्यापक ब्रिटिश-भारतीय, और अधिक विशेष रूप से ईसाई-हिंदू, संबंध
शाही संदर्भ के बाहर इसे नहीं समझा जा सकता। बेशक, वास्तविक संबंध
मिशनरी और साम्राज्य के बीच का अंतर काफी हद तक व्यक्ति पर निर्भर था। कुछ लोगों के लिए,
मिशनरी कार्य "भारत में हमारे प्रभुत्व को मज़बूत करने और स्थापित करने" का एक तरीक़ा था ।22
वास्तव में, अनेक मिशनरी समूहों की संगठनात्मक क्षमता उल्लेखनीय थी और,
कई मायनों में, यह 1840 के दशक में उभरने वाली औपनिवेशिक नौकरशाही की झलक थी।
हाल ही में हुए अध्ययनों से पता चला है कि कई मिशनरी खुद को ईसाई धर्म के हथियार के रूप में नहीं देखते थे।
साम्राज्य। हेडन बेलेनोइट के अनुसार, "विरोध के लिए बहुत जगह थी

---

[17] जूलिस लिपनर, "हिंदू: उनके धार्मिक विश्वास और व्यवहार" धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं का पुस्तकालय
प्रैक्टिसेस, जॉन हिनेल्स और निनियन स्मार्ट द्वारा संपादित (न्यूयॉर्क: रूटलेज, 1994), 1-23.

[18] ब्रायन के. पेनिंगटन, क्या हिंदू धर्म का आविष्कार किया गया था? ब्रिटेनवासी, भारतीय और धर्म का औपनिवेशिक निर्माण (ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,
2005), 4.

[19] वही. 5.

[20] वही. 6. 21

लोरेन्ज़ेन, डेविड एन. "हिंदू धर्म का आविष्कार किसने किया?" समाज और इतिहास में तुलनात्मक अध्ययन 41 नं.4
(1999): 654-655.

[22] सीएमएस इंटेलिजेन्सर 1869, 238.

Machine Translated by Google

सांसारिक (साम्राज्य) और अन्य सांसारिक (मिशनरी) क्षेत्रों के बीच।"23 इसी तरह, एंड्रयू
पोर्टर ने दिखाया है कि साम्राज्य के प्रति मिशनरी भावनाएँ उग्र निष्ठा से लेकर
समान रूप से भयंकर आक्रोश।24 जेफरी कॉक्स उन "कई कहानियों" को दिखाना चाहते हैं जो
इसमें वह सब शामिल है जिसे वह मिशनरी का "मुख्य आख्यान" कहता है।25 वह एक ऐसी दुनिया देखता है जो
भारतीयों और यूरोपीय लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा जो एक साथ "स्वदेशी, विदेशी और संकर" है।26
पहले से हाशिए पर पड़े पात्रों (विशेष रूप से महिलाओं और भारतीय ईसाइयों) को मजबूर करके
सुर्खियों में आने के बाद, वह अपने पाठकों को "सहानुभूति की मार्मिक अभिव्यक्तियाँ"27 दिखाते हैं
मिशनरी कार्य के प्रत्यक्ष विवरण पढ़ता है। वह अलग-अलग मिशनरियों का चित्रण करता है
(कभी-कभी) नस्लवाद का घोर विरोध करने और उनसे मित्रता की चाहत रखने वाले
स्वदेशी लोगों से उनका सामना हुआ। हालाँकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि जो भी हो,
व्यक्तिगत मिशनरी की छवि, वह शक्ति के साथ दृश्य पर पहुंचे
ब्रिटिश साम्राज्य उनके पीछे था और उनका लक्ष्य चाहे जो भी हो, वे ब्रिटिश साम्राज्य के लिए एक प्रभावी हथियार बने रहे।
साम्राज्य.28

"हिंदू धर्म" की उत्पत्ति के इर्द-गिर्द बहस (विशेष रूप से
साम्राज्य) जीवंत बना हुआ है, बड़ी मात्रा में साहित्य को प्रेरित कर रहा है, फिर भी इसमें पर्याप्त जगह है
आगे की खोज.29 उदाहरण के लिए, हालांकि इस बात पर आम सहमति है कि ब्रिटिशों की उम्र

---

[23] बेलेनोइट, लेट कोलोनियल इंडिया में मिशनरी शिक्षा और साम्राज्य, 56.

[24] कुछ लोग तो पूरी तरह से उदासीन थे। कई लोगों ने साम्राज्य की संपत्ति को ईश्वरीय प्रावधान के रूप में देखा जो उन्हें "विधर्मी" आत्माओं तक पहुँच प्रदान करता है। स्पष्ट रूप से, उनकी पहली प्राथमिकता साम्राज्य नहीं थी, क्योंकि उनमें से कई लोग पूरी दुनिया को बदलने के सपने के साथ रवाना हुए थे, और केवल ब्रिटिश संपत्ति का उपयोग अन्य देशों के लिए पुल के रूप में किया था। उनका "कोई अंतिम इरादा नहीं था कि वे अपनी गतिविधियों को औपनिवेशिक क्षेत्र तक सीमित रखें।" एंड्रयू पोर्टर, धर्म बनाम साम्राज्य?
ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट मिशनरी और ओवरसीज एक्सपेंशन, 1700-1914 (मैनचेस्टर; मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004), 43, 64, 323 और 324.

[25] जेफ़री कॉक्स, इंपीरियल फ़ॉल्ट लाइन्स: क्रिस्चियनिटी एंड कोलोनियल पावर इन इंडिया, 1818-1940 (स्टैनफ़ोर्ड: स्टैनफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002), 15.

[26] वही.

[27] वही. 16.

[28] पोर्टर, धर्म बनाम साम्राज्य?, 316.

[29] उदाहरण के लिए, लिपनर ने अपनी पुस्तक "हिंदूज़" की शुरुआत यह कहते हुए की है: "हिंदू धर्म पर पुस्तकों का उद्योग"
हमेशा की तरह व्यस्त, इसलिए एक स्पष्ट रूप से संतृप्त बाजार में, हमें पूछना चाहिए: क्या दूसरे के लिए जगह है?" वह निष्कर्ष निकालता है कि वहाँ है। वास्तव में, "सिद्धांत रूप में पुस्तकों की एक अंतहीन धारा के लिए जगह है।" एक "प्रमुख सांस्कृतिक घटना" जिसने धर्म, दर्शन, विज्ञान के क्षेत्र में योगदान देने वाले व्यक्तियों को जन्म दिया है,

Machine Translated by Google

राज निस्संदेह हिंदुओं के लिए पहचान निर्माण का समय था, आगे का अध्ययन
मिशनरी संबंधों के पीछे छिपी "सामाजिक ताकतों" पर दबाव डालना आवश्यक है ।30
उभरते हिंदू समूहों और प्रोटेस्टेंट के बीच सतही समानताओं को नोटिस करने में जल्दी
ब्रिटिश मिशनरियों के प्रकाशन, धर्मांतरण के रीति-रिवाज और पूजा-पाठ के संबंध में,
और धर्मांतरण की रणनीति। लेकिन वास्तविक "धार्मिक" संवाद के प्रश्न काफी हद तक
एक बढ़ते समूह के भीतर सतही चिल्लाहट के मुकाबलों के रूप में नजरअंदाज या नजरअंदाज कर दिया गया
जनसांख्यिकी-आवेशित31 उत्तर औपनिवेशिक भारतीय संदर्भ। यह पेपर कोई दूसरा नहीं है
इंजील एंग्लिकनवाद और नव-हिंदूवाद का संरचनात्मक पक्ष। बल्कि, यह एक है
उनके अंतःक्रियाओं का लक्षण-चित्रण जो धार्मिक प्रकृति को समझने का प्रयास करता है
संवाद करें और पता लगाएं कि क्या इन अलग-अलग देशों के लोगों के बीच संचार संभव है
संस्कृतियों में ऐसा होना तो दूर की बात है, यह संभव भी नहीं था। कई उदाहरणों में, यह पेपर दिखाएगा
कि इस तरह के आदान-प्रदान संभव नहीं थे, कि एक समूह की कुछ मौलिक चिंताएँ
दूसरे को ज़रा भी परेशानी नहीं हुई। यह बात खास तौर पर उन लोगों के मामले में सच है जो दूसरों को परेशान नहीं करते।
पाप, मुक्ति और पाप की प्रकृति (साथ ही पाप और पाप के बीच संबंध) के प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण
मनुष्य और ईश्वरत्व के बीच। हालाँकि, वास्तविक जीवन में बहुत सी बाधाएँ थीं
संचार के दौरान, कुछ ऐसे उदाहरण थे जिनमें “संवाद” का क्षण आया।

ललित कला, तथा शारीरिक, तकनीकी और साहित्यिक कौशल स्वाभाविक रूप से आगे और गहन अन्वेषण की मांग करते हैं।
लिपनर, हिन्दूज, 1.

[30] फ्राइकेनबर्ग ने ऐसा ही मामला बनाते हुए कहा: "अब तक, क्योंकि शायद बहुत अधिक जोर दिया गया है
मिशनरियों और शासकों की भूमिकाओं पर और शायद स्वदेशी एजेंसी पर बहुत कम ध्यान दिया गया है, धर्मांतरण के प्रभाव और धर्मांतरण (या प्रति-धर्मांतरण) की
प्रतिक्रियाओं और एक-दूसरे के विरोध में स्वदेशी आंदोलनों को वह पूर्ण व्याख्या और अन्वेषण नहीं मिला है जिसकी ऐसी घटनाओं को आवश्यकता थी। यह तथ्य
कि मिशनरी विरोधों और उस पर सरकारी नीति के बारे में अधिक जानकारी है, हमें इस संभावना से अंधा नहीं करना चाहिए कि वास्तव में जो कुछ हुआ, वह इतिहासकारों
की नज़र से छिपा हुआ है। हमारी अज्ञानता के कारण, चुपचाप एक-दूसरे के खिलाफ संघर्ष करने वाली सामाजिक ताकतें, अब तक हमारी नज़र से परे रहने के लिए कम
(या अधिक) अडिग नहीं थीं।” फ्राइकेनबर्ग, क्रिश्चियनिटी इन इंडिया, 266।

[31] विशेषकर 1871 में प्रथम अखिल भारतीय जनगणना के बाद, जनसांख्यिकी जनसंख्या मापने का एक महत्वपूर्ण तरीका बन गई।
“कोई धर्म सफल हो रहा था या असफल।” केनेथ डब्ल्यू. जोन्स, “ब्रिटिश भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन” द न्यू कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया में,
गॉर्डन जॉनसन द्वारा संपादित, भाग III खंड I.
(कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989), पृ. 219.

Machine Translated by Google

यह आलेख विशेष रूप से मिशनरियों के बीच आपसी संबंधों पर केंद्रित है।
उत्तर भारत में चर्च मिशनरी सोसाइटी (सीएमएस) और आर्य समाज के नेता और
रामकृष्ण मठ और मिशन द्वारा 1870 और 1920 के बीच स्थापित। इसमें मुद्रित प्राथमिक पाठ्य पुस्तकों का प्रयोग किया गया है।
लाला लाजपत राय और स्वामी विवेकानंद जैसे समाज कार्यकर्ताओं द्वारा लिखे गए स्रोत,
साथ ही सीएमएस वार्षिक पत्र और खुफिया जानकारी। चूंकि ये दोनों समूह इतने भिन्न थे
उनके साधन और अंत में, इस तरह के दृष्टिकोण से हमारी समझ में बहुत रंग आना चाहिए
मिशनरियों और "हिंदू धर्म" के बीच बातचीत। भारतीय, बेशक,
कुछ हद तक वे ब्रिटिश मिशनरियों द्वारा निर्धारित वाद-विवाद के मापदंडों से बंधे हुए थे, लेकिन
निश्चित रूप से वे उत्पीड़न और साम्राज्य के प्रति निष्क्रिय प्रतिक्रिया मात्र नहीं थे।
राज के काल को अब पूरी तरह से प्रतिक्रियावादी कहकर खारिज नहीं किया जाना चाहिए।32 एक तरह से, यह
यह शोधपत्र एंग्लिकन इतिहास की जांच करके दक्षिण एशियाई इतिहासलेखन की सीमाओं को पार करने का प्रयास करता है।
भारत में मिशनरियों को न केवल साम्राज्य या चर्च के इतिहास के चश्मे से देखा जाता है, बल्कि
उन्होंने 19वीं सदी के उत्तरार्ध में तेजी से बदलते भारतीय समाज में उन्हें सक्रिय सामाजिक प्रतिनिधि के रूप में स्थापित किया।

ब्रिटिश भारत में धार्मिक आंदोलनों को अक्सर "परिचित आख्यानों" में रखा जाता है
सुधार और पुनरुद्धार दोनों का,"33 जिसमें वे लोग मुख्य रूप से वकालत करते दिखे
सामाजिक चेतना वाले लोगों को सुधारक माना जाता था, जबकि जो लोग पारंपरिक मूल्यों की वापसी की वकालत करते थे
हिंदू धार्मिक भावना के समर्थक पुनरुत्थानवादी थे। सुगाता बोस और आयशा जलाल का तर्क है कि
ये शब्द विशेष रूप से उपयोगी नहीं हैं, क्योंकि सामाजिक सुधार और धार्मिक विचार
पुनरुत्थान का विरोध आवश्यक नहीं है; और जरूरी नहीं कि कोई विरोध हो
सामाजिक चेतना और धार्मिक भावना के बीच विरोधाभास, या, जैसा कि वे कहते हैं,
"तर्कसंगत और राष्ट्रीय।" विशेष रूप से 19वीं सदी के अंत में, बहुत सारे तर्क थे

32वही 8.

[33] सुमित सरकार, "भारतीय राष्ट्रवाद और हिंदुत्व की राजनीति" भारत को हिंदू बनाना: भारत में धर्म, समुदाय और लोकतंत्र की राजनीति, डेविड लुडेन द्वारा संपादित (नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005), 280.

Machine Translated by Google

"सुधार और पुनरुद्धार" के विचारों के बीच "अंतर्क्रिया और अतिव्यापन" है।34 वसुधा डालमिया तर्क देती हैं कि ये शब्द कभी भी विशेष रूप से उपयोगी नहीं रहे थे, क्योंकि "पारंपरिक/आधुनिक ध्रुवीकरण" केवल उन लोगों का आत्म-प्रतिनिधित्व था जो खुद को इस रूप में चित्रित करना चाहते थे बाहरी दबाव के खिलाफ मजबूती से खड़े रहना। उन्होंने तर्क दिया कि वास्तव में, दस्तावेजों में यह बात कही गई है कि अवधि "मिशनरियों, प्राच्यविदों और पश्चिमी विचारों के साथ गहन संपर्क" दिखाती है और समूहों के बीच "निरंतर परिवर्तन और आदान-प्रदान"35 आर्य समाज में उदाहरण के लिए, रामकृष्ण मिशन और अन्य संस्थाओं में कई उल्लेखनीय समानताएँ थीं। वेदों को पूर्ण सत्य के रूप में स्वीकार किया, दोनों ने सामाजिक "सुधार" को बढ़ावा दिया और दोनों ने उपदेश दिया हिंदू धर्म की श्रेष्ठता। हालाँकि, आर्य समाज, अपनी असहिष्णुता और सापेक्षता के कारण भौगोलिक अलगाव को आमतौर पर औपनिवेशिक अतिक्रमण की "प्रतिक्रिया" के रूप में लिखा जाता है भारतीय धार्मिक परंपरा। दूसरी ओर, रामकृष्ण मिशन आमतौर पर वैश्विक सहिष्णुता की दिशा में एक प्रगतिशील आंदोलन के रूप में याद किया जाता है। यह पेपर दिखाएगा उन श्रेणियों और सामान्यीकरणों की गहन जांच की आवश्यकता है और वास्तव में ऐसा नहीं है ऐतिहासिक साक्ष्यों की गहन जांच में यह खरा नहीं उतरता। यह जांच करने का प्रयास करता है मिशनरियों के साथ बातचीत करें और तय करें कि क्या कोई वास्तविक संचार है, या वे सिर्फ एक दूसरे को पूरी तरह से याद करते हैं। यह जांचता है कि ये व्यापक अंतःक्रियाएं कैसे प्रकट होती हैं विशेष रूप से आर्य समाज और रामकृष्ण मठ एवं मिशन में।

2. सीएमएस-भारतीय संपर्क की विशेषता

मिशनरियों और भारतीयों के बीच बातचीत को समझने के लिए यह आवश्यक है कि सबसे पहले ईश्वर, धर्म, पाप और मोक्ष के बारे में मिशनरी दृष्टिकोण को समझना आवश्यक है।

---

[34] सुगाता बोस और आयशा जलाल, आधुनिक दक्षिण एशिया: इतिहास, संस्कृति और राजनीतिक अर्थव्यवस्था (न्यूयॉर्क: रूटलेज, 2004), 89-90.

[35] वसुधा डालमिया, हिंदू परंपरा का राष्ट्रीयकरण: भारतेंदु हरिश्चंद्र और उन्नीसवीं-सदी बनारस (दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999), 5.

Machine Translated by Google

19वीं शताब्दी में इंग्लैंड के धार्मिक परिदृश्य पर सतही नजर डालने से भी पता चलता है

हिंदुओं का धार्मिक बहुलता पर एकाधिकार नहीं था, न ही वे अकेले थे

साम्राज्य और बड़ी शक्तियों के साथ संबंधों के परिणामस्वरूप अपनी आध्यात्मिक पहचान को पुनः परिभाषित करना

विश्व.36 एंग्लिकन समुदाय के भीतर ही ऐसे मतभेद थे जो एक दूसरे के साथ मेल नहीं खाते थे।

अनुष्ठान, रीति-रिवाज और ईश्वर और ईश्वर के बीच के रिश्ते में "चर्च" की भूमिका पर विवाद

उदाहरण के लिए, जेफरी कॉक्स ने हाल ही में किए गए शोध की आलोचना की है, जिसमें लोगों में विभाजन को दर्शाया गया है।

विक्टोरियन इंग्लैंड को प्रोटेस्टेंट और रोमन कैथोलिक के बीच संघर्ष के रूप में देखा जाता है।

इसके बजाय तर्क दिया जाता है कि "चर्च और चैपल के बीच व्यापक सामाजिक विभाजन" केंद्रीय था

उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के आरंभ में संघर्ष।37 जबकि एक जीवित रहना संभव था

पूरा जीवन विक्टोरियन इंग्लैंड में बिना किसी रोमन कैथोलिक से मिले (जैसा कि वे थे,

1851 की जनगणना के अनुसार, जनसंख्या का केवल 2-3% हिस्सा), नॉनकन्फॉर्मिस्ट चैपल और मीटिंग-

ईंट और गारे से बने घर स्थापित चर्च के लिए एक स्पष्ट चुनौती थे

इंग्लैंड .38 ब्रायन पेनिंगटन जैसे अन्य विद्वान "कैथोलिक अन्य" के डर को देखते हैं

ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट दिमाग पर भारी बोझ डालते हुए, कैथोलिक विरोध को एक अपराध कहा गया।

---

[36] एंड्रयू पोर्टर इस "परिभाषित करने और पुनर्परिभाषित करने" की अवधि को 1880-1914 बताते हैं।
"परिचय" ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट मिशनों के इंपीरियल होराइजन्स, 1880-1914, एंड्रयू पोर्टर द्वारा संपादित, (मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैन्स पब्लिशिंग कंपनी, 2003), 1. लेकिन चर्च, चर्चों और राज्य के बीच संबंध उन्नीसवीं सदी के अधिकांश समय में अस्थिर रहे। फ्रांसिस नाइट 1800-1870 की अवधि को "सुधार के बाद से किसी भी परिवर्तन से ज़्यादा तेज़, नाटकीय और स्थायी" के रूप में परिभाषित करते हैं। फ्रांसिस नाइट, द नाइनटीन्थ-सेंचुरी चर्च एंड इंग्लिश सोसाइटी, (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1995), 1. ह्यूग मैकलियोड का तर्क है कि 1860 ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट पहचान निर्माण में एक महत्वपूर्ण तारीख है। मैकलियोड के अनुसार, 1860 से पहले की अवधि को "अडिग कैथोलिक विरोध" के रूप में परिभाषित किया गया था, जबकि 1860 और प्रथम विश्व युद्ध के बीच की अवधि में एक नई राष्ट्रीय पहचान बन रही थी, "कभी-कभी प्रोटेस्टेंटवाद के पुराने संस्करणों के साथ संयोजन में, और कभी-कभी तनाव में"। ह्यूग मैकलियोड, "प्रोटेस्टेंटवाद और ब्रिटिश राष्ट्रीय पहचान, 1815-1945" राष्ट्र और धर्म: यूरोप और एशिया पर परिप्रेक्ष्य पीटर वैन डेर वीर और हार्टमुट लेहमैन द्वारा संपादित (प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999), 44।

[37] जेफ़री कॉक्स, "क्या विक्टोरियन नॉनकन्फ़र्मिस्ट सबसे बुरे साम्राज्यवादी थे?" विक्टोरियन स्टडीज़ 46 नं. 2 (2004), 243.

[38] वही .244.

Machine Translated by Google

विक्टोरियन इंग्लैंड में "महामारी"।39 ये दोनों विवरण सत्य हैं, लेकिन अलग-अलग तरीकों से

गोले.

घरेलू मोर्चे पर सभी प्रोटेस्टेंटों के बीच जोशीली बहस चल रही थी

विविधताएँ। फिर भी मिशन क्षेत्र में, मतभेद मिटते नज़र आए।40 उन्हें विवाद से डर लगता था

"धार्मिक मुद्दों के बारे में" ताकि "बुतपरस्त" सवाल न करें कि क्या वे "वास्तव में एक ही हैं"

विश्वास" और, यदि वे थे, तो वे "आपस में युद्ध क्यों करते थे।"41 इसके विपरीत, रोम ने सवाल उठाया

इंग्लैंड में यह एक अपेक्षाकृत छोटा खतरा था, लेकिन मिशन क्षेत्र में रोमन कैथोलिक धर्म

"मूर्तिपूजा" के दूसरे रूप के रूप में देखा जाता है।42 आत्माओं के लिए "रोमनवादियों" के साथ संघर्ष

मिशनरियों द्वारा भारतीयों का वर्णन अक्सर बहुत ही सैन्यवादी शब्दों में किया जाता था, जो स्पष्ट रूप से एक दूसरे के साथ टकराव पैदा करता था।

एक पक्ष दूसरे के खिलाफ़। उदाहरण के लिए, एक मिशनरी ने "रोमनवादी हमले" के बारे में लिखा

उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि "पुजारी हमें कोई गंभीर नुकसान पहुंचाने में असफल रहे हैं।"43 अक्सर,

---

[39] पेनिंगटन के अनुसार, संसद में बहस भी कभी-कभी "प्राचीन पूर्वाग्रहों को हवा देने" के लिए रोक दी जाती थी।
ऑक्सफोर्ड के बिशप लॉयड के कथन को उद्धृत करते हुए (एक संसद सदस्य से) कहा गया है कि "कैथोलिक प्रश्न "हम जो कुछ भी खाते-पीते हैं या कहते हैं या सोचते हैं,
उससे जुड़ा हुआ है।" कैथोलिक अपनी मूर्तिपूजा, अंधविश्वास, पुरोहिती अत्याचार और सबसे बुरी बात यह कि ब्रिटिश राज्य के समक्ष पोप के प्रति उनकी निष्ठा खतरनाक थी।

पेनिंगटन, क्या हिंदू धर्म का आविष्कार किया गया था?, 67-68. डी.डब्लू. बेबिंगटन इस धारणा को कुछ कदम आगे ले जाते हैं और धार्मिक उद्देश्यों के संदर्भ में ब्रिटिश साम्राज्य की महत्वाकांक्षाओं का वर्णन करते हैं। उदाहरण के लिए, उनका मानना है कि ताहिती पर फ्रांसीसी कब्जे (जिसके कारण एल.एम.एस., लंदन मिशनरी सोसाइटी का दमन हुआ) ने ब्रिटिशों को न्यू हेब्रिड्स (1885) और न्यू गिनी (1886) पर कब्ज़ा करने के लिए प्रेरित किया, क्योंकि "क्षेत्र का अधिग्रहण" "एक ऐसी शक्ति के खिलाफ़ एक पूर्वव्यापी हमले के रूप में देखा गया जो विश्व सुसमाचार प्रचार में बाधाएँ खड़ी करेगी।" डी.डब्लू. बेबिंगटन, "प्रायश्चित, पाप और साम्राज्य, 1880-1914" ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट मिशन के इंपीरियल होराइजन्स, 1880-1914, एंड्रयू पोर्टर द्वारा संपादित (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.

एर्डमैन्स पब्लिशिंग कंपनी, 2003), 27-28. बेशक, यह दृष्टिकोण शायद थोड़ा बहुत सरल है, क्योंकि साम्राज्य की दुनिया के धर्मांतरण के अलावा भी महत्वाकांक्षाएँ थीं।

[40] बेलेनोइट, मिशनरी शिक्षा और साम्राज्य, 9.

[41] सीएमएस इंटेलिजेन्सर 1971, 66.

[42] डी.डब्लू. बेबिंगटन के अनुसार, रोमन चर्च को "ईसाई धर्म का थोड़ा गलत रूप" नहीं बल्कि "आत्माओं को विनाश की ओर ले जाने वाला एक चालाक ढोंग" माना जाता था। इसी तरह, वे कहते हैं कि "इंजीलवादियों को इस्लाम के साथ धर्मांतरण के लिए प्रतिद्वंद्विता का एहसास था, लेकिन उनके दिमाग में रोमन कैथोलिक धर्म का भूत कहीं ज़्यादा छाया हुआ था।" बेबिंगटन, "प्रायश्चित, पाप और साम्राज्य," 21, 27. इसी तरह, पेनिंगटन कहते हैं कि प्रोटेस्टेंट मिशनरियों ने अक्सर "रोमन और भारतीय मूर्तिपूजा" को एक ही रूप में देखा। पेनिंगटन, क्या हिंदू धर्म का आविष्कार किया गया था?, 68.

[43] बी.यू.एल., वार्षिक पत्र, 1888, पृष्ठ 156. वास्तव में, रोम और इटली के आक्रमणों और चुनौतियों का यह वर्णन बहुत ही रोचक है।
ईसाई धर्म के प्रयासों को "नुकसान पहुँचाने वाले" पादरी मिशनरी लेखन में सैन्य शब्दों के एक बड़े पैटर्न का हिस्सा थे। उदाहरण के लिए, रेव. लुईस ने लिखा, "निश्चित रूप से घर पर चर्च को शायद ही हिंदू धर्म और मुस्लिम धर्म के खिलाफ अपना युद्ध शुरू करने के लिए कहा जा सकता है।" बीयूएल, रेव. एच. लुईस, वार्षिक पत्र, 1888, पृष्ठ 147। एक अन्य मिशनरी ने जिस समूह के साथ यात्रा की, उसका वर्णन "आक्रामक युद्ध के लिए एक निकाय" के रूप में किया, जिसमें वह स्वयं, एक "पादरी, एक ईसाई पंडित और एक पाठक" शामिल थे। बीयूएल, रेव. एई बोल्बी, वार्षिक पत्र, 1894, पृष्ठ 87। फिर भी एक अन्य मिशनरी ने हिंदू घर और विस्तारित परिवार को "एक योजना के रूप में वर्णित किया

Machine Translated by Google

कैथोलिक धर्म को “बुतपरस्त” प्रथाओं के समान संदिग्ध रूप से देखा गया। रेव प्राइस,
1895 में मार्फा से घर पर लिखते हुए उन्होंने कहा कि जहां तक उन्हें पता है, एकमात्र अंतर
दोनों के बीच अंतर यह था कि एक के पास “बेहतर कपड़े पहने मूर्ति” थी और जहां एक ने दीपक का इस्तेमाल किया था,
अन्य प्रयुक्त मोमबत्तियाँ.44

इंग्लैंड में सामने आने वाले धार्मिक “संघर्ष” अक्सर सूक्ष्म होते थे,
सिद्धांत-आधारित विवाद, इस तथ्य से और जटिल हो गए हैं कि एंग्लिकनवाद गर्व से
किसी भी अन्य प्रोटेस्टेंट चर्च से बिल्कुल अलग चरित्र बनाए रखा ।45
विद्वत्ता इन बहसों में साम्राज्यवाद के चश्मे की भूमिका को पहचान रही है।46
हालाँकि, विद्वानों ने लंबे समय से यह माना है कि कई बार, इनके मूल में
असहमति का मुख्य कारण ईश्वर के साथ मनुष्य के रिश्ते में "चर्च" की भूमिका थी। हालाँकि निजी
प्रार्थना, अध्ययन और भक्ति शुरू से ही ब्रिटिश ईसाई जीवन के महत्वपूर्ण पहलू रहे हैं।
17वीं सदी में,47 इवेंजेलिकल अवेकनिंग ने इसके महत्व पर अधिक जोर दिया
मोक्ष के मामले में व्यक्तिगत जिम्मेदारी का निर्वाह।48 यहां तक कि सबसे अधिक कर्मकांडीय लोगों के लिए भी,
संस्कारों को ईश्वर के साथ अधिक घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए सहायक “सहायक” के रूप में देखा जाता था।
जो लोग निम्न-चर्च किस्म के थे, उनके लिए बाहरी मदद लेना गलत और यहां तक कि “कमज़ोर” था;

किलाबंदी" जो "ईसाई हमले के हथियारों" से "बचाव" करती है, जबकि "प्रत्येक बाहरी घेराव रेखा की कमान इसकी आंतरिक सुरक्षा द्वारा नियंत्रित होती है।" सीएमएस
इंटेलिजेंसर 1892, 813।

[44] बी.यू.एल., रेव. ई.डी. प्राइस, वार्षिक पत्र, 1898, पृ. 163.

[45] ओवेन चैडविक ने चर्च ऑफ इंग्लैंड के विशिष्ट चरित्र का एक संक्षिप्त इतिहास दिया है, जिससे इसे यूरोपीय महाद्वीप के बाकी हिस्सों में प्रोटेस्टेंटवाद के विभिन्न रूपों के साथ सामान्यीकृत करना असंभव हो जाता है।
ओवेन चैडविक, द माइंड ऑफ द ऑक्सफोर्ड मूवमेंट, (स्टैनफोर्ड: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1960), 1-30.
स्टैंडिश मीचम बताते हैं कि इतिहासकारों (और जनता) की मिशनरियों के प्रति भावनाओं में लगातार उतार-चढ़ाव इस मुद्दे को और भी जटिल बनाता है। वे लिखते हैं,
"इवेंजेलिकल और इवेंजेलिकलिज्म लंबे समय तक या तो पक्ष में या पक्ष से बाहर रहने में असमर्थ प्रतीत होते हैं।" स्टैंडिश मीचम, "द इवेंजेलिकल इनहेरिटेंस" द जर्नल
ऑफ ब्रिटिश स्टडीज 3 नंबर 1 (1963), 88।

[46] पोर्टर, “परिचय” इंपीरियल होराइजन्स, 2-3.

[47] एंड्रयू कैम्बर्स और मिशेल वोल्फ, "पढ़ना, पारिवारिक धर्म, और देर से इंजील पहचान
स्टुअर्ट इंग्लैंड” द हिस्टोरिकल जर्नल 47 नंबर 4 (2004): 875-896.

[48] कैथरीन हॉल इसे "महत्वपूर्ण, गंभीर या वास्तविक ईसाई धर्म का पुनरुत्थान" कहती हैं। वह लिखती हैं कि यह दोनों था
गैर-अनुरूपतावादी और एंग्लिकन जो व्यक्ति की केंद्रीयता और व्यक्तिगत रूपांतरण अनुभव में विश्वास करते थे। कैथरीन हॉल, सिविलाइजिंग विषय: अंग्रेजी कल्पना में मेट्रोपोल और कॉलोनी 1830-
1867 (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 2002), 86.

Machine Translated by Google

उद्धारक संबंध पूरी तरह से “अंदर से” खोजा जाना चाहिए।49 फिर भी, दोनों पक्षों पर

इस बहस में, व्यक्तिगत अनुभव के महत्व पर सहमति थी

धर्म, या तो अलौकिक, तेजी से रहस्यमय संस्कारों के माध्यम से,50 या

निजी प्रार्थना.

हालाँकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि जिन लोगों ने विवाद को जन्म दिया, उनमें से कई लोग वास्तव में ऐसा नहीं कर रहे थे।

इसलिए अलग होने का प्रयास किया जा रहा है, बल्कि एक चर्च को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है

पहले से ही अस्तित्व में था।51 सभी के लिए अंतिम लक्ष्य ईसाई धर्म की अंततः एकता थी ।52

1910 के सीएमएस इंटेलीजेंसर में एक मिशनरी ने लिखा कि, हालांकि शब्द “वर्गीकरण”

व्यवस्था के सकारात्मक अर्थ रखता था, यह वास्तव में "महान विभाजक" का एक उपकरण था, क्योंकि यह

निहित तुलना और प्रेरित पौलुस की शिक्षा की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न की कि "वहाँ

कोई नर या नारी नहीं हो सकता; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक मनुष्य हो।”53 ऐसा प्रतीत होता है कि

एकता की चाहत ने चर्च ऑफ इंग्लैंड से जुड़े सभी लोगों को जकड़ लिया।

अमेरिकन एपिस्कोपेलियन ने 1909 के इंटेलिजेंसर के हवाले से भविष्यवाणी की थी कि 20वीं सदी में

---

[49] मीचम ने इस संघर्ष को पीढ़ियों के संदर्भ में दर्शाया है। उदाहरण के लिए, "क्लैफ़म संतों" की पहली पीढ़ी का मानना था कि अपने उद्धार के लिए ईमानदारी से प्रार्थना करना व्यक्ति की ज़िम्मेदारी है और उन्हें पूजा-पाठ से वास्तविक घृणा थी। हालाँकि, दूसरी पीढ़ी आश्वस्त नहीं थी। वे अपने पिताओं द्वारा पाए गए गहरे, व्यक्तिगत आश्वासन का अनुभव करने में असमर्थता से पीड़ित थे और संस्कारों से मदद प्राप्त करने के लिए खुले थे। इसी तरह, सैमुअल विल्बरफोर्स, हालांकि "सबसे शानदार संतों" के बेटे थे, संस्कारों पर "भरोसा" करने में खुश थे और उन्होंने लिखा कि ""प्रभु के शरीर और रक्त"" में हिस्सा लेने से भाग लेने वाले की आत्मा मजबूत और तरोताज़ा हो जाती है।" हालाँकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि दोनों पीढ़ियों में, ये लोग, चाहे निश्चित रूप से "इवेंजेलिकल" हों या रोमन प्रवृत्ति वाले, "असहमतियों और उच्च चर्च के लोगों को एकजुट करना" चाहते थे और व्यक्तिगत जिम्मेदारी की भावना के साथ उच्च चर्च को मजबूत करना चाहते थे या इवेंजेलिकल को शक्तिशाली और मददगार संस्कार वापस देना चाहते थे। मीचम, “द इवेंजेलिकल इनहेरिटेंस,” 94-99.

[50] चैडविक इसे किसी सैद्धांतिक मुद्दे के बजाय संस्कारों के दृष्टिकोण के रूप में देखते हैं, क्योंकि यह प्राथमिक अंतर है
ऑक्सफोर्ड मूवमेंट और पिछली पीढ़ी के हाई चर्चमैन के बीच अंतर। चैडविक, द माइंड ऑफ द ऑक्सफोर्ड मूवमेंट (स्टैनफोर्ड: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1960)।

[51] वास्तव में, ईसाई धर्म में धर्म के व्यक्तिगत अनुभव की ओर ये सभी आंदोलन, ओवेन चैडविक के अनुसार, व्यक्तिगत धर्म की एक बड़ी ईसाई परंपरा का हिस्सा हैं। ईसाई धर्म ने हमेशा “हृदय का धर्म” सिखाया है और “अपने संस्थापक से यह स्वीकार किया है कि हृदय का धर्म अनुष्ठानों के उचित उत्सव से परे है।” ओवेन चैडविक, द सेक्युलराइजेशन ऑफ द यूरोपियन माइंड, 23.

[52] उद्धार के बारे में अधिक व्यक्तिगत दृष्टिकोण रखने वालों ने व्यक्तिगत प्रार्थना पर अधिक जोर देने के साथ एक स्थापित चर्च की कल्पना की। जो लोग संस्कारों में आराम पाते थे, वे चाहते थे कि उनके निम्न चर्च के भाई-बहन उस महान "सहायता" को महसूस करें जो उन्हें मिली थी। मीकम, "द इवेंजेलिकल इनहेरिटेंस," 94-99।

[53] सीएमएस इंटेलीजेंसर 1910, 715.

Machine Translated by Google

सदी में, दुनिया की दूसरी "मुख्य चिंता" "ईसाई धर्म का एकीकरण" होगी
चर्च," "अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता" के बाद दूसरे स्थान पर है।54

चर्च मिशनरी सोसाइटी (सीएमएस), जो शाही शासन में अत्यधिक सक्रिय थी
मिशन क्षेत्र, विशेष रूप से भारत में, एकता की इसी इच्छा से जन्मा था।
निश्चित रूप से इंजीलवादी55 और चर्च ऑफ इंग्लैंड56 का एक हिस्सा। सीएमएस ने एक
यह उन लोगों के लिए एक आउटलेट के रूप में था, जिनकी चर्च के प्रति कम रुचि थी और जो चर्च के प्रति वफादार रहना चाहते थे।
चर्च ऑफ इंग्लैंड। इसकी स्थापना 1799 में सोलह इंजीलवादियों के एक समूह द्वारा की गई थी
पादरी और नौ आम लोगों को "लोगों के बीच सुसमाचार के ज्ञान का प्रचार करने" के लिए नियुक्त किया गया
बेशक, कोई भी धार्मिक और धार्मिक नेताओं की ईमानदारी पर संदेह नहीं कर सकता ।
कई सदस्यों के चर्च संबंधी उद्देश्य थे, फिर भी निस्संदेह कई अन्य कारक भी थे
काम पर। सदी के मोड़ पर कुछ भी ऐसा नहीं था जिसे प्रिज्म के बाहर देखा जा सकता था
साम्राज्य; और मिशनरी ईसाई धर्म इसका अपवाद नहीं था।58 हालांकि अनिच्छा से,
मिशनरियों को औपनिवेशिक परिवेश में धकेल दिया गया। जैसा कि अनुमान था, वहाँ कोई नहीं था
साम्राज्य के बारे में "मिशनरी" दृष्टिकोण। कुछ लोगों ने भारत में ईसाई धर्म को साम्राज्य को सुरक्षित करने के एक तरीके के रूप में देखा
साम्राज्य के दावों को खारिज करते हुए, "ईसाई पूजा के मंदिरों" को "एक ईसाई की किलेबंदी" कहा गया।
राष्ट्र।"59 कुछ लोगों के लिए, ब्रिटिश विजय ईश्वर की कृपा का परिणाम थी, जिसने राष्ट्र के लिए दरवाजे खोल दिए।

---

[54] सीएमएस इंटेलीजेंसर 1909, 439.

[55] कुछ लोगों को यह "इवेंजेलिकल्स" द्वारा इंग्लैंड की सफलता का दावा करने का एक तरीका भी लगा, और यदि वे असफल रहे, तो "
प्रारंभिक कहावत, "इसे इंजीलवादियों के हाथों में रखा जाना चाहिए" को उपहास के साथ उसके चेहरे पर फेंक दिया जाएगा।" सीएमएस इंटेलिजेंसर 1892, 739।

[56] 1869 में, इंटेलिजेंसर ने सोसायटी को "इंग्लैंड के चर्च की दासी" के रूप में वर्णित किया ।
इंटेलिजेंसर 1869, 77.

[57] केविन वार्ड, चर्च मिशन सोसाइटी और विश्व ईसाई धर्म 1799-1999 में "परिचय" , द्वारा संपादित
केविन वार्ड और ब्रायन स्टेनली, (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम सी. एर्डमैन्स पब्लिशिंग कंपनी, 2000), 1.

[58] "विक्टोरिया के अंतिम दौर में ब्रिटेन में साम्राज्यवादी संस्कृति की सर्वव्यापकता के बारे में अब कोई संदेह नहीं रह गया है।" स्टीवन मौघन, "शाही ईसाई धर्म? बिशप मोंटगोमरी और
चर्च ऑफ इंग्लैंड के विदेशी मिशन, 1895-1915" ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट मिशन के शाही क्षितिज, 1880-1914, एंड्रयू पोर्टर द्वारा संपादित
(ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैन्स पब्लिशिंग कंपनी, 2003). 33.

[59] सीएमएस समीक्षा 1898, 814.

Machine Translated by Google

अंततः दुनिया की “मुक्ति, ज्ञान और मोक्ष”।60 उनके लिए,

समस्त मानवजाति के उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना में ईसाई धर्म को सर्वप्रथम अपनाया जाना शामिल था।

यहूदी, फिर विशाल रोमन साम्राज्य और फिर सबसे बड़े ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा

साम्राज्य.61 उन्होंने मसीह के बिना उन लोगों को उस आदमी की तरह देखा जो सो रहा था और उसका घर जल रहा था; और

खुद को पड़ोसी मानते हुए उनका नैतिक दायित्व है कि वे “उसे जगाएं।” [62] यह उनका था

भारतीयों को "एक ऐसा धर्म देने की जिम्मेदारी जो उन्हें एक स्तर तक ऊपर उठा सके

यूरोपीय राष्ट्रों के बारे में।"63 एक मिशनरी, मिस फोर्ब्स ने एक भारतीय के बारे में लिखा, जिसने यह सुना कि

सुसमाचार संदेश ने उससे पूछा, “क्या तुमने अभी-अभी यह समाचार सुना है और हमें बताने आई हो?”

उसने अपने साथी ब्रिटिश ईसाइयों से पूछा कि वे इस तरह के सवाल का सामना कैसे कर सकते हैं ।64

जो लोग यीशु के उद्धारक जीवन और मृत्यु में विश्वास करते थे, यह उनका नैतिक दायित्व था कि वे इसे साझा करें

उन्हें क्या समाचार मिला था, खासकर उन देशों में जो उनके अपने थे

साम्राज्य। अन्य लोग इस साम्राज्य की हिंसा से अधिक परिचित थे और उन्होंने इसमें हिंसा का उपहार देखा।

मसीह (इस संसार की समस्याओं का एकमात्र उत्तर)65 प्रायश्चित करने का सर्वोत्तम तरीका है

कुछ मिशनरी साम्राज्य के प्रति लगभग उदासीन प्रतीत होते हैं, उनका दावा है कि वे

वे केवल उन लोगों से मिलने भारत आए थे, "जिनका अंग्रेजी साहित्य और

माना जाता है कि विज्ञान ने उनमें उच्चतर और उत्कृष्ट सिद्धांतों का संचार किया है

67 साम्राज्य के साथ चाहे जो भी रिश्ता माना जाए, मिशनरियों ने कभी नहीं

उन्होंने स्पष्ट रूप से दुनिया को पूर्व और पश्चिम, या भारतीय और अंग्रेजी के संदर्भ में देखा; उन्होंने एक

---

[60] कुछ लोगों ने साम्राज्य की हिंसा को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया, और कहा कि “क्योंकि 63 उपनिवेशों में से केवल आठ ही विजय के द्वारा आए थे, इसलिए उनकी आबादी स्पष्ट रूप से “ईश्वर के प्रावधान द्वारा हमें सौंपी गई थी।” अंग्रेजों के एक फ्रांसीसी आलोचक को एक बार अंग्रेजों पर यह आरोप लगाते हुए उद्धृत किया गया था कि वे “एक काले आदमी को गोली मार देंगे, उसे उठा लेंगे और उसके घावों पर पट्टी बाँधेंगे, और प्यार से कहेंगे, “यह सुसमाचार के लिए एक ईश्वरीय शुरुआत है!” बेबिंगटन, “प्रायश्चित, पाप और साम्राज्य,” 19, 18।

[61] सीएमएस इंटेलिजेन्सर 1869, 97.

[62] बी.यू.एल., रेव. ए.जे. बिर्केट, वार्षिक पत्र, 1892, पृ. 139.

[63] बी.यू.एल. रेव. कारमाइकल, वार्षिक पत्र, 1890, पृष्ठ 172.

[64] बी.यू.एल., मिस एच.एम. फोर्ब्स, वार्षिक पत्र, 1900, पृ. 428.

[65] सीएमएस इंटेलीजेंसर 1871, 65.

[66] बेबिंगटन, “प्रायश्चित, पाप और साम्राज्य,” 19.

[67] बीयूएल, एस. जॉन, 1886, पृ. 87.

Machine Translated by Google

दुनिया को सबसे कठोर रेखाओं से विभाजित किया गया: बचाया गया और शापित। और वे चुने हुए थे

भगवान, दुनिया को "बचाने" के लिए निकले हैं।

यह मिशनरी उत्साह अठारहवीं सदी के अंग्रेजी जागरण में पैदा हुआ था और

उन्नीसवीं शताब्दी[68] और पहले मिशन क्षेत्र अंग्रेजी औद्योगिक शहरों में थे,[69] लेकिन यह

यह हमारे समय के "स्थायी मिथकों" में से एक है कि उन्नीसवीं सदी से पहले ब्रिटिश

अन्य देशों के बारे में पूरी तरह अनभिज्ञ थे।[70] ब्रिटिश राजमुकुट के रत्न के रूप में

साम्राज्य के दौरान, भारत निश्चित रूप से पूरे "घरेलू मोर्चे" में जाना जाता था।[71] भारत उनमें से एक था

समाज का पहला और सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र। पहुँच के लिए वर्षों के अभियान के बाद,

मिशनरियों को पहली बार 1813 में ईस्ट इंडिया कंपनी के क्षेत्रों में प्रवेश की अनुमति दी गई थी।[72]

मिशनरियों ने उत्तर भारत पर विशेष ध्यान दिया, जिसमें पवित्र शहर बनारस भी शामिल था।

हिंदू धर्म का गढ़ होने के नाते, क्योंकि सोसायटी के नेतृत्व का मानना था कि यह क्षेत्र हिंदू धर्म का गढ़ है

---

[68] पेनिंगटन, क्या हिंदू धर्म का आविष्कार किया गया था?, 23-41.

[69] और कई मिशनरियों ने, यात्रा पर निकलने से पहले, ऐसे शहरों में मिशनरी के रूप में भी काम किया होगा
लंदन, लीड्स और बर्मिंघम। बेलेनोइट, लेट कोलोनियल इंडिया में मिशनरी शिक्षा और साम्राज्य, 64.

[70] पेनिंगटन ने एंटोनेट बर्टन को उद्धृत करते हुए कहा कि "ब्रिटेन के औपनिवेशिक आधिपत्य से अलग-थलग रहने का मिथक ब्रिटिश इतिहास के औपनिवेशिक और साम्राज्यवादी अध्यायों की सबसे स्थायी कल्पनाओं में से एक रहा है और ब्रिटिश घरेलू जीवन ने सबसे आकस्मिक और सबसे शानदार तरह के औपनिवेशिक मुठभेड़ों के लिए कई तरह की संभावनाओं को प्रायोजित किया है।" उन्होंने लंदन क्वार्टरली रिव्यू को उद्धृत करते हुए कहा कि "कई छोटे व्यापारी या देहाती लोग लंदन के पत्रकारों की तुलना में अफ्रीकी या पॉलिनेशियाई जीवन के बारे में अधिक जानते हैं।" वही। 26.

[71] इसका मतलब यह नहीं है कि अंग्रेजों को भारत के इतिहास, राजनीति या संस्कृति की कोई वास्तविक समझ थी, लेकिन उन्होंने पूर्व के रोमांटिक दृश्य सुने थे, 18वीं सदी के उत्तरार्ध के यात्रियों के विवरण पढ़े थे, या कम से कम भारतीय वस्त्र देखे थे। जैसे-जैसे विक्टोरियन सामाजिक लेखकों ने झुग्गियों की घोर गरीबी को उजागर किया, ब्रिटिश कल्पना के भारतीय "विधर्मी" अधिक से अधिक भ्रष्ट होते गए। दूर-दराज के देशों में लोगों की धारणाएँ बहुत हद तक इस बात से प्रभावित थीं कि अंग्रेजों को अपने ही अशिक्षित, गैर-ईसाई लोगों के बीच क्या मिला। उन्नीसवीं सदी के दौरान, इंग्लैंड और भारत में गरीबों के बीच का अंतर धीरे-धीरे धुंधला होता गया। उदाहरण के लिए, फ्राइकेनबर्ग कहते हैं, "अगर ब्रिटेन में एक आदमी की आदिम स्थिति, सामाजिक बुराइयों के साथ, इतनी खराब हो सकती है, तो दुनिया में यह बहुत अलग कैसे हो सकती है।" फ्राइकेनबर्ग, भारत में ईसाई धर्म, 287.

[72] 1813 तक, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ भारत की यात्रा करने की अनुमति केवल उन पादरियों को थी जो केवल अंग्रेजों की सेवा करते थे। भारत में ब्रिटिश प्रशासन में हिंदुओं पर बहुत अधिक निर्भर थे (संख्या में कम होने की बात तो दूर) ताकि आबादी को नाराज करने का जोखिम न उठा सकें। ब्रिटिश संबंध बनाए रखने के लिए इस हद तक चले गए कि 1813 से पहले की अवधि को कभी-कभी "हिंदू राज" के रूप में संदर्भित किया जाता है। फ्राइकेनबर्ग, भारत में ईसाई धर्म, 270-283। हालाँकि, 1813 के तुरंत बाद भी, सभी "मिशनरी" "ईसा मसीह के साम्राज्य" का प्रचार करने के लिए बाहर नहीं थे। यह विशेष रूप से बंगाल में सच है, जहाँ पहले एंग्लिकन मिशनरी आए थे। उन्होंने स्कूलों, बैरकों, अस्पतालों और जेलों से जुड़ी परियोजनाओं पर काम किया, और "किसी भी तरह के अंधविश्वास में हस्तक्षेप करने" में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं थी। वास्तव में, कॉक्स ने उन्हें विलियम कैरी जैसे उत्साही बैपटिस्टों के इंजीलवादी उत्साह से थोड़ा शर्मिंदा होने के रूप में चित्रित किया है। कॉक्स, क्या विक्टोरियन नॉनकन्फ़र्मिस्ट सबसे बुरे साम्राज्यवादी थे?, 249.

Machine Translated by Google

महत्वपूर्ण है कि, "अच्छी तरह से कब्जा कर लिया," यह "विस्तार करने वाले संचालन का आधार बन जाएगा"
भारत की सीमाओं से परे एशिया के ऊंचे इलाकों तक।"73 मिशनरियों के रूप में
विदेशी संस्कृतियों और धर्मों के संपर्क में आने के कारण, "हिंदू धर्म" स्पष्ट रूप से सामने आया
सबसे अलग-अलग में से एक.74

मिशनरियों का स्वयं, चर्च, मोक्ष, “हिंदू धर्म” और भारत के बारे में दृष्टिकोण
समय, स्थान और व्यक्तिगत मिशनरी के अनुभवों के साथ बदलाव आया। लेकिन सभी के लिए
इन मतभेदों के बावजूद, मिशनरी भारतीय संस्कृति को प्रस्तुत करने में आश्चर्यजनक रूप से सफल रहे।
एकजुट मोर्चे के साथ आबादी। "बुतपरस्ती के भयावह अंधेरे" में, ऐसा लग रहा था,
बाउमन कहते हैं, "मूर्तिपूजकों को अपने पक्ष में करने के लिए हमें अपने प्रयासों में एकजुट मोर्चा पेश करना आवश्यक है
मसीह।”75 वे सभी एक समान, ऊर्जावान, बाइबल-केंद्रित संदेश के साथ दृश्य पर पहुंचे।
व्यक्तिगत उद्धार। जब उन्होंने बपतिस्मा की आवश्यकता या कौन इस मुद्दे पर बहस की
वे केवल प्रेरणादायी या विद्वान बनने के लिए नहीं थे, बल्कि भोज देने के लिए भी थे।
बातचीत। वे सत्य की तलाश कर रहे थे ताकि वे कभी भी किसी ईसाई (या
संभावित एक) भटक गया। आर्य समाजी, लाला लाजपत राय, अन्य लोगों के साथ, बाद में
ईसाइयों को एक ही पंथ के लोग कहने में समस्याएँ नज़र आती हैं,76 लेकिन जब उन्होंने पहली बार
भारत आने पर उन्होंने वाद-विवाद की प्रवृत्ति को दबा दिया तथा केवल सामान्य विचार ही प्रस्तुत किए।
उदाहरण के लिए, सीएमएस मिशनरियों ने वास्तव में इसका विरोध किया
उत्तर-पश्चिम प्रांत में एक अधिक उच्च-चर्च एंग्लिकन कैथेड्रल का "अनुष्ठानवाद", और
कम से कम इस हद तक सफल रहे कि सार्वजनिक समारोहों में, उन "अवैध वस्त्रों" को

---

[73] सीएमएस इंटेलीजेंसर 1870, 11.

[74] पेनिंगटन, क्या हिंदू धर्म का आविष्कार किया गया था?, 64-65.

[75] बी.यू.एल., वार्षिक पत्र, बाउमन, 1893, पृ. 407.

[76] लाला लाजपत राय, आर्य समाज का इतिहास (नई दिल्ली: मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, 1992), 87.

[77] उन्होंने भारतीयों को किसी भी धार्मिक बारीकियों को समझने में सक्षम न होने के रूप में चित्रित करके केवल एक ही संदेश प्रस्तुत करने की आवश्यकता को उचित ठहराया। खास तौर पर “गांव के लोग” जो “मसीह में शिशु” थे जो केवल “बहुत ही सरल भोजन” ही पचा सकते थे। बीयूएल, मिस वीसी सॉन्डर्स, वार्षिक पत्र, 1905, पृष्ठ 507।

Machine Translated by Google

उन्हें पहनने का आदेश नहीं दिया गया था।78 उनके लिए यह बहुत महत्वपूर्ण था कि वे उबालने में सक्षम हों
उनके विश्वास को सरलतम पंथ तक सीमित कर दिया गया। प्रस्तावित पंथ संशोधनों में से कुछ इस प्रकार थे:
एक वाक्य ("मैं यीशु मसीह, उनके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु और पिता के माध्यम से ईश्वर में विश्वास करता हूँ")
उद्धारकर्ता।") जिस पर 1909 में बैपटिस्टों के एक सम्मेलन द्वारा सर्वसम्मति से सहमति व्यक्त की गई थी,
कांग्रेगेशनलिस्ट, प्रेस्बिटेरियन, मेथोडिस्ट और सीएमएस एंग्लिकन ने इस बात पर प्रकाश डाला
पवित्रशास्त्र का महत्व, मनुष्य की ग्रहण की गई पापी प्रकृति और प्रायश्चित प्रेम
यीशु.79

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि मिशनरियों ने यात्रा और बलिदान नहीं किया
मिशनरी जीवन केवल साम्राज्य या एंग्लिकन चर्च को बेहतर बनाने के लिए। वे अक्सर समुद्र में यात्रा करते हैं
अपनी आध्यात्मिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए। कई लोगों के लिए, भारत एक तरह की "शरणस्थली" के रूप में देखा जाता था
ईसाइयों और धार्मिक विचारधारा वाले लोगों के लिए। हालाँकि पहले जो भावनाएँ थीं,
चर्च संबंधी बहसों पर चर्चा की गई, आस्था के मुद्दे सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों से बहुत दूर थे
इन अंग्रेज़ों के मन में चिंताएँ घर कर गई हैं। धर्मनिष्ठा की कमी से निराश लोग
घर, या ईश्वर के साथ अपने रिश्ते से विचलित होने के कारण, अक्सर मिशनरी कार्य की तलाश करते थे
विदेश में, जहाँ उन्हें बताया गया कि प्राथमिकताओं में "सही स्थान लेने की स्वाभाविक प्रवृत्ति" होती है,
और सारा ज़ोर "विश्वास पर दिया जाएगा।"80 मिशनरियों के विवरण से
भारत में पहले से ही, इंग्लैंड में ईसाई लोग मिशनरी क्षेत्र को सिर्फ ईसाई धर्म से कहीं अधिक मानते थे।
संभावित भावी ईसाइयों को निर्देश देने के लिए एक जगह; यह एक पलायन होता
उभरती धर्मनिरपेक्ष दुनिया पूरी तरह से। भारत का यह 'रोमांटिक' दृष्टिकोण, 'रोमांटिक' लहरों के विपरीत है

---

[78] बी.यू.एल., रेव. एच.एम.एम. हैकेट, वार्षिक पत्र, 1889, पृ. 258.

[79] "चर्च पुराने और नए नियम में दिए गए परमेश्वर के वचन को अपने विश्वास और जीवन के सर्वोच्च मानक के रूप में स्वीकार करता है और ग्रहण करता है। यह हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के सुसमाचार को पवित्रशास्त्र के केंद्रीय संदेश के रूप में स्वीकार करता है और धारण करता है, जिसने हमसे प्रेम किया और हमारे लिए खुद को दे दिया; जिसमें परमेश्वर धर्मी और प्रेममय पिता के रूप में प्रकट होता है, जो नहीं चाहता कि कोई नाश हो, बल्कि यह कि सभी पश्चाताप करें; जिसके माध्यम से परमेश्वर ने पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित किया है; और जिसके द्वारा पवित्र आत्मा लोगों को विश्वास और पश्चाताप के लिए प्रशिक्षित करता है, उन्हें सेवा के जीवन के लिए प्रेरित करता है और उन्हें परमेश्वर की पवित्र इच्छा के साथ और भी गहरे सामंजस्य में लाता है।" सीएमएस इंटेलिजेंसर 1901, 439।

[80] सीएमएस इंटेलीजेंसर 1913, पृष्ठ 270.

Machine Translated by Google

इससे पहले का अकादमिक प्राच्यवाद लगभग पूरी तरह आध्यात्मिक था। मिशनरी
भारत के चरित्र चित्रण पर केवल भारत-भय और भारत-विरोधी भावना की लहरों का ही प्रभाव नहीं पड़ा।
यूरोपीय महाद्वीप में उन्माद का बोलबाला था। वे समान रूप से व्यक्तिगत अस्वीकृतियाँ थीं
धर्मनिरपेक्षता और आधुनिकता। तेजी से शहरीकृत, मशीन से चलने वाली दुनिया में,
मिशनरियों को अपने मिशन की चुनौतियों और खतरों पर गर्व था
पर्यावरण, और इस चुनौतीपूर्ण कार्य पर "लगातार रखे जाने" का दावा किया।81 वे
अपने अत्यधिक कार्य को "खुशहाल काम" के संकेत के रूप में लेते थे, क्योंकि "मानव की अधिक आवश्यकता
दिल में चाहत का भाव होना चाहिए... और यह खुशी भारत में मिलती है।''82 यह बात लोगों को आकर्षित कर रही थी।
"विक्टोरियन दिमाग उद्देश्य के बारे में परेशान है" जैसा कि ओवेन चैडविक ने प्रसिद्ध रूप से कहा है
वर्णित.83

इसी प्रकार, मिशनरियों ने भी भारत को आधुनिक जांच से बचने के लिए एक शरणस्थल के रूप में देखा।
धर्म। मिशनरी द्वारा पीछे हटने की अनगिनत कहानियाँ, मार्मिक रूप से लिखी गई हैं
"सरल" हिंदू मित्रों को उनकी बिना किसी संदेह और आरक्षण के साथ जुड़े रहने की क्षमता के लिए पसंद करना,
"दिव्य प्रेम" के लिए। रेवरेंड पार्गिटर ने लिखा कि वह हमेशा बाहर निकलकर खुश थे
कक्षाओं और गांवों में जहां वह "साधारण लोगों के संपर्क में आ सकता था-
लोगों के मन में विचार जगाओ और उन्हें यीशु और उसके प्रेम के बारे में बताओ।"84 मिशनरियों की तरह, बहुत से लोग
वे जिन हिंदुओं से मिले, उन्होंने घटनाओं के प्राकृतिक या वैज्ञानिक कारणों की तलाश नहीं की, जैसे अकाल या
बीमारी का प्रकोप, लेकिन इन चीजों को सीधे देवताओं के काम के लिए जिम्मेदार ठहराया।
उदाहरण के लिए, कुछ लोगों ने अपने गांव को प्लेग से बचाए जाने का कारण यह बताया कि उन्होंने भुगतान नहीं किया था
किसी खास भगवान को श्रद्धांजलि देना, या "हिंदू पूजा को छोड़ देना क्योंकि इससे कई लोगों को परेशानी हुई थी"

---

[81] बी.यू.एल., रेव. एच.एम.एम. हैकेट, वार्षिक पत्र, 1889, पृ. 258.
[82] बी.यू.एल., रेव. एच.बी. डुरंट, वार्षिक पत्र, 1899, पृ. 601.
[83] चैडविक, द सेक्युलराइज़ेशन ऑफ़ द यूरोपियन माइंड, 182.
84बी.यू.एल., रेव. पार्गिटर, वार्षिक पत्र, 1890, पृष्ठ 157.

Machine Translated by Google

उन पर बुराइयाँ आने लगीं।"85 20वीं सदी बीतने के साथ मिशनरी व्याकुल हो गए और
भारतीयों ने आस्था के मामलों का खंडन करने के लिए यूरोपीय विचारों का उपयोग करना शुरू कर दिया।
वे "ईसाई धर्म पर आक्रमण करने के लिए यूरोप से अपने सभी हथियार उधार लेने के लिए तैयार थे,"86
यहाँ तक कि किसी भी यूरोपीय दर्शन को फैलाने से हतोत्साहित किया जाए जिसे कोई हिंदू "जाली" बना सकता है
एक ऐसे "हथियार" में बदल दिया जिसके साथ "विश्वास पर हमला" किया जा सके।87 भारतीयों के पास इसके लिए पर्याप्त तरीके थे
सुसमाचार का खंडन करने के लिए उन्हें निश्चित रूप से बाहरी मदद की आवश्यकता नहीं थी, विशेष रूप से मिशनरियों से
खुद।

बेशक, जब वे भारतीय परिदृश्य में पहुंचे तो कई मिशनरियों को चुनौतियों का सामना करना पड़ा।
गहरी निराशा के साथ। कुछ मायनों में, वे बच नहीं पाए थे। कई
वह अभी-अभी स्कूल से आया था, और दो साल तक गहन भाषा अध्ययन में लगा रहा।
मिशनरियों को भारतीय भाषाओं में एक निश्चित स्तर की दक्षता हासिल करना अनिवार्य था।
भाषाओं के अध्ययन के प्रति उनका समर्पण इस बात का एक और सबूत था कि वे प्रयास कर रहे थे
"देशी" मन को जानना ताकि वास्तव में उससे बातचीत में शामिल हो सकें।
किसी भी मिशनरी के लिए पहला काम लगभग विशेष रूप से ईसाई धर्म की भाषाएँ सीखना था।
वे उर्दू से शुरुआत करते थे और अपनी परीक्षा पास करने के बाद आगे बढ़ते थे
हिंदी उनका मुख्य ध्यान था, इस हद तक कि एक मिशनरी ने घर पर लिखा कि
विदेश में बिताए गए पूरे पहले वर्ष को "दो शब्दों में: भाषा अध्ययन" कहा जा सकता है। और यह
"भाषा अध्ययन" वास्तव में कभी बंद नहीं होता जब तक कोई मिशनरी बना रहता है।"88 एक में
उदाहरण के लिए, एक मिशनरी ने विदेशी देश में बिताए पहले साल को "निराशाजनक" बताया

[85] बी.यू.एल., रेव. एच.डी. विलियमसन, वार्षिक पत्र, 1887, पृ. 142-143.
86सीएमएस इंटेलिजेन्सर 1909, पृ. 644.
[87] सीएमएस इंटेलीजेंसर 1909, पृ. 644.
[88] बी.यू.एल., श्री एच. ब्लैकवुड, वार्षिक पत्र, 1898, पृ. 597.

Machine Translated by Google

एक।" वह "ईश्वरीय अनुग्रह के चमत्कार" और "ईसाई जीवन के मानकों" की उम्मीद कर रहा था
मातृभूमि की तुलना में अधिक है," लेकिन जल्द ही निराश हो गया।[89]

संभवतः सबसे अधिक निराशा, विशेष रूप से बपतिस्मा के संबंध में महसूस की गई।
अनेक कारणों से उत्तर भारत में बपतिस्मा बहुत कम और दूर-दूर तक होता था, तथा
एक मिशनरी के शब्दों में, भारत के धर्मांतरण के उनके प्रयास तुलनीय थे
गंगा में पानी डालना।"90 दोनों तरफ से अवरोध खड़े कर दिए गए।
भारतीय पक्ष में, एक हिंदू के लिए बपतिस्मा लेना बहुत कठिन था।
इन मिशनरियों के अनुसार, बपतिस्मा के कार्य में कोई अंतर्निहित आध्यात्मिक मूल्य नहीं था। यह बस एक
विश्वास की सार्वजनिक घोषणा। और यह सार्वजनिक घोषणा, शब्दों में "सर्वोच्च कदम"
एक मिशनरी के अनुसार, 91 यह वह कदम था जिसे हिंदू हमेशा से उठाने के लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि कई लोग इसे उठाने के लिए तैयार नहीं थे।
सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अगर कोई हिंदू धर्म परिवर्तन करता है, तो वह अपनी जाति छोड़ देता है,
उसका परिवार, उसका व्यवसाय और दुनिया में उसका स्थान।[92] और, जैसा कि रेव. वेस हॉलैंड ने कहा
अपने सहधर्मियों को बताया, "हममें से कितने लोग बाहरी तौर पर ईसाई होंगे, क्या यह सच है?"
क्या इसका मतलब यह है कि हम जिनसे प्यार करते हैं उनसे सारे संबंध तोड़ लें?93 एक हिंदू ने बताया
मिशनरी श्री जे. मैकिन्टोश ने कहा कि यद्यपि उनका हृदय "भ्रम से भरा हुआ" था, फिर भी वे
उसने तब तक बपतिस्मा नहीं लिया जब तक उसके माता-पिता दोनों मर नहीं गए, क्योंकि उसे डर था कि कहीं वह "परेशानी और पीड़ा न दे"
अपने वृद्ध पिता और माता के पास।"94 मिशन स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए, उनके माता-पिता

---

[89] "वह लोगों के बारे में पूर्वधारणाएँ लेकर देश में आता है, जिनमें से अधिकांश धारणाओं से छुटकारा पाना होता है, क्योंकि वह लोगों को वैसे ही देखता है जैसे वे हैं। अंग्रेज़ ईसाई और भारत के मूल ईसाई के बीच कोई तुलना नहीं है। पहले वाले को शुरुआती वर्षों से ही प्रेम के ईश्वर में विश्वास करना, उससे प्रार्थना करना और उससे प्रेम करना सिखाया जाता है, और घर का माहौल ईसाई धर्म से प्रभावित होता है। यहाँ भारत में यह बिलकुल उल्टा है। शिक्षण की तत्काल आवश्यकता है, और ऐसा शिक्षण प्राप्त करने के अवसर बहुत कम हैं।" बीयूएल, रेव. ईए हेन्सले, वार्षिक पत्र 1894-1895, पृष्ठ 74।

[90] बी.यू.एल., रेव. ए. बटरवर्थ, वार्षिक पत्र, 1900, पृ. 417.
[91] बी.यू.एल., रेव. एच.डब्लू.वी. बिर्नी, वार्षिक पत्र, 1898, 364.
[92] बी.यू.एल., श्री आर. बेकर, वार्षिक पत्र, 1894, पृष्ठ 76.
[93] बी.यू.एल., रेव. वेस हॉलैंड, वार्षिक पत्र, 1911, पृष्ठ 141.
[94] बी.यू.एल., श्री जे. मैकिन्टोश, वार्षिक पत्र, 1900, पृ. 433.

Machine Translated by Google

अक्सर उन्हें बपतिस्मा लेने से रोका जाता था।95 एक मामले में, एक वयस्क जो बपतिस्मा लेना चाहता था, उसे बपतिस्मा देने से मना कर दिया गया।
वास्तव में उसके परिवार के सदस्यों द्वारा उसे "ले जाया गया"।96 दिलचस्प बात यह है कि कुछ वयस्कों ने कबूल किया कि
यीशु पर पूरा भरोसा था, लेकिन फिर भी उन्होंने बपतिस्मा न लेने की विनती की। अपनी विनती में, वे अक्सर
उन्होंने एक ऐसा मुद्दा उठाया जिस पर मिशनरी स्वयं विचार कर रहे थे: यदि वे
यीशु में विश्वास के कारण पहले से ही बचाए गए, क्या बपतिस्मा का संस्कार भी आवश्यक था?97 एक भारतीय
सी.एम.एस. के लिए काम करने वाले क्रिश्चियन ने अपने अंग्रेज मिशनरी मित्रों को यह समस्या समझाई,
उन्होंने बताया कि उनके हिचकिचाने का एक वास्तविक कारण ज्ञान का अभाव था।

उन्हें इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि इस संस्कार में क्या-क्या शामिल हो सकता है और चूंकि अंग्रेजों ने कई अन्य अनुष्ठान भी किए थे, इसलिए उन्हें यह नहीं पता था कि इस संस्कार में क्या-क्या शामिल हो सकता है।

"अशुद्ध" चीजों से प्रदूषण का खतरा था।98 जैसा कि एक भारतीय ने संक्षेप में कहा, "आप खाते हैं
कोई गंदगी!" [99]

कठिनाई को बढ़ाने वाली बात यह थी कि सी.एम.एस. मिशनरी बहुत ही खास थे
इस बारे में कि उन्होंने किसको बपतिस्मा देने के योग्य माना है, इस पर बहस और भी बढ़ गई।
ऐसा लगता है कि CMS मिशनरियों को कभी भी अन्य किस्मों के बारे में विशेष रूप से परेशान नहीं होना पड़ा
उनके क्षेत्र में प्रोटेस्टेंट धर्मांतरण करने वालों की संख्या अधिक थी, लेकिन जब कोई समूह, जैसे कि
अमेरिकी मेथोडिस्ट100 की तरह सामूहिक रूप से बपतिस्मा देते थे, खासकर अशिक्षित निचली जाति के लोगों को।
जो लोग ईसाई धर्म के बारे में कुछ नहीं जानते थे। एक मामले में, CMS मिशनरियों ने एक आदमी को अपने यहाँ ले लिया

---

[95] ईसाई धर्म के सिद्धांतों में उनके विश्वास के बारे में पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा, "श्रीमान्, हम विश्वास करते हैं।"
कि ईसाई धर्म सत्य है, लेकिन हम लड़के अपने माता-पिता पर निर्भर होकर क्या कर सकते हैं?'' बी.यू.एल., नॉर्मन, वार्षिक पत्र, 1887, पृ. 360.

[96] एक बूढ़ा हिंदू आदमी जो हर रात प्रार्थना करता था "हे प्रभु यीशु मसीह, मुझ पर दया करो, और मुझे क्षमा करो
मुझे मेरे सारे पाप क्षमा कर दिए" और "अपने घर पर दिन-रात यही दोहराता था" "वह बपतिस्मा लेना चाहता था, लेकिन ऐसा होने से पहले ही उसके लोग उसे गंगा नदी में ले गए, शायद उन्होंने वहाँ उसकी मृत्यु शीघ्र कर दी।" बी.यू.एल., रेव. जे.
ब्राउन, वार्षिक पत्र, 1887, पृ. 207.

[97] बी.यू.एल., श्री जे. मैकिन्टोश, वार्षिक पत्र, 1899, पृ. 548. इसी तरह, रेव. पेम्बर्टन इसे "एक गंभीर" कहते हैं
प्रश्न" की तुलना में "इसमें बहुत कुछ शामिल था।" बी.यू.एल., रेव. जे.एफ. पेम्बर्टन, वार्षिक पत्र, 1902, पृ. 326.

[98] मिशनरियों ने अपने धर्म के स्वीकारोक्ति वाले हिस्से का प्रचार करते हुए, पंथ के "भक्ति वाले हिस्से" के बारे में कुछ भी नहीं सिखाया। बी.यू.एल., रेव. जे.
कलंदर, वार्षिक पत्र, 1902, पृष्ठ 280. श्रीमती रेल ने हमें ऐसे ही एक मामले का उदाहरण दिया। अपने 1903 के पत्र में, उन्होंने लिखा कि एक छोटी लड़की ने बपतिस्मा लेने से इनकार कर दिया था क्योंकि उसे यह विश्वास दिलाया गया था कि मिशनरियों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला पानी प्रदूषित था। बी.यू.एल., श्रीमती ई. रेल, वार्षिक पत्र, 1903,426.

[99] बी.यू.एल., रेव. ई.पी. हर्बर्ट, वार्षिक पत्र, 1897, पृ. 373.

[100] बी.यू.एल., रेव. डॉ. डब्ल्यू. हूपर, वार्षिक पत्र, 1894, पृ. 89.

Machine Translated by Google

जिन्हें अमेरिकी मेथोडिस्टों द्वारा बपतिस्मा दिया गया था और उन्होंने लिखा था कि, इस आदमी को निर्देश देते हुए,

उन्हें आस्था की बहुत ही प्राथमिक अवधारणाओं से शुरुआत करनी पड़ी।[101] एक मिशनरी

दावा किया कि भले ही कुछ समूह कई लोगों को बपतिस्मा देंगे और अपने तरीके से इस तथ्य की घोषणा करेंगे

समाचार-पत्रों के अनुसार, "आमतौर पर वे ईसाइयों या ईसाई धर्म के बारे में बहुत कम, अक्सर कुछ भी नहीं जानते हैं," और

मिशनरियों के प्रति कोई वफ़ादारी नहीं दिखाते, "उन्हें बेकार, निस्तेज, पिछलग्गू बनाते हैं,

„चावल ईसाई.'"102 सोसाइटी मिशनरियों का अभी भी मानना था कि यह स्वाभाविक होगा

ईसाई धर्म ने दलित वर्गों को आकर्षित किया और उन सभी को "अमरता के अंश" के रूप में देखा

"राजा के मुकुट" में शामिल होने की प्रतीक्षा में;[103] और निश्चित रूप से उन्होंने इसका स्वागत किया होगा

"यदि वे ईमानदार होते तो सबसे निम्नतम होते।"104 हालांकि, उन्हें इस बात पर गर्व था

कि वे धर्म परिवर्तन करने वाले लोगों को "सबसे कठिन परीक्षणों" से गुज़ारते हैं।105 एक उदाहरण में, जब रेव्ह.

ज़ेंकर से एक हिन्दू ने पूछा कि वह ईसाई कैसे बन सकता है, ज़ेंकर ने उस व्यक्ति को बताया

"पहले मामले पर अच्छी तरह विचार कर लो। हम तुम्हें बहकाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं।"106 वे चाहते थे कि

उन्हें यकीन था कि उनके पास असली धर्मान्तरित लोग थे, क्योंकि कुछ अवसरों पर उन्होंने केवल कुछ लोगों को ही बपतिस्मा दिया था।

वर्ष के दौरान कई कारणों से उन्हें जाते हुए देखना।107 मिशनरियों को भी वहां भेजा गया।

बपतिस्मा लेने की इच्छा रखने वाले "मूल निवासी" कारणों पर संदेह करते हुए, अनुमान लगाते हुए कि कुछ लोग शायद बपतिस्मा लेना चाहते हैं

---

[101] "अमेरिकी मेथोडिस्ट मिशन के सिलसिले में बपतिस्मा लिया गया था, लेकिन (जैसा कि अक्सर होता है) शिक्षा की कमी के कारण, जिसने उसके अंदर से उसका सारा ब्राह्मण अभिमान खत्म कर दिया, और मुझे बहुत ही मूल तत्वों से शुरुआत करनी पड़ी।" बी.यू.एल., रेव. डॉ. डब्ल्यू. हूपर, वार्षिक पत्र, 1894, पृष्ठ 89।

[102] बी.यू.एल., रेव. जे. एरहार्ट, वार्षिक पत्र, 1890, पृ. 225.

[103] "ऐसे पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की भीड़ को बपतिस्मा देना जो ईसाई धर्म के बारे में कुछ भी नहीं जानते।" 1887,
359, रेव. ए.जी. नॉर्मन जबकि उन्होंने निचली जाति के लोगों को सामूहिक रूप से बपतिस्मा देने वालों की आलोचना की, उन्होंने बहिष्कृत जातियों से भर्ती की, यह दावा करते हुए कि यह ईसाई धर्म के लिए स्वाभाविक है, कि इतने सारे "अमरता के टुकड़े" बस बचाए जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, राजा के मुकुट के लिए इतने सारे रत्न हैं। सी.एम.एस. समीक्षा 1869,

[104] रेव. हर्कलोट्स ने 1904 में लिखा कि मेथोडिस्टों ने "भारतीय चर्च के रैंक को बढ़ाने और ईश्वर के राज्य की धीमी और शानदार यात्रा को तेज करने की तीव्र इच्छा में, सामाजिक और नैतिक रूप से सबसे निचले वर्ग के हजारों हीथेंस को बपतिस्मा देने की एक "विनाशकारी नीति" का पालन किया, जिन्होंने मुश्किल से मसीह का नाम सुना है, और अपनी मूर्तिपूजा और अनैतिक प्रथाओं में से किसी को भी नहीं छोड़ा है।" बीयूएल, रेव. बी. हर्कलोट्स, वार्षिक पत्र, 1904, पृष्ठ 335।

[105] बी.यू.एल., रेव. जे. टुनब्रिज, वार्षिक पत्र, 1888, पृ. 66.

[106] बी.यू.एल., रेव. पी.एम. जेनकर, वार्षिक पत्र 1895, पृष्ठ 140.

[107] कुछ लोग अपने परिवारों के पास वापस चले गए, और अन्य लोगों ने पाया कि "पुराने जीवन की आदतें बहुत मजबूत साबित हुईं।" बी.यू.एल., रेव. डब्ल्यू.जी. प्रॉक्टर, एनुअल लेटर्स, 1900, पृ. 405. एक उदाहरण में, रेव. हर्कलोट्स ने लिखा कि जिस लड़के के बारे में उन्हें "सबसे ज़्यादा उम्मीद थी कि वह सचमुच धर्मांतरित हो गया है" वह भाग गया और आर्य समाज में शामिल हो गया। बी.यू.एल., रेव. बी. हर्कलोट्स, एनुअल लेटर्स, 1904, पृ. 336.

Machine Translated by Google

वे अपने परिवार के उन सदस्यों से बदला लेना चाहते हैं जिन्होंने उनके साथ गलत किया था या वे अपने परिवार के लिए पैसे नहीं जुटा सकते थे।

एक अवसर पर, एक भावी धर्मगुरु को बपतिस्मा देने से मना कर दिया गया क्योंकि

उनकी विशेष रूप से खराब व्यक्तिगत वित्तीय स्थिति।[109]

इतने कम बपतिस्मा के साथ, मिशनरियों को अपने जीवन को मान्य करने की आवश्यकता थी

मिशन क्षेत्र में किसी तरह से प्रवेश करना।110 उनके लिए ऐसा करने का सबसे आसान तरीका यह दावा करना नहीं था कि वे ऐसा कर सकते हैं।

दर्द कम किया हो, या भूखों को खाना खिलाया हो, लेकिन यह दावा करके कि उन्होंने किसी के दिल में बीज बोया है

जिसे अंततः फल देना ही होगा। धर्म के इस प्रकार के अंकुरण सिद्धांत में,

इतने कम धर्मांतरण का कारण बस इतना था कि वे अभी भी पहले चरण में काम कर रहे थे:

बीज बोने से फल अवश्य ही मिलेंगे। बहुत से लोग तो विशेष रूप से भी नहीं थे।

धर्मांतरित लोगों की कमी के बारे में चिंतित थे, क्योंकि परमेश्वर ने पहले ही वादा किया था कि उसका वचन

112 क्योंकि बहुत से लोग बपतिस्मा लेने के लिए प्रतिबद्ध नहीं थे, इसलिए यीशु ने उन्हें बपतिस्मा देने से मना कर दिया ।

मिशनरियों को यह विश्वास होने लगा कि ऐसे बहुत से ईसाई थे जो "दिल से" ईसाई थे

बपतिस्मा लेने के लिए इंतज़ार कर रहे हैं।113 "गुप्त ईसाई" मिशनरी में एक आम चरित्र था

पत्र.114 एक मिशनरी ने तो एक ऐसे व्यक्ति के बारे में लिखा, जिसने एक व्याख्यान देते हुए बार-बार आश्वासन दिया

---

[108] बी.यू.एल., एच., वार्षिक पत्र, 1887, पृ. 212.

[109] बी.यू.एल., रेव. डब्ल्यू.जी. प्रॉक्टर, वार्षिक पत्र, 1896, पृ. 591.

[110] उदाहरण के लिए, रेव. हॉल ने 1897 में लंदन को लिखा, "जैसे-जैसे हर साल बीतता है, मैं और अधिक आश्वस्त होता जाता हूँ कि भारत में मिशन के काम के नतीजों को बपतिस्मा की संख्या से नहीं मापा जा सकता है, जिसे हम साल-दर-साल दर्ज कर पाते हैं।" बी.यू.एल., रेव. जे.डब्ल्यू. हॉल, वार्षिक पत्र, 1897, पृष्ठ 608।

[111] उदाहरण के लिए, मिस लॉरेंस ने 1904 में लिखा था कि "हमारा काम मूलतः बोना है।" बी.यू.एल., मिस एम.एच.
लॉरेंस, वार्षिक पत्र, 1904, पृ. 301.

[112] उदाहरण के लिए, हालांकि रेव. कारमाइकल कई हिंदुओं द्वारा क्रूस में देखी गई "मूर्खता" से व्यथित थे, फिर भी उन्होंने लिखा कि "हम यह भी जानते हैं कि यह ईश्वर का कार्य है, और वह हमारे आगे चलता है, और हमारे साथ रहेगा, और हमें निराश नहीं करेगा।" बी.यू.एल., रेव. टी. कारमाइकल, वार्षिक पत्र, 1894, 504.

मिस टोटेनहम ने 1904 में लिखा कि उन्हें "बुवाई करते रहने और परिणामों के लिए सिर्फ़ मालिक पर भरोसा रखने के लिए प्रोत्साहित किया गया।" बी.यू.एल., मिस टोटेनहम, वार्षिक पत्र, 1905, पृ. 490.

113"अपने कई लोगों की तरह, वह सिर्फ़ दिल से ईसाई बनना चाहता है, स्वीकारोक्ति से नहीं। वह जाति की बड़ी दीवार के सामने खड़ा है और नहीं जानता कि इसे कैसे पार किया जाए, और दो स्वामियों की सेवा वह नहीं कर सकता, हिम्मत नहीं कर सकता, जब तक हम उसे रोक सकते हैं।" बीयूएल, रेव. जे. एरहार्ट, वार्षिक पत्र, 1888, पृ.74.

[114] उदाहरण के लिए, मिस कोल ने लिखा, "उनके जैसे बहुत से लोग हैं, जिन्हें बपतिस्मा द्वारा दृश्यमान चर्च में स्वीकार नहीं किया गया है, लेकिन उनमें एक उद्धारक विश्वास प्रतीत होता है।" बी.यू.एल., मिस ई.एम. कोल, वार्षिक पत्र, 1912, पृष्ठ 223. इसी तरह, रेव. बैम्ब्रिज ने लिखा कि "हमारा सबसे अच्छा काम उनके आंतरिक हृदय और छिपे हुए विचारों में चल रहा है।" बी.यू.एल., रेव. जे.जे. बैम्ब्रिज, वार्षिक पत्र, 1889, पृष्ठ 199. इसके अलावा, रेव. थॉमस ने बताया: "मैंने इस वर्ष गुप्त विश्वासियों को सार्वजनिक रूप से मसीह को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करने की पूरी कोशिश की है।" बी.यू.एल., रेव. सी.एस.

Machine Translated by Google

श्रोताओं को बताया कि वह किसी भी तरह से एक "गुप्त ईसाई" नहीं था। लेकिन मिशनरी के पत्र में
पाठक को आश्वस्त किया कि यीशु की शिक्षाओं के प्रति इतने सम्मान के साथ, वह अवश्य ही एक
दिल से ईसाई. [115]

यह क्रमिक प्रक्रिया जिसके द्वारा हिंदू धर्म प्रोटेस्टेंट ईसाई धर्म में विकसित हुआ,
इन मिशनरियों का मानना था कि यह स्वयं कैथोलिक धर्म के "अंधविश्वासी कैथोलिक धर्म" से विकसित हुआ था
मध्य युग में, यह दर्शन, पूर्ति धर्मशास्त्र नामक एक बड़े धार्मिक डार्विनवाद का हिस्सा था।
जेएन फ़ार्कुहर ने अपनी पुस्तक क्राउन ऑफ़ हिंदूइज़्म में तर्क दिया कि प्रोटेस्टेंट ईसाई धर्म "पूरा करेगा"
हिंदू धर्म.116 इस सिद्धांत के अनुसार, हिंदू धर्म ने लोगों की "लालसाओं" को संतुष्ट करने की कोशिश की थी
मानव आत्मा, लेकिन विफल रहा था। ऐतिहासिक समानताएं खींची गईं। हिंदू धर्म
ईसाइयों के पुराने नियम की तुलना में। आगरा में सेंट जॉन्स कॉलेज के रेवरेंड पार्गिटर
उन्होंने लिखा कि हिंदू मस्तिष्क अभी तक "नए युग के उच्च विचारों" को ग्रहण करने में सक्षम नहीं है।
और उन्हें एक "पत्थर" की ज़रूरत थी, जैसे यहूदियों को बहुत पहले मिली थी। [117]

जबकि पूर्ति धर्मशास्त्र ने एक भी बिना किसी सहायता के मिशनों में बिताए गए जीवन को मान्य किया
बपतिस्मा के बारे में कुछ मिशनरियों को वास्तव में इस सिद्धांत पर संदेह था। उन्हें डर था कि
मिशनरी अपने विश्वास की विशिष्टता को भूल जाएंगे।118 रेव्ह. मुकंद ने चेतावनी दी कि
वहाँ बहुत ज़्यादा "समझौता करने वाले किस्म का उपदेश" था और उसने अपने साथियों को याद दिलाया
मिशनरियों का मानना है कि भारत को अवश्य जीता जाना चाहिए, लेकिन इसे "समझौता करके मसीह के लिए" नहीं जीता जा सकता।119
हिंदू धर्म भले ही पूर्णतः मूर्खतापूर्ण न हो, लेकिन ईसा के बिना यह पूर्ण भी नहीं था।

थॉम्पसन, एनुअल लेटर्स, 1888, पृ. 87. रेव. डुरंट ने उन चीज़ों का विवरण दिया जिन्हें उन्होंने "गुप्त ईसाई के चिह्न" कहा था। बी.यू.एल., रेव. एच.बी. डुरंट, एनुअल लेटर्स, 1889, पृ. 601.

[115] मिशनरी के अनुसार, यीशु के व्यक्तित्व की उस व्यक्ति द्वारा की गई प्रशंसा ने निश्चित रूप से उसे एक "गुप्त ईसाई" बना दिया, क्योंकि "यदि आप उसके पक्ष में हैं, तो आप किसी भी तरह से उसके खिलाफ नहीं हो सकते!" बी.यू.एल., रेव. एच. स्टर्न, वार्षिक पत्र, 1890, पृष्ठ 228

[116] फ़ार्कुहार, क्राउन ऑफ़ हिंदूइज़्म (न्यूयॉर्क: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1913)।

117 उन्होंने लिखा कि भारत में पुराने नियम की शिक्षा विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी क्योंकि "घटनाएँ मूर्तिपूजक परिवेश में रहने वाले युवकों को बहुत आकर्षित करती हैं जबकि भविष्यवक्ताओं की निंदा उन्हें जीवित वास्तविकता की पूरी जीवंतता के साथ प्रभावित करती है।" बी.यू.एल., रेव. जी.ई.ए. पार्गिटर, वार्षिक पत्र, 1888, पृ. 315-316.

[118] उदाहरण के लिए, बेलेनोइट इस पूर्ति धर्मशास्त्र को "दोधारी तलवार" कहते हैं, क्योंकि अन्य धर्मों की सच्चाई को पहचानने से मिशनरियों को कोई भी धर्मांतरण प्राप्त करने में मदद नहीं मिली। बेलेनोइट, मिशनरी एजुकेशन एंड एम्पायर, 139.

[119] बी.यू.एल., रेव. जे.एन. मुकंद, वार्षिक पत्र, 1912, पृ. 245.

Machine Translated by Google

बेशक, कुछ मिशनरी भारत के धर्म, लोकाचार और दर्शन से प्रभावित थे,

लेकिन बहुत कम लोगों ने हिंदू धर्म में वास्तविक मूल्य देखा। लेकिन कई मिशनरियों ने ऐसा किया है

भारत की धार्मिक परंपराओं में मूल्य पाया। उदाहरण के लिए, मिशनरी वेस हॉलैंड,

भारत और उसके लोगों के प्रति गहरा प्रेम रखने वाले व्यक्ति120 इसका एक बेहतरीन उदाहरण थे।

इलाहाबाद में उन्होंने लिखा कि ईश्वर की उपस्थिति में हिंदुओं का विश्वास एक सबक है।

मसीहियों को सीखना चाहिए।121 उन्होंने यीशु के चरित्र को भी कुछ ऐसा ही समझा

भारतीय लोग इसकी बेहतर सराहना कर सकते थे, क्योंकि वे उसकी नम्रता में मूल्य देखते थे

और कभी-कभी यह भी बताया कि शाही अंग्रेज यीशु मसीह की तरह नहीं थे।

इसी प्रकार , एक भारतीय ईसाई रेव्ह बोस ने बताया कि हिंदू

जब उन्हें "मसीह की मिठास" का पता चला तो उनके "मसीह को गले लगाने" की संभावना बहुत अधिक थी

अंग्रेज़ के "अंधेरे घमंड" के बजाय "विनम्र और विनम्र यीशु" को प्राथमिकता दी गई।123 रेव.

बटरवर्थ ने यह भी बताया कि कुछ हिंदुओं ने "मसीह के दावों की श्रेष्ठता" को स्वीकार किया

अन्य सभी शिक्षकों पर" लेकिन अंग्रेजी के "जीवन और पंथ के बीच का अंतर"

मिशनरी "बड़ी बाधा" साबित हुए।124 एक अन्य भारतीय ईसाई, श्री.

चटर्जी ने सहमति जताते हुए सीएमएस मिशनरियों से कहा कि उन्हें बाकी सब कुछ छोड़ देना चाहिए।

वे "सिर्फ मसीह के चरित्र की शिक्षा देते हैं और उसका प्रचार करते हैं।"125

सी.एम.एस. मिशनरियों ने पाप की अवधारणा को वास्तविक धर्मांतरण के लिए महत्वपूर्ण माना।

यह सुनिश्चित किया कि उन्होंने उन मुद्दों पर अनगिनत चर्चाएं कीं (और उनका दस्तावेजीकरण किया) जिन पर उन्होंने अभी चर्चा की है।

---

[120] "मैं इन लोगों से उतना ही प्यार करता हूँ जितना कि घर पर बहुत कम लोगों से करता था; और यह देखना अद्भुत है कि वे किस तरह से अपने दिल की बात कहते हैं।
जो लोग उनसे प्रेम करते हैं, उनके हृदयों को समर्पित कर देते हैं।" बी.यू.एल., रेव. वेस हॉलैंड, वार्षिक पत्र, 1905, पृ. 484.

[121] उन्होंने स्पष्ट किया कि इस्लाम ने ईश्वर की एकता को "ठंडे, कठोर, ईश्वरवाद" में बदल दिया है, जबकि हिंदू धर्म ने "ईश्वर की अन्तर्निहितता" के साथ भी ऐसा ही किया है, जिससे "जंगली सर्वेश्वरवाद" का निर्माण हुआ है। उन्होंने अनुमान लगाया कि शायद "पश्चिम" "ईश्वरवाद" की ओर बहुत अधिक झुक गया है और "पूर्व" ईश्वर की अन्तर्निहितता के उस "गर्म सत्य" की नई सराहना को जोड़कर "पूर्ण चर्च के पूर्ण-आवरणीय विश्वास" में अपना योगदान देगा। बीयूएल, रेव. वेस हॉलैंड, वार्षिक पत्र, 1902, पृष्ठ 447।

[122] डब्ल्यू.ई.एस. हॉलैंड, द इंडियन आउटलुक; ए स्टडी इन द वे ऑफ सर्विस, (लंदन: एडिनबर्ग हाउस प्रेस, 1927), पृ. 21.

[123] बी.यू.एल., रेव. आर.के. बोस, वार्षिक पत्र, 1888, पृ. 75.

[124] बी.यू.एल., रेव. ए. बटरवर्थ, वार्षिक पत्र, 1900, पृ. 417.

[125] बी.यू.एल., रेव. हैकेट, वार्षिक पत्र, पृष्ठ 221

Machine Translated by Google

इस बात पर सभी सहमत नहीं हो सके। हालाँकि उन्हें उत्तर भारतीय संस्कृति के कई पहलुओं पर पकड़ थी
संस्कृति और अलग-अलग लोगों के लिए अपने संदेश को सावधानीपूर्वक तैयार करते हुए, उन्होंने एक ऐसा संदेश बनाया
मानव स्वभाव के बारे में धारणा जो वास्तविक जीवन में मुख्य बाधाओं में से एक साबित हुई
संचार: मूल पाप। मिशनरियों के विश्वास ने संदेह के लिए कोई जगह नहीं छोड़ी
विषय। मिशनरी के लिए, मानव इतिहास की पहली घटना पतन थी। सभी
धार्मिक आंदोलन, एंग्लो-कैथोलिकवाद से लेकर सबसे निम्न-चर्च, बाइबल-केंद्रित तक
प्रोटेस्टेंटवाद लोगों को पाप के परिणामों से बचाने में मदद करने के लिए अस्तित्व में था, चाहे
संस्कारों या मानव प्रकृति के साथ व्यक्तिगत संघर्ष के माध्यम से।

पतन की कहानी, और उसके परिणामस्वरूप मनुष्य की "पापपूर्णता" का अनुवाद आसानी से नहीं किया जा सकता
भारतीय परंपरा के शीर्षक में। यह पारंपरिक रूप से हिंदू धारणाओं से टकराता था
चक्रीय दुनिया, पदार्थ की अनंतता और भ्रामक प्रकृति, माया (भ्रम), और
अवैयक्तिक निरपेक्ष। सृष्टि के बारे में बाइबिल के विवरण से हिंदू भ्रमित थे,
विशेषकर इसलिए कि कुछ लोगों के लिए सर्वशक्तिमान को मानवीय भावनाओं के अधीन नहीं होना चाहिए,
किसी चीज़ को सिर्फ़ निंदा करने के लिए बनाना। एक मुस्लिम व्यक्ति इस बात पर हिंसक रूप से क्रोधित हो गया
कहानी, चूंकि यह आदम, एक पैगम्बर का अपमान था, उसने वास्तव में एक मिशनरी पर प्रहार किया और लोगों को लामबंद किया
श्रोताओं में बैठे हिंदुओं को, उत्सुकता से, बताया कि मिशनरी "
मबदेव, भगवान शिव, का नाम लेते हैं।126 कभी-कभी एक ब्राह्मण कहानी का उपयोग कर सकता है
पतन को यह साबित करने के लिए कि मिशनरी कितना मूर्ख था। उदाहरण के लिए, एक मिशनरी, श्री आर.
बेकर ने एक समय के बारे में लिखा था जब वह एक बाजार में प्रचार कर रहे थे और बाद में,
ब्राह्मण उनके पास आये और उनसे पूछा कि पाप संसार में कैसे आया?
मिशनरी ने शुरू किया, लेकिन ब्राह्मणों ने "बस मुस्कुराया" और "टुकड़े-टुकड़े करके
हँसी और उपहास।" [127]

[126] बी.यू.एल., रेव. एस. निहाल सिंह, वार्षिक पत्र, 1892, 20-22.
[127] बी.यू.एल., रेव्ह. मि. आर. बेकर, वार्षिक पत्र, 1894, पृ. 75.

Machine Translated by Google

पाप और मनुष्य के "पतित" होने की धारणाएँ वास्तविक संचार में बाधाएँ थीं, क्योंकि

मिशनरियों और हिंदुओं के मानव स्वभाव के बारे में विचार बहुत अलग थे। लेकिन

व्यक्तिगत मुक्ति संभवतः संचार में सबसे बड़ी बाधा थी

मिशनरियों और भारतीयों के बीच विवाद था। चूँकि मिशनरियों को भारत में कोई विकल्प नहीं मिल पाया था

व्यक्तिगत पाप की अवधारणा - व्यक्तिगत पाप के लिए सटीक भारतीय शब्द तो छोड़ ही दीजिए, कोई वास्तविक पाप नहीं था।

संचार जब मिशनरी ने व्यक्तिगत उद्धार का प्रचार किया। इसी तरह, चक्रीय

विश्वदृष्टि इस विचार को अनुमति नहीं देती कि मृत्यु के बाद एक "न्याय" होता है जो

आत्माओं को अनंत काल तक अलग-अलग श्रेणियों में रखा गया।128 चूँकि उनके बीच कोई भेद नहीं था

शारीरिक और नैतिक अशुद्धता, इस बात की कोई समझ नहीं थी कि किसी सिद्धांत पर विश्वास कैसे किया जाए

संभवतः यह पवित्र गंगा की तुलना में सफाई के लिए अधिक प्रभावी हो सकता है।129

मिशनरियों ने अपने धार्मिक डार्विनवाद की अभिव्यक्ति में यह माना कि यह केवल "एक

समय की बात है" इससे पहले कि लोगों को एहसास हो कि "पाप नैतिक भी है" और "पानी

गंगा की पवित्र धारा अब आत्मा-शुद्धि के लिए उपयोगी नहीं है।"130 फिर भी कई हिंदुओं ने कहा

कि रीति-रिवाज और अनुष्ठान आस्था से अलग नहीं हैं।131 उदाहरण के लिए, किसी ने पूछा,

"जब मैं वह खाऊँ जो ईसाई खाते हैं, तो क्या मैं ईसाई हो जाऊँगा?"132 यह विचार कि मनुष्य ईसाई था

गिर गया और सही विश्वास से, एक खोया राज्य वापस पा सकता है, यह कई लोगों के लिए विदेशी था और जैसा कि रेव।

---

[128] प्रारंभ से ही मिशनरी में जो तात्कालिकता की भावना पैदा हुई, वह हिंदुओं में नहीं थी।
बहुत से लोग कहते हैं कि वे यीशु की शिक्षाओं पर विश्वास करते हैं और यहाँ तक कि वे यह भी मानते हैं कि यीशु उन्हें "बचाने" में सक्षम साबित हो सकते हैं, लेकिन उन्हें धर्म परिवर्तन करने की कोई तत्काल आवश्यकता महसूस नहीं होती और वे मिशनरियों से कहते हैं कि वे उन्हें "इस पर विचार करने" का समय दें। बी.यू.एल., हीटन, एनुअल लेटर्स, 1890, पृष्ठ 320. इसी तरह, कुछ लोग कहते हैं कि वे "ऐसा महत्वपूर्ण कदम उठाने में कोई जल्दबाजी नहीं करना चाहते।" बी.यू.एल., रेव. टी.एफ. रोबथन, एनुअल लेटर्स, 1888, पृष्ठ 74.

[129] बी.यू.एल., रेव. जे. एरहार्ट, वार्षिक पत्र, 1888, पृ. 320.

[130] सीएमएस इंटेलीजेंसर 1892, 128.

[131] वास्तव में, रेव्ह वालर के अनुसार, भारत में "सामाजिक व्यवस्था" क्या थी और धर्म क्या था, यह प्रश्न "सबसे कठिन प्रश्नों में से एक है जिसका मिशनों को सामना करना पड़ता है।" बी.यू.एल., रेव्ह एच.एम.
वालर, वार्षिक पत्र, 1898, पृष्ठ 23.

[132] बी.यू.एल., रेव. जे. एरहार्ट, वार्षिक पत्र, 1888, पृ. 320.

Machine Translated by Google

मोलोनी ने कहा, "पाप और मोक्ष, हालांकि सबसे अधिक बार जोर दिया जाता है, लेकिन ऐसा नहीं है
आसानी से स्वीकार किया जा सकता है।”133

ऐसा लगता है कि बहुत से लोगों को, यहाँ तक कि बपतिस्मा लेने वालों को भी, परमेश्वर के वचन की कोई वास्तविक समझ नहीं थी।
मिशनरियों का विश्वास के माध्यम से मुक्ति का विचार। जब भारतीय यीशु के बारे में बात करते थे, तो वे
किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित किया जाता है जिसकी वे प्रशंसा करते हैं, प्रार्थना करते हैं और यहां तक कि प्यार भी करते हैं, लेकिन "पापों के लिए छुड़ौती" के रूप में नहीं
मनुष्य का” या “मुक्तिदायक प्रेम” से प्रेम करने का। यहाँ तक कि वे लोग भी जो यीशु को अपना “उद्धारकर्ता” कहते थे
ऐसा लगता है कि वे इस शब्द का इस्तेमाल नौकरी-विवरण से कहीं ज़्यादा एक दूसरे नाम के तौर पर कर रहे हैं।
उदाहरण के लिए, एक महिला ने एक मिशनरी से कहा, "आपका यीशु एक अद्भुत उद्धारकर्ता है, लेकिन मैं
अभी तक यह समझ नहीं आया कि वह कैसे पूरी दुनिया के पाप के लिए अपनी जान दे सकता है।'' 134
इस तथ्य का सबसे स्पष्ट उदाहरण है कि शब्द "उद्धारकर्ता" का प्रयोग हमेशा एक के साथ नहीं किया जाता था
मिशनरियों की मुक्ति की अवधारणा को समझना। एक व्याख्यान में, जिसमें भाग लिया
मिशनरी रेव. सैंटर, एक हिंदू ने सिखाया कि "कैसे बचा जाए... का सवाल एक महत्वपूर्ण मुद्दा था
समस्या जो शुरू से ही लोगों के दिमाग में घूम रही थी" और केवल
यीशु द्वारा “समाधान” किया गया, जिसका “संपूर्ण आत्म-बलिदान का जीवन दिखाता है कि परमेश्वर की इच्छा को कैसे पूरा किया जाए”
जीवन के सभी रिश्तों को।”135 भले ही इस आदमी को उस व्यक्ति में प्रशंसा करने के लिए बहुत कुछ मिला
यीशु, उन्होंने "विश्वास को बचाने" के मिशनरी दृष्टिकोण को साझा नहीं किया, कि एक आदमी हो सकता है
जिसे “देखना ही उद्धार पाना है।”136

आपसी समझ की यह कमी आंशिक रूप से इसलिए है क्योंकि मिशनरियों ने
हिंदुओं के लिए एक उत्तर है कि यीशु में आस्था कैसे पापों को क्षमा कर सकती है। प्रश्न
इस घटना ने मिशनरी को मुश्किल में डाल दिया। अगर उसने हिंदू को पुराने धर्म के बारे में बताया होता
जब ईश्वर ने “पाप की क्षमा” के लिए खून की मांग की, तो हिंदू अक्सर जवाब देते थे

---

[133] बीयूएल, रेव्ह. एचजे मोलोनी, वार्षिक पत्र, 1894, पृ. 94.
[134] बी.यू.एल., कॉटन, वार्षिक पत्र, पृ. 87.
[135] बी.यू.एल., रेव. ए.जे. सैंटर, वार्षिक पत्र, 1889, पृ. 104.
[136] बी.यू.एल., श्रीमती ई. डुरंट, वार्षिक पत्र, 1900, पृष्ठ 463.

Machine Translated by Google

मिशनरियों को उनके अनुष्ठानों को दंडित करने या इस पर सर्वोच्चता का दावा करने का कोई अधिकार नहीं था
“ईश्वर” जो शाकाहारी भी नहीं था! कुछ मामलों में मिशनरियों ने सिर्फ़ नज़रअंदाज़ किया
यह कोई सवाल ही नहीं है। एक मामले में, रेव कारमाइकल से “एक पंडित, एक पुराने दुश्मन” ने पूछा था
सत्य का, "मुक्ति" की व्याख्या करने के लिए। कारमाइकल ने 1920 में लंदन को लिखे अपने वार्षिक पत्र में लिखा था।
1888 में उन्होंने कहा कि जवाब देने के बजाय, उन्होंने "इतनी गंभीर बात को हल्के में लेने के लिए उन्हें कड़ी फटकार लगाई
विषय पर चर्चा की और उनसे कहा कि वे पश्चातापपूर्ण विश्वास और प्रार्थना में इसकी खोज करें।” [137]

मिशनरी सुसमाचार की प्रस्तुति में अत्यधिक व्यवस्थित थे, और
वे सबसे अधिक सहज तब थे जब वे चरण-दर-चरण मॉडल में काम कर सकते थे। उदाहरण के लिए, एक
रेव. कारमाइकल के पहाड़ी सहायक यह नहीं समझ पाए कि यीशु का खून कैसे पापों को धो सकता है।
पाप को दूर भगाओ। बेहतर ढंग से समझाने के लिए, कारमाइकल ने पाप (हिंदू शब्द) शब्द लिखा
"पाप" के सबसे करीब, लेकिन इसका मतलब शारीरिक या नैतिक अशुद्धता होता है) स्याही से एक टुकड़े पर
कागज और सहायक से पूछा कि क्या सौ “अंधविश्वासी पूजा” या सौ की पूजा
मूर्तियाँ इसे हटा सकती थीं। उन्होंने स्वीकार किया कि कोई भी इसे हटा नहीं सकता था। फिर मिशनरी ने एक मूर्ति निकाली
स्याही रबड़ (यीशु का प्रतिनिधित्व करने के लिए) और पाप शब्द मिटा दिया । [138] इसका एक कारण यह भी था कि उन्हें
यीशु को स्याही से मिटाने वाली मशीन बनाने का सहारा लेते हैं ताकि (कुछ हद तक) उनके विश्वास को समझाया जा सके कि उनमें
पतन के बारे में कनेक्शन। संचार के लिए यह बाधा आगे भी मजबूत हुई
तथ्य यह है कि हिंदू धर्म में “विश्वास” को बचाने, “ज्ञान को बचाने” की कोई धारणा नहीं थी।
"बचाव" के रीति-रिवाज और अनुष्ठान हैं, लेकिन यह विचार कि किसी चीज़ में "विश्वास" क्षमा कर सकता है
पापों के बारे में सोचना विदेशी था। जैसा कि रेव. ए. स्टर्न ने मार्मिक ढंग से कहा, "यह विचार कि ईश्वर-जो सर्वशक्तिमान है-
मनुष्य को विश्वास करने के लिए प्रार्थना और विनती करनी चाहिए, यह उनके [हिंदुओं] के लिए पूरी तरह से विदेशी था
धारणाएँ।”139

[137] बी.यू.एल., रेव. टी. कारमाइकल, वार्षिक पत्र, 1888, पृष्ठ 77.
[138] बी.यू.एल., रेव. टी. कारमाइकल, वार्षिक पत्र, 1889, पृ. 584.
[139] बी.यू.एल., रेव. एच. स्टर्न, वार्षिक पत्र, 1889, पृ. 261.

Machine Translated by Google

हालाँकि, भारत में प्रेम को सहेजने की परंपरा रही है।140 केवल एक बार ऐसा हुआ कि
मिशनरियों और हिंदुओं के बीच वास्तव में संवाद तब हुआ जब वे
यीशु के प्रति प्रेम पर चर्चा। यह सामान्य भारतीय श्रद्धा के साथ प्रतिध्वनित होता प्रतीत हुआ
पवित्र व्यक्ति और तपस्वी: नम्र, विनम्र, सहनशील, गरीबों का प्रेमी और चंगा करने वाला
बीमार.141 उदाहरण के लिए, रेव्ह मैकलीन ने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में लिखा, जिसने यीशु के सुसमाचार को पढ़ा था।
सेंट जॉन और सेंट ल्यूक, "हमारे प्रभु की पवित्रता, सादगी और विनम्रता से प्रभावित हुए"
जीवन" और जो दृष्टान्त उसने याद किये थे, उन्हें वह चलते-चलते लोगों को सिखाता रहा ।142
इसी तरह, रेवरेंड डुरंड ने एक व्याख्यान में भाग लिया जिसमें एक हिंदू ने सिखाया कि यीशु "कोई नहीं था
यूरोपीय, लेकिन एक सच्चे एशियाई- ओरिएंटल के राजा और राजकुमार। यह एक दुर्भाग्य था कि
उन्हें यूरोपीय लोगों द्वारा भारत लाया गया था, और कमोबेश एक छद्म वेश में।
यूरोपीय।"143 फिर भी ये हिंदू न केवल यीशु को एक योग्य शिक्षक मानते थे बल्कि
इससे ज़्यादा कुछ नहीं। उन्होंने उसे एक बुद्धिमान शिक्षक के रूप में देखा, लेकिन साथ ही एक ऐसे ईश्वर के रूप में भी जिसे प्यार किया जाना चाहिए- बस
परमेश्वर का एकमात्र पुत्र नहीं। मिशनरियों के साथ उनका भी मानना था कि वह उनके पास आ सकता है
सहायता करें और उन्हें आराम पहुँचाएँ। ऐसे कई उदाहरण थे जहाँ लोगों को
मिशनरी हॉस्टल में ऐसी बातें कही जाती हैं कि "आपका यीशु ही एकमात्र है जो हमारी मदद कर सकता है
जब हम मुसीबत में होते हैं।" [144] रेव्ह. हॉलैंड ने दावा किया कि कई बार ऐसा हुआ है "जब हमारे पास
एक साथ घुटने टेक दिए और हिंदू होठों ने कांपते हुए अपने दिल की इच्छाएं हमारे सामने व्यक्त कीं
पिता।"145 जब वे यीशु के व्यक्तित्व की प्रशंसा कर रहे थे, तब भी वे ऐसा कर रहे थे
एक निश्चित भारतीय तरीका, उदाहरण के लिए, एक हिंदू ने रेव. ट्रेनर से कहा कि वह यीशु को पसंद करता है
क्योंकि वह "मोहम्मद की तुलना में अति करने में कम प्रवृत्त था।"146 इनमें से कई मामलों में,

---

[140] बेलेनोइट, शिक्षा और साम्राज्य, 135.
[141] बी.यू.एल., श्री आर. बेकर, वार्षिक पत्र, 1894, पृष्ठ 76.
[142] बी.यू.एल., रेव. डब्ल्यू.एल. मैकलीन, वार्षिक पत्र, 1894, पृ. 77.
[143] बी.यू.एल., रेव. जी.बी. डुरंड, वार्षिक पत्र, 1889, पृ. 162.
[144] बी.यू.एल., मिस एम.ई. श्नाइडर, वार्षिक पत्र, 1905, पृ. 508.
[145] बी.यू.एल., रेव. वेस हॉलैंड, वार्षिक पत्र, 1903, पृष्ठ 400.
[146] बी.यू.एल., रेव. डब्ल्यू.वी.के. ट्रेनोर, वार्षिक पत्र, 1902, पृ. 308.

Machine Translated by Google

ऐसा प्रतीत नहीं होता कि मिशनरियों ने मुख्य धार्मिक सिद्धांत का त्याग किया है
किसी प्रकार का „संवाद" प्राप्त करना।

सीएमएस वार्षिक पत्रों और इंटेलिजेंसर्स का बारीकी से अध्ययन करने से इस विषय में अंतर्दृष्टि मिलती है
इन मिशनरियों और उत्तर में उनके द्वारा सामना किये गए लोगों के बीच वास्तविक बातचीत
भारत। सूत्रों से पता चलता है कि भारत में पवित्र पुरुषों के लिए पारंपरिक रूप से हिंदू श्रद्धा और
अपने देवताओं के प्रति प्रेमपूर्ण भक्ति की परंपरा ने उन्हें मिशनरियों से जुड़ने का अवसर दिया
यीशु की पूजा, एक आम रोल-मॉडल और देवता। हालाँकि, इसमें बाधाएँ भी थीं
संचार, विशेष रूप से ईश्वरत्व, पाप और की विभिन्न अवधारणाओं के संबंध में
मोक्ष।

3. आर्य समाज और सीएमएस मिशनरी

पहली नज़र में ऐसा लग सकता है कि आर्य समाज का सी.एम.एस. से सम्बन्ध
मिशनरियों की नकल करना एक साधारण काम था। आर्य समाज ने निस्संदेह
संगठन और सुसमाचार प्रचार के मिशनरी तरीके, केंद्रीय सैद्धांतिक बिंदु बनाना
ऐसे धार्मिक विचारों से जो हिंदू धर्म में पहले कभी अस्तित्व में नहीं थे (जैसे कि
धर्मांतरण या यह विचार कि धार्मिक नेता अनुष्ठान पुजारी के रूप में नहीं, बल्कि प्रशिक्षक के रूप में सेवा करते हैं
एक पवित्र पाठ में)। फिर भी, निम्न-चर्च की सबसे स्पष्ट नकल के भीतर भी
एंग्लिकनवाद, मिशनरी और हिंदू के बीच बड़ा संवाद, जिसमें दोनों
अक्सर एक दूसरे को पूरी तरह से अनदेखा कर दिया जाता है, यह अभी भी स्पष्ट है। दो प्रमुख मुद्दों के संबंध में
मोक्ष और ईश्वरत्व की प्रकृति के बारे में, समाज की शिक्षाएं इसके संस्थापक और
सदस्यों को एक लंबी भारतीय परंपरा में डूबा होना चाहिए, जो निश्चित रूप से किसी अन्य भारतीय परंपरा से उधार नहीं ली गई है।
मिशनरियों। एक तरह से, ईसाई धर्म के प्रति उनकी प्रतिक्रिया में समाज के सदस्य,
उन हिंदुओं से बहुत अलग, जिन्होंने बाह्य रूप से सी.एम.एस. मिशनरियों से बहुत कुछ अपनाया।

Machine Translated by Google

लेकिन आर्य समाज ने कभी भी ईश्वर, पाप और मोक्ष के मिशनरी विचारों को नहीं अपनाया।

मिशनरियों और उनके छात्रावासों में रहने वालों के बीच बातचीत की कमी, यह दर्शाती है

ईसाइयों और हिंदुओं के पूरी तरह से अलग-अलग विश्वदृष्टिकोण जो बाधा साबित हुए

वास्तविक „संवाद"

हिंदू "सुधार" का विचार 1800 के दशक के अंत में नया नहीं था। सदी के शुरू में,

बंगाली सुधारक राममोहन राय (1772-1833) ने अपनी आध्यात्मिक पहचान को इस रूप में देखा

"हमले के अधीन" होने के कारण, उन्होंने प्राचीन परंपरा से जो कुछ बचाया जा सकता था, उसे बचाने का प्रयास किया

और अपनी संस्कृति को आधुनिक दुनिया में स्थान दिलाने के लिए, उन्होंने ब्रह्मो नामक एक समूह की शुरुआत की

समाज.147 वे किसी भी एक धर्म को दूसरे से श्रेष्ठ नहीं मानते थे, बल्कि उनका मानना था कि सभी धर्म एक ही हैं।

धर्मों को मनुष्य के कार्यों को विनियमित करने की प्रणाली माना जाता है, जो "मनुष्य के विचारों को ऊपर उठाने" के लिए डिज़ाइन की गई है

एक ईश्वर की उच्च और उदार धारणाएँ।" रॉय को, और आज भी, "अग्रणी" के रूप में देखा जाता है

हिंदू समुदाय में सभी जीवित प्रगति का राजनीतिक प्रवक्ता ,148

भारत,''149 ''प्रथम भारतीय उदारवादी,''150 ' 'प्रबुद्ध समाज सुधारक''151 और ''प्रथम

आधुनिक भारत के राष्ट्र-निर्माता"152 यद्यपि उन्हें बहुत स्नेह से याद किया जाता है, उनका ब्रह्मो

समाज को अक्सर "प्रोटेस्टेंटवाद की एक बूंद" के रूप में वर्णित किया जाता है, जिसने एक बड़े पैमाने पर विश्वासघात किया

---

[147] राय, यंग इंडिया, 111. साम्राज्यवाद से भारत को बचाने का यह विचार रॉय के अपने शब्दों में देखा जा सकता है,
भट्ट द्वारा उद्धृत: "हिंदुओं की वर्तमान प्रणाली उनके राजनीतिक हितों को बढ़ावा देने के लिए अच्छी तरह से गणना नहीं की गई है ... यह आवश्यक है कि उनके धर्म में कुछ बदलाव हो, कम से कम उनके राजनीतिक लाभ और सामाजिक आराम के लिए। गौरी शंकर भट्ट, "ब्रह्मो समाज, आर्य समाज, और चर्च-संप्रदाय टाइपोलॉजी" धार्मिक शोध की समीक्षा 10 नंबर 1 (1968), 24। जैसा कि नाम से निहित है, यह उन लोगों का समाज (समाज) था , जिन्होंने उपनिषदों और वेदांत दर्शन के एकमात्र, सर्वशक्तिमान ईश्वर ब्रह्मा को स्वीकार किया था। जेएन फ़ार्कुहार, भारत में आधुनिक धार्मिक आंदोलन (दिल्ली, 1967), 29। रॉय का प्रभाव निश्चित रूप से हिंदू ग्रंथों तक सीमित नहीं था; वह इंडो-इस्लामिक सांस्कृतिक दुनिया में शिक्षित थे, अंग्रेजी का अध्ययन किया और ईसाई धर्म की अपनी समझ को बेहतर बनाने के लिए, हिब्रू और ग्रीक भी सीखे। उनके लेखन में ईश्वर को एकत्व प्रदान किया गया है जो इस्लाम के प्रति उनकी प्रशंसा और यूरोपीय देववाद के साथ उनके व्यवहार दोनों से काफी हद तक प्रभावित है। वही, 30-33

[148] फ़ार्कुहार, आधुनिक धार्मिक आंदोलन, 29.
[149] भट्ट, "ब्रह्मो समाज, आर्य समाज और चर्च-संप्रदाय टाइपोलॉजी," 24.
[150] बेली, आधुनिक दुनिया का जन्म, 293.
[151] फ्रिकेनबर्ग, भारत में ईसाई धर्म, 273।
[152] राय, यंग इंडिया, 111. मैक्स मूलर की दुनिया में वे ही थे, "जो पूर्व से पश्चिम की ओर आए, हाथ मिलाने वाले पहले व्यक्ति और उस विश्वव्यापी चक्र को पूरा करने वाले, जिसके माध्यम से अब से, बिजली के करंट की तरह, पूर्वी विचार पश्चिम की ओर भाग सकते थे और पश्चिमी विचार पूर्व की ओर लौट सकते थे।" डेविड स्मिथ, हिंदू धर्म और आधुनिकता (ऑक्सफोर्ड: ब्लैकवेल पब्लिशिंग, 2003), 39-40.

Machine Translated by Google

भारत की मूल परंपराओं में विश्वास की कमी।153 इस कारण से, मिशनरियों ने कभी भी
रॉय से विशेष रूप से खतरा महसूस किया गया।[154] एक मिशनरी, रेव. लैथम ने लिखा कि वह
और कई अन्य मिशनरियों ने एक साथ ब्रह्मो सेवा में भाग लिया था और,
व्याकुल होने के कारण, वे भजन और अय्यूब तथा उसके बाद के अध्यायों को पढ़कर प्रसन्न हुए।
आत्म-बलिदान पर उपदेश।155 स्पष्ट रूप से, मिशनरियों और के बीच संबंध
ब्रह्मोस किसी भी प्रकार की प्रतिस्पर्धा या विरोध का विषय नहीं था।

बाद में आर्य समाज नामक एक समूह ने मिशनरियों के साथ अधिक संपर्क स्थापित किया।
आवृत्ति और गुणवत्ता के मामले में उत्तर भारत में सबसे ज़्यादा। हमारे उद्देश्यों के लिए यह मुठभेड़,
रॉय और ब्रह्मोस की तुलना में गुणात्मक और मात्रात्मक रूप से अधिक तीव्र
हासिल किया। जबकि उत्तर भारत में ब्रह्मो समाज को मिशनरियों द्वारा इस प्रकार वर्णित किया गया था
"सक्रिय विरोध" के प्रति कम झुकाव, तथा "पंथ में हमारे अधिक निकट",[156] नया आर्य
समाज को अक्सर “सबसे आक्रामक और खुले विरोधियों” के रूप में वर्णित किया जाता था
मिशनरी.[157] ब्रह्मो की इच्छा अन्य धर्मों के साथ शांतिपूर्ण, बौद्धिक जुड़ाव की है।
साथ ही दुनिया भर के धार्मिक हस्तियों से सबक लेने की क्षमता भी बाद में
विवेकानंद के रामकृष्ण मठ और मिशन में संरक्षित, लेकिन पूरी तरह से
आर्य समाज के सदस्यों को यह अस्वीकार्य है।

---

[153] राय, यंग इंडिया, 40. यह लंबे समय से माना जाता रहा है कि समूह की साप्ताहिक सेवाएं प्रोटेस्टेंट प्रथाओं की नकल करती थीं; (इबिड. 39-40) और वास्तव में, रॉय से पहले, हिंदू धर्म में उस प्रकृति की सामुदायिक पूजा की कोई धारणा नहीं थी। उदाहरण के लिए, फ़ार्कुहर ने लिखा: "हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि राम मोहन द्वारा आयोजित सेवा का स्वरूप ईसाई है। प्राचीन हिंदू धर्म में सामूहिक पूजा अज्ञात है, जिसके बारे में उनका मानना था कि वे इसे पुनर्स्थापित कर रहे थे।" फ़ार्कुहर, आधुनिक धार्मिक आंदोलन, 39.

[154] वे आम तौर पर समाज को "सुधारक हिंदू संप्रदायों" में से एकमात्र के रूप में वर्णित करते थे जो निश्चित रूप से नहीं था "ईसाई विरोधी।" वास्तव में, उन्होंने सुधारों (विशेषकर मूर्तिपूजा के संबंध में) और ईश्वरवाद के विचार को कुछ ऐसा माना जो "उसकी विजय का मार्ग प्रशस्त करेगा जिसका वे अब विरोध करते हैं - ठीक वैसे ही जैसे नव-प्लेटोनवाद ने आरंभिक ईसाई शताब्दियों में किया था।" बी.यू.एल., रेव. डॉ. डब्ल्यू. हूपर, वार्षिक पत्र, 1902, पृ. 400.

[155] बी.यू.एल., रेव. डब्ल्यू. लैथम, वार्षिक पत्र, 1889, पृ. 249.

[156] बी.यू.एल., रेव. जी.बी. डुरंड, वार्षिक पत्र, 1889, पृ. 162.

[157] बी.यू.एल., रेव. जे.ए.एफ. वॉरेन, एनुअल लेटर्स, 1904, पृ. 293. मिस डेविस इस भावना को उन महिलाओं के वर्णन में दोहराती हैं जिनके आर्य पति खुद को उनके काम के सबसे “आक्रामक” विरोधियों के रूप में पेश करते हैं, जो अपनी पत्नियों को किसी भी ईसाई धर्मग्रंथ को पढ़ने से रोकते हैं। बी.यू.एल., मिस बी. डेविस, एनुअल लेटर्स, 1911, पृ. 159.

Machine Translated by Google

आर्य समाज की स्थापना 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती ने की थी, (1824-1875)
1883)158 दृष्टिकोण, संगठन और विचारधारा की दृष्टि से ब्रह्म समाज से भिन्न था।
खास तौर पर मिशनरियों के साथ इसके रिश्ते में। उदाहरण के लिए, कुछ समानताएँ थीं
दयानंद के व्यापक सुधारों के आह्वान और लोकप्रिय, मूर्तिपूजक हिंदू धर्म के प्रति अरुचि में।
लेकिन कुल मिलाकर आर्य समाज का जन्म एक अधिक गौरवपूर्ण भारतीय (देशी) भावना से हुआ था।
159 भावना. बेशक, वे "पश्चिम" के साथ किसी भी तुलना से पूरी तरह बच नहीं सकते थे,
लेकिन धर्मों के बीच समानता की ब्रह्मो खोज के विपरीत, आधार की जांच
धर्म की नैतिक समानता के बावजूद आर्य भारतीय धर्म की श्रेष्ठता के प्रति आश्वस्त रहे।
परंपरा।

शुरुआत में, इससे मिशनरियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध नहीं बन पाए।
हर बातचीत अनिवार्य रूप से एक बाजार में चिल्लाने की प्रतियोगिता थी, कोई भी उतना विचित्र और
शांतिपूर्ण दृश्य, जैसे कि कुछ मिशनरियों द्वारा शांतिपूर्वक ब्रह्मो सेवा में भाग लेना।
मिशनरियों और आर्यों के बीच संबंध निरंतर टकरावपूर्ण था।
मिशनरी विवरण शायद ही कभी नागरिक धार्मिक प्रवचन के होते हैं, बल्कि प्रचारकों के समूहों के होते हैं
मिशनरियों को "सिर्फ़ अपने धर्म की प्रशंसा करने के लिए नहीं बल्कि उसका उपहास करने के लिए" नियुक्त करें
ईसाई धर्म को बड़े और सहानुभूतिपूर्ण दर्शकों के सामने प्रस्तुत करना।"160 रेव. कारमाइकल, आधारित
मेरठ ने आर्यों को "नया हिंदू" कहा और कहा कि वे "धर्म के महान विरोधी हैं"
ईसाई धर्म के संस्थापक," को अक्सर ऐसे प्रश्न पूछते हुए पाया जा सकता था जिन्हें वे "आकर्षक" प्रश्न कहते थे।
मिशनरियों। उदाहरण के लिए, उन्होंने लिखा कि कई बार स्टॉक प्रश्न एक से शुरू होते हैं
यह पूछताछ कि क्यों यीशु ने समकालिक सुसमाचारों में पूछा, "तू मुझे अच्छा क्यों कहता है?"161
लेकिन, अपने सभी मतभेदों के बावजूद, ऐसा लगता है कि मिशनरियों ने समाज को एक योग्य संस्था के रूप में देखा।

---

158 वाट, सर्विंग द नेशन, 220.
159 फ़ार्कुहर इसे वह युग मानते हैं जब "शिक्षित भारतीय अचानक बड़े हो गए, और उन्होंने दिखाया कि वह
उसका अपना एक विचार था।" फ़ार्कुहार, आधुनिक धार्मिक आंदोलन,101.
160 बी.यू.एल., वार्षिक पत्र, 1887, पृ. 140.
161 बी.यू.एल., श्री ए. कारमाइकल, वार्षिक पत्र, 1899, पृ. 581.

Machine Translated by Google

विरोधी। जैसे-जैसे मिशनरियों ने खुद को पहले ईसाइयों, आर्यों से जोड़ा
"पुराने यूनानियों" की भूमिका निभाई।162 उदाहरण के लिए, रेव्ह एचबी डुरंट ने समाजियों को भुगतान किया
उन्हें "गंभीर, संकीर्ण, कट्टर, पूर्वाग्रही" और "कुछ" के रूप में वर्णित करने का पूरक
हमारे सर्वोत्तम छात्रों में से एक।"163 इसी तरह, रेवरेंड वालर ने भी आर्य समाज की प्रशंसा की।
ईसाई धर्म के प्रति अपनी आपत्तियों में उन्होंने "बहुत चतुराई" दिखाई, और केवल इस बात पर अफसोस जताया कि
"ऐसी चतुराई का प्रयोग गलत दिशा में किया जाना चाहिए।"164

कभी-कभी मिशनरी आर्य समाज को अपने डार्विनवादी सिद्धांत पर रखते थे।
धार्मिक प्रक्षेप पथ। हालाँकि वे कई मुद्दों पर मौलिक रूप से असहमत थे, कुछ ने देखा
मूर्तिपूजा का उन्मूलन हिंदू धर्म से दूर होकर ईसाई धर्म की ओर एक कदम है। रेव जे.
एम. पैटरसन ने आगरा से लिखा कि इस तथ्य के बावजूद कि कई मिशनरियों का मानना था कि
उन्होंने कहा कि समाज "ईसा मसीह के बिना भारत में नैतिकता प्रस्तुत करने के लिए शैतान का एक उपकरण है।"
उनका मानना था कि इस नैतिक संहिता का एकमात्र परिणाम उस देश में "पाप का ज्ञान" होगा
जहाँ ऐसा ज्ञान काफी हद तक अनुपस्थित था। इस देश में जहाँ "महान और
शक्तिशाली लोगों को खेल और मनोरंजन माना जाता है" जबकि मात्र "नीच वर्ग का अस्तित्व"
पाप था, रेव. पैटरसन को यह समझ में नहीं आया कि नैतिक संहिता से कोई नुकसान कैसे हो सकता है।165

हालाँकि, नैतिक संहिता की परवाह किए बिना, अन्य मुठभेड़ों से पता चलता है कि आर्य और
मिशनरियों ने पाप के बारे में पूरी तरह से अलग विचार रखे। जबकि मिशनरी
पाप से बंधा हुआ, यीशु की मदद के बिना खुद को मुक्त करने में असमर्थ,166 यीशु मसीह के नैतिक कोड के अनुसार,
आर्यस एक ऐसी चीज थी जिसका वे पालन करने में सक्षम थे। यह श्री के लिए अंतहीन निराशाजनक था।
कारमाइकल, जो एक समाजवादी से मिले, जिन्होंने दावा किया कि "मोक्ष का मार्ग आसान है" और केवल एक
धीरे-धीरे "पाप से छुटकारा पाने" के लिए "व्यक्तिगत प्रयास करने" का मामला। श्री कारमाइकल,

---

[162] बी.यू.एल., रेव. ए. बटरवर्थ, वार्षिक पत्र, 1898, पृ. 609.
[163] बी.यू.एल., रेव. एच.बी. डुरंट, वार्षिक पत्र, 1911, पृ. 149.
[164] बी.यू.एल., रेव. ई.एच.एम. वालर, वार्षिक पत्र, 1899, पृ. 529.
[165] बी.यू.एल., रेव. जे.एम. पैटरसन, वार्षिक पत्र, 1900, पृ. 553.
[166] बी.यू.एल., रेव. टी. कारमाइकल, वार्षिक पत्र, 1899, पृ.582.

Machine Translated by Google

इस बात पर आश्वस्त हैं कि पाप मानवीय स्थिति का एक मूलभूत हिस्सा है और इसे समाप्त करना असंभव है।

इस जीवन में विजय प्राप्त करने के बाद, उस व्यक्ति को यह बताने का प्रयास किया कि यदि उसने वास्तव में एक अवस्था प्राप्त कर ली है

पापहीनता के कारण, वह "यहां तक कि रानी-महारानी" से भी महान व्यक्ति थे।167

मिशनरी छात्रावासों में रहने वाले वे लोग जो यीशु को ऐसा व्यक्ति मानते थे जो "मुझे बुराई से बचाता है"

मानव स्वभाव के बजाय कर्मों"168 से आर्य समाज ने कभी मिशनरी विचारों को नहीं अपनाया

मनुष्य के "पापपूर्ण" होने का। स्पष्ट रूप से आर्यों का नैतिक कोड किसी से उधार नहीं लिया गया था

मिशनरियों के लिए। आर्यों के लिए, एक नियम का पालन किया जा सकता था, जबकि

दूसरा कथन मानव होने की प्रकृति के बारे में था।

मिशनरी स्कूलों से आर्यों द्वारा बचाए गए छात्रों की संख्या

जैसे-जैसे आर्य बड़े होते गए, मिशनरी सिद्धांत और तरीकों के बारे में उनकी जानकारी बढ़ती गई, जिसका वे लाभ उठाते गए।

कभी-कभी मज़ाक उड़ाते और कभी-कभी समान गति से नकल करते। सदी के अंत तक, कई

समाज के सदस्य मिशन स्कूलों के "पुराने छात्र" थे जिनका नया विरोध शुरू हो गया

ईसाई धर्म में प्रवेश करना कई मिशनरियों के लिए "बहुत बड़ा दुःख" था।[169] उनकी बढ़ती संख्या,

जिसके बारे में मिशनरियों ने डरते हुए रिपोर्ट किया था,170 वह भी सी.एम.एस. के लिए एक खतरा था, क्योंकि

समाज के कई नए सदस्यों को ईसाई धर्म और धर्मग्रंथों का बुनियादी ज्ञान था,

जिसकी उन्होंने कड़ी आलोचना की। समाज को सबसे पहले इस मुद्दे पर ध्यान देने की जरूरत थी

वे बपतिस्मा प्राप्त मसीहियों को पुनः ईसाई बनाने के बारे में क्या सोच रहे थे?

हिंदू धर्म में तकनीकी रूप से "न तो हिंदू धर्म की अवधारणाएं थीं और न ही अनुष्ठान"

धर्मांतरण.171 हालाँकि, समाज को इन युवाओं को धर्मांतरण करने का एक तरीका चाहिए था।

मिशनरी स्कूलों से बचाकर वापस लाया गया। इस तरह, उन्होंने एक तरह से अवधारणा को फिर से परिभाषित किया

---

[167] बी.यू.एल., श्री ए. कारमाइकल, वार्षिक पत्र, 1899, पृ. 581.

[168] बी.यू.एल., मिस जे.ई. पकल, वार्षिक पत्र, 1900, पृ. 467.

[169] बी.यू.एल., रेव. थ्वाइटी, वार्षिक पत्र, 1887, पृ. 176.

[170] उदाहरण के लिए, रेव्ह. जेनकर ने लिखा कि "एक पुजारी ने मुझे बताया है कि नाममात्र के अनुयायी...
लगभग 40,000 तक"। बी.यू.एल., रेव. जेनकर, वार्षिक पत्र, 1886, पृ. 39.

[171] केनेथ डब्ल्यू. जोन्स, "स्वामी दयानंद की ईसाई धर्म की आलोचना" ब्रिटिश भारत में धार्मिक विवाद: दक्षिण एशियाई भाषाओं में संवाद (अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस, 1992), 52.

Machine Translated by Google

" शुद्धि " मूल रूप से एक हिंदू शुद्धिकरण अनुष्ठान है। उन्होंने इसे ईसाई धर्म के ढांचे में ढाला
बपतिस्मा उन लोगों के लिए हिंदू धर्म में पुनः प्रवेश का मार्ग बना जो इससे दूर हो गए थे।
हालाँकि, यह जल्द ही एक ऐसे तरीके में बदल गया जिससे लोगों का एक समूह पुनः धर्मांतरित हो सकता था, और
बाद में एक ऐसे तरीके पर विचार किया गया जिससे एक समूह को उसकी अछूत अवस्था से "शुद्ध" किया जा सके।[172]
इससे पता चलता है कि जब उन्होंने धर्म के मिशनरी रूप को अपनाया, जैसे कि यह स्पष्ट
बपतिस्मा की नकल के बावजूद हिंदू विचार बने रहे। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति का विचार
अपना "धर्म" चुनना अनसुना था, और आमतौर पर सबसे अधिक परेशान करने वाली चीजों में से एक था
एक मिशनरी। एक मिशनरी ने लिखा कि विस्तारित परिवार ही वह कारण था जिसकी वजह से
कोई व्यक्तिगत धर्मांतरण नहीं, हिंदू धर्म का सबसे जटिल गढ़।173 शुद्धि
अछूतों की संख्या में वृद्धि से हिंदुओं में यह भय दिखा कि मिशनरियाँ निम्न या किसी जाति के लोगों को चुरा रही हैं,
1871 की अखिल भारतीय जनगणना से पता चला कि हिंदू धर्म एक ऐसा धर्म है जो पतन की ओर अग्रसर है,
पिछले दशक की तुलना में ईसाई धर्म में धर्मांतरण में 410 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।[174]
इस बिंदु तक "हिंदू धर्म" कुछ ऐसा था जिसमें एक व्यक्ति पैदा होता था और
वास्तव में कभी भी सैद्धांतिक रूप से „छोड़ना" नहीं चाहिए, जिससे धर्मांतरण संस्कार पूरी तरह से अनावश्यक हो जाता है।
यद्यपि शुद्दि का उद्देश्य ईसाई बपतिस्मा को प्रतिबिम्बित करना (और उसके प्रभावों का मुकाबला करना) था,
यह हिंदू और ईसाई धर्म में मोक्ष के बारे में विचारों के बीच अंतर को उजागर करता है।
जिन लोगों को मिशनरियों ने उपदेश दिया, उन्होंने कभी CMS को नहीं समझा या अपनाया
मोक्ष के विचारों के कारण आर्य समाज ने धर्मांतरण की रस्म बनायी, लेकिन उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया
व्यक्तिगत रूपांतरण में विश्वास अपनाया। यह इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि यह संस्कार जल्दी ही
इसे युवा पुरुषों के समूहों को "हिंदू धर्म" की तह में वापस लाने के एक तरीके के रूप में बदल दिया गया।
यह स्वामी दयानंद के मुख्य सिद्धांत बिंदुओं में से एक को उजागर करता है: क्षमा ही सब कुछ है।
असंभव। वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिनका जीवन और शिक्षाएँ असंगतियों से भरी हुई थीं

[172] जोन्स, सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन, 101.
[173] सीएमएस इंटेलीजेंसर 1892, 813.
[174] जोन्स, सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन, 100.

Machine Translated by Google

और कभी-कभी रहस्य में लिपटा हुआ, आंशिक रूप से उसकी अपनी गलती या इच्छा और आंशिक रूप से
समूह की भिन्नात्मक प्रकृति जिसका एकमात्र सत्य वेदों की वैधता थी। फिर भी,
दयानंद मोक्ष के मुद्दे पर अड़े रहे। जबकि एक हिंदू को एक ऐसे धर्म में पढ़ाया जा रहा था जो उसे ...
मिशन स्कूल स्पष्टीकरण की मांग कर सकता है, बार-बार पूछ सकता है कि "आपका मसीह कैसा है
पापों को क्षमा करें?,"175 या "यह कैसे संभव है कि मसीह एक गिरे हुए मनुष्य को जिलाने में सक्षम है?"176, दयानंद
उन्होंने बस इतना कहा कि वे ऐसा नहीं कर सकते। दयानंद कर्म और सत्य में अपने विश्वास पर अड़े रहे।
आत्माओं का देहान्तरण (संसार) और इसे हास्यास्पद, यहाँ तक कि बचकाना पाता है, कि एक आदमी
दूसरे के बुरे कर्मों को अपने ऊपर ले सकता है।

इसी तरह उन्होंने इसे भी हास्यास्पद पाया कि एक भगवान किसी चीज़ को केवल इसलिए बनाएगा ताकि उसे भगवान कह सके।
बुराई। मोक्ष की विदेशी धारणाओं को नकारना एक बड़े सवाल की ओर भी इशारा करता है
ईश्वरत्व की प्रकृति। दयानंद की ईसाई धर्म की आलोचना सबसे कठोर थी
ईसाई देवता, जिनके बारे में दयानंद का मानना था कि वे ब्रह्मांड के एकमात्र ईश्वर नहीं हैं।
ईश्वर को अपरिवर्तनीय, शाश्वत आनंद के रूप में देखने वाले वैदिक दृष्टिकोण ने, मानवीय भावनाओं के अधीन नहीं होने के कारण,
ईश्वर को पश्चाताप होने और अपनी सृष्टि को सुधारने की आवश्यकता का विचार अतार्किक लगता है।

एक तरह से, दोनों समूहों के बीच सभी सैद्धांतिक मतभेदों के बावजूद, यह विचार कि कैसे
विभिन्न परम्पराओं का एक दूसरे से सम्बन्ध आर्यों के बीच सबसे बड़ा अंतर था
समाज और अन्य समूह, जैसे रामकृष्ण मिशन। दयानंद और अन्य संगठनों के सदस्य
आर्य समाज का मानना था कि वैदिक हिंदू धर्म ईसाई धर्म से श्रेष्ठ है।
आर्यों ने इस भारत-केंद्रित दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए मिशनरी रणनीति अपनाई।
स्कूलों और अनाथालयों में, उन्होंने अपना संदेश फैलाने के लिए ट्रैक्ट और पैम्फलेट का भी इस्तेमाल किया।
सीएमएस मिशनरियों की एक और स्पष्ट नकल। हालाँकि, ऐसा लगता है कि उन्होंने ऐसा नहीं किया
मिशनरियों के तरीकों को ही प्रतिबिम्बित करते हैं; उन्होंने हिंदू धर्म की ईसाई आलोचनाओं को लिया,

---

[175] बी.यू.एल., सिंह, वार्षिक पत्र, 1902, पृ. 276.
[176] सीएमएस इंटेलीजेंसर 1909, 151.

Machine Translated by Google

उन्हें ईसाई धर्म पर लागू किया और फिर उन्हें केंद्रीय सैद्धांतिक बिंदु बना दिया।

उदाहरण के लिए, कई मिशनरी पुस्तिकाओं में विभिन्न हिंदू देवताओं की दिव्यता पर हमला किया गया।

आम मिशनरी ग्रंथों में राम परीक्षा (राम का परीक्षण या जांच) और कृषु शामिल थे

परीक्षा, जिसमें "पवित्र मूल पुस्तकों में से एक" से एक उद्धरण के बाद

मिशनरी स्पष्टीकरण कि यह भगवान वास्तव में दिव्य क्यों नहीं था। विषय-वस्तु बहुत ही अच्छी थी

मिशनरी ट्रैक्ट के समान, जिसमें उन्होंने एक शाश्वत ईश्वर को स्वीकार किया और फिर

इस विशेष देवता (इस मामले में, यीशु) के जीवन के उदाहरणों से यह साबित हुआ कि दोनों थे

एक भी नहीं। उदाहरण के लिए, एक आम तर्क यह था कि यीशु ईश्वरीय नहीं हो सकते क्योंकि

(मिशनरियों के स्वयं के कथनानुसार) उसने कहा कि "यह प्याला उससे दूर हो जाए", रोया

पता चला कि उसे परमेश्वर ने त्याग दिया था, और स्पष्ट रूप से वह सब कुछ नहीं जानता था जो परमेश्वर उसके लिए चाहता था।

पता है (उदाहरण के लिए, कौन उसे धोखा देगा)। [177] लगभग सभी मिशनरी विवरणों में

आर्यों के साथ बातचीत में, वे यीशु की दिव्यता पर सवाल उठाते हैं। ठीक वैसे ही जैसे मिशनरियों ने

आर्यों का मानना है कि हिंदू धर्म के देवता सर्वज्ञ या सर्वशक्तिमान नहीं हैं।

यीशु के व्यक्तित्व के साथ भी ऐसा ही हुआ। चूँकि आर्य समाज "बाहर" प्रभावशाली था

उनके समूह,178 कई मिशनरियों को इन धार्मिक हमलों का सामना करना पड़ा

बार बार.179

प्रोटेस्टेंट और आर्यों के मंत्र थे "बाइबल की ओर लौटो" और "बाइबल की ओर लौटो"।

वेदों को भी पवित्र मानते थे। लेकिन करीब से देखने पर पता चला कि ये समूह अपने पवित्र धर्म का पालन करते थे।

---

[177] वे अक्सर बताते थे कि यीशु को नहीं पता था कि यहूदा उसे धोखा देगा। अगर उसे पता होता, तो वे तर्क देते, वह अपने अनुयायियों को यह नहीं बताता कि किसी दिन इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय बारह प्रेरितों द्वारा किया जाएगा। बी.यू.एल., रेव. ई.एच.एम. वालर, वार्षिक पत्र, 1899, पृष्ठ 529।

[178] बी.यू.एल., रेव. जेनकर, वार्षिक पत्र, 1886, पृ. 39.

[179] उदाहरण के लिए, रेव. बाउमन ने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में लिखा, जिसके बारे में उन्हें नहीं पता था कि वह आर्यों से जुड़ा हुआ है, जिसने यीशु की दिव्यता पर उसी तरह सवाल उठाया था। इस व्यक्ति के अनुसार, क्रूस पर चिल्लाकर, "हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया," वह परमेश्वर से अपनी दूरी साबित कर रहा था। उसने आगे दावा किया कि मिशनरियों के लिए यीशु में शांति की तलाश करना अच्छा नहीं था, क्योंकि वह "अन्य लोगों की तुलना में अधिक दुखी था" और "एक व्यक्ति दूसरों को वह नहीं दे सकता जो उसके पास खुद नहीं है।" बाउमन ने लिखा कि ये "लोगों के वर्ग और आपत्तियों के विशिष्ट उदाहरण थे जिनसे हमें निपटना है।" बीयूएल, रेव. डॉ. सी. बाउमन, वार्षिक पत्र, 1896, पृष्ठ 239।

Machine Translated by Google

धर्मग्रंथ और पाठ को अलग-अलग ढंग से पढ़ा जाना चाहिए। बाइबिल की ऐतिहासिकता ईसाई धर्म और
सीएमएस मिशनरियों। हालाँकि हिंदू धर्म में आम तौर पर सिखाया जाता है कि वेद ही सबसे महत्वपूर्ण हैं
ईश्वर का शाश्वत, शाश्वत वचन। दयानंद ने स्पष्ट किया कि यह उनका विश्वास था।
पाठ के प्रति उनका अलग-अलग दृष्टिकोण इतिहास के प्रति पूरी तरह से भिन्न दृष्टिकोण को दर्शाता है।
एक और समान प्रकाशन, "बाइबल में आत्म-विरोधाभास", मिशनरी को ले जाता प्रतीत होता है
हिंदू पवित्र ग्रंथों की आलोचनाओं को ईसाई धर्मग्रंथों पर लागू करना। इसने एक समान
पुराने नियम का परमेश्वर वह एकमात्र परमेश्वर नहीं है जिसे दोनों पक्ष स्वीकार करते हैं,
लेकिन यह पवित्र धर्मग्रंथों के बारे में हिंदू और ईसाई दृष्टिकोण के एक बड़े सवाल को भी उठाता है।
आर्यों ने अजीब तरह से कहा कि वेद समय के साथ नहीं लिखे गए थे, बल्कि वे तो प्राचीन भारत के थे।
ईश्वर के शाश्वत, कालातीत शब्द और वह सब कुछ जो ऐतिहासिक बात करता प्रतीत होता है
किसी व्यक्ति या इतिहास के किसी समय के बारे में यह कहना पाठक की ओर से किया गया एक ग़लत अनुवाद है।
हिंदू मिशनरी से संतोषजनक जवाब नहीं मिल सका जब उसने बार-बार पूछा
उन्होंने पूछा कि मात्र 1800 वर्ष पहले एक धर्म की शुरुआत कैसे हुई।180 सी.एम.एस. मिशनरियों का मानना था कि
वे दुनिया को ईसा के शासनकाल के लिए तैयार कर रहे थे, लेकिन आर्यों के लिए स्वर्ण युग समाप्त हो चुका था।
पहले ही बीत चुका है। जबकि ईसाई यीशु के लौटने के दिन और एक नए दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे।
धार्मिक रूप से पूर्ण भविष्य की आशा में, आर्यों ने वैदिक स्वर्ण युग की ओर देखा।

दिलचस्प बात यह है कि ऐसे समय में जब भारत में इस बात पर काफी चर्चा हो रही थी कि कितने लोग
उनकी अधिकांश परम्पराएँ स्वदेशी थीं, विशेषकर कृष्ण और भक्ति, [181] लाला लाजपत राय के ए
आर्य समाज का इतिहास मार्टिन लूथर किंग की प्रोटेस्टेंट जीवनी से काफी हद तक उधार लिया गया है।
लूथर. [182] राय ने ब्राह्मणों में व्याप्त भ्रष्टाचार की तुलना रोमन कैथोलिक धर्म के पुजारियों से की,
यह कहते हुए कि दयानंद के समय के ब्राह्मणों ने "मध्ययुगीन पोपों को संवैधानिक" जैसा बना दिया

[180] बी.यू.एल., मिस एच.एम. फोर्ब्स, वार्षिक पत्र, 1900, पृ. 428.
[181] बेलेनोइट, शिक्षा और साम्राज्य, 132-133.
[182] ऐसा लगता है कि यह पुस्तक लिखने में राय के लक्ष्य को पूरा करता है, जो कि इतिहास का एक "पश्चिमी" विवरण प्रदान करना था।
आर्य समाज और अंग्रेजी बोलने वाले दर्शकों के लिए इसका सिद्धांत। राय, आर्य समाज का इतिहास, 1-2।

Machine Translated by Google

राजा।"183 राय के अनुसार, पश्चिम के बारे में कुछ भी जाने बिना, दयानंद

उन्होंने कहा कि ब्राह्मणों की भूमिका प्रोटेस्टेंट मंत्रियों के समान होनी चाहिए।

ज्ञान के क्षेत्र में, रोमन पुजारी की तरह ब्राह्मण का काम वेदों की व्याख्या करना था,

उनका स्थानीय भाषा में अनुवाद करें और उनके ज्ञान को जनसाधारण के सामने प्रस्तुत करें। राय ने अपने उपन्यास में

निष्कर्ष, ईसाई धर्म के प्रति "सक्रिय शत्रुता" के आरोपों को नज़रअंदाज़ नहीं करता है, लेकिन

जोर देकर कहा कि यह आवश्यक था, क्योंकि यह दो "उग्रवादी चर्चों" का सामना कर रहा था, अर्थात्

ईसाई धर्म और इस्लाम.184 भले ही राय ने दयानंद को मार्टिन लूथर के रूप में कास्ट किया था, लेकिन वह एक

यह उस व्यापक वार्तालाप का हिस्सा था जिसमें भारतीयों को अपनी स्वदेशी संस्कृति पर गर्व था।

मैं भारत की नकल करने की कोशिश तो बिल्कुल नहीं कर रहा हूं, लेकिन ब्रिटिशों की नकल करने की कोशिश तो बिल्कुल नहीं कर रहा हूं।

उभरते हुए उद्योगों के बीच दिलचस्प समानताएं और उल्लेखनीय अंतर थे।

"हिंदू" समूह और मिशनरियों के साथ उनका संपर्क। एक ओर, आर्य

समाज ने ईसाई धर्म को बहुत हद तक अस्वीकार कर दिया, और यीशु के व्यक्तित्व पर हमला किया, फिर भी इसके संस्थापक

हिंदू धर्म के मार्टिन लूथर के रूप में जाना जाने लगा और संगठन स्वयं हिंदू धर्म के मार्टिन लूथर को प्रतिबिंबित करता है

लगभग हर तरह से मिशनरी रणनीति का इस्तेमाल किया। समाज केवल इस मायने में "हिंदू" रहा कि

एक बहुत ही निराकार ईश्वरत्व को बनाए रखा और, इस विचार के तहत कि ब्राह्मणों के बजाय

पुजारियों में जाति के बारे में "हिंदू" विचार मौजूद थे। दूसरी ओर, रामकृष्ण मठ

और मिशन ने एक दृष्टिकोण अपनाया जिसमें "पूर्व और" से कुछ सीखने की बात थी

पश्चिम।" मिशनरियों की तरह, संस्थापक विवेकानंद ने एक व्यक्तिगत, प्रेमपूर्ण जीवन की शिक्षा दी।

ईश्वर के साथ संबंध, यीशु की दिव्यता, और कड़ी मेहनत की आध्यात्मिक आवश्यकता

दान। वह प्रगति के विचारों में विश्वास करते थे और अंततः मनुष्य की एकता के बारे में उनके विचार थे।

इस समूह द्वारा ईसाई धर्म और अन्य धर्मों के कई प्रमुख सिद्धांतों को स्वीकार करने से यह एक ऐसा समूह बन गया जिसने ईसाई धर्म और अन्य धर्मों के कई प्रमुख सिद्धांतों को स्वीकार कर लिया।

यह कम "ईसाई" है क्योंकि यह कभी भी धर्मांतरण के लिए जोर नहीं देगा क्योंकि यह सभी धर्मों को समान मानता है

---

183 वही .50.

184 वही. 182.

Machine Translated by Google

समान मूल्य के। विवेकानंद के धर्म के बारे में विचार एक “पत्थर” के रूप में कुछ इस तरह लगते हैं
पूर्ति धर्मशास्त्र, लेकिन ईसाई धर्म (या किसी भी) की ओर मानव जाति के बढ़ने के बजाय
धर्म, उस मामले के लिए), यह व्यक्तिगत के लिए सभी धर्मों को त्यागने की ओर बढ़ रहा था
ईश्वर का अनुभव.

4. रामकृष्ण मठ और मिशन

क्योंकि वे अपनी उत्पत्ति, साधन और लक्ष्य में बहुत भिन्न थे, फिर भी वे एक दूसरे से प्रभावित थे।
वही मिशनरी, रामकृष्ण मठ (मठ) और मिशन के लायक है
आर्य समाज के साथ-साथ अध्ययन करने वाले समूह। इन समूहों में कई प्रमुख विशेषताएँ समान थीं।
उदाहरण के लिए, दोनों का संबंध व्यापक हिंदू परंपरा से था, लेकिन वे स्पष्ट रूप से एक-दूसरे से संबद्ध थे।
भारत में व्यापक मिशनरी उपस्थिति से प्रभावित। दोनों संगठनों के संस्थापक
वे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे जो "हिंदू धर्म" को समझने के लिए आवश्यक हैं
उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के प्रारंभ में यह एक अधिक विकसित रूप में विकसित हुआ।
„धार्मिक“ प्रणाली। मिशनरी उदाहरण से, उन्होंने दोनों ने तरीके और टेम्पलेट्स निकाले
मिशनरी कार्य से धर्म की प्राप्ति और यहां तक कि उठाए गए सैद्धांतिक मुद्दों से भी प्रभावित प्रतीत होते हैं।
फिर भी दोनों ने ईश्वरत्व, पाप और प्रकृति की पारंपरिक रूप से "भारतीय" धारणाओं को बनाए रखा
मोक्ष की प्राप्ति के लिए, लेकिन नए और थोड़े अलग तरीकों से। दोनों ही ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखते थे
वेदों की दिव्य और कालातीत उत्पत्ति, एकल, रहस्यमय ईश्वर की शिथिल धारणा,
और भारत की स्वदेशी धार्मिक परंपराओं की श्रेष्ठता। रामकृष्ण मिशन,
आर्य समाज के विपरीत, निश्चित रूप से धर्मांतरण विरोधी रहे, सिखाया कि कोई धर्मांतरण नहीं था
संसार की आत्मा और व्यक्ति की आत्मा के बीच अंतर समझाया और सिखाया कि
मोक्ष (ईसाई मोक्ष के विपरीत जिसमें व्यक्ति का कुछ तत्व मौजूद होता है
हमेशा के लिए) का अस्तित्व समाप्त हो गया है। समूहों में इस बात पर भी मतभेद था कि आर्य समाज

Machine Translated by Google

ईसाईयों की संपत्ति को कमजोर करने के लिए धर्मांतरण की मिशनरी “रणनीति”

भौगोलिक सीमाएँ हिंदू धर्म के मूल अर्थ के अधिक अनुरूप हैं।185

इसके विपरीत, रामकृष्ण मिशन भौगोलिक दृष्टि से कम जागरूक था।

"धर्म" की अवधारणा को एक रणनीति के रूप में जिसके द्वारा वे "विश्व पर विजय" प्राप्त करने की आशा करते थे

186 रामकृष्ण मिशन के संस्थापक विवेकानंद विश्व में भारत द्वारा स्थापित प्रथम व्यक्ति थे।

हिंदू धर्म को “पश्चिम” ले जाएं। अपनी सार्वभौमिक शिक्षाओं के बावजूद, वह

वह अपने वतन वापस आ गया और अपने मार्ग पर वेदांत मंदिरों की स्थापना की,187 स्पष्ट रूप से

हिंदू धर्म की भौगोलिक समझ से अलग हटकर।

स्वामी विवेकानंद (1863-1702) जिस बात का जिक्र करते थे, उससे वे बहुत जुड़े हुए थे।

"पश्चिम" और औपनिवेशिक परिवेश के रूप में जाना जाता है। उनका जन्म और पालन-पोषण कलकत्ता में हुआ और

वहाँ स्कॉटिश चर्च कॉलेज में पढ़ाई की। कुछ लोगों का तर्क है कि तर्कवाद और

वहां उन्होंने जो सकारात्मकता सीखी, वह कई वर्षों बाद उनकी शिक्षाओं में उभर कर सामने आई।188 यहां तक कि उनके शिक्षण के बाद भी

वह एक अलौकिक रहस्यवादी और अब प्रसिद्ध गुरु, रामकृष्ण के साथ रहते थे।

विश्व की घटनाओं से इस हद तक अवगत कि यह पता था कि विश्व संसद होने वाली थी

1893 में शिकागो में धर्म के प्रति समर्पित हो गए। उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा करने के लिए पर्याप्त धन जुटाया।

एक बड़ी “हिंदू” परंपरा का प्रतिनिधि। दयानंद की तरह, उनका मानना था

दार्शनिक प्रणाली के रूप में हिंदू धर्म की “श्रेष्ठता”। लेकिन दयानंद के विपरीत, उन्होंने ऐसा नहीं किया

यह साबित करने के लिए कि "पश्चिमी" धर्म को अधिक पारंपरिक अर्थ में चुनौती देने का प्रयास करें

---

[185] राय के अनुसार, 1907 से पहले आर्य समाज पर “बाहरी लोगों” का ध्यान नहीं गया था और वास्तव में वे “अपने लोगों के बीच अपना काम जारी रखने और बाहरी दुनिया का ध्यान आकर्षित न करने में संतुष्ट थे।”
राय, आर्य समाज का इतिहास, 1-2. बेशक, इसका मतलब यह नहीं है कि दयानंद हिंदू धर्म को केवल एक भौगोलिक वर्णनकर्ता मानते थे; अपने सत्य के प्रकाश में, उन्होंने सिखाया कि एक भारतीय विदेश जाने से जरूरी नहीं कि अपना “चरित्र” खो दे। स्वामी दयानंद, सत्य का प्रकाश या सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद (नई दिल्ली: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 1975), 315.

[186] जोन्स, सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन, 45.

[187] 2004 तक, “दुनिया भर में” 147 रामकृष्ण मठ और मिशन केंद्र थे। ग्विलिम बेकरलेग, “वेदांत समाजों का प्रारंभिक प्रसार: “आयातित स्थानीयता” का एक उदाहरण” न्यूमेन 51 नंबर 3 (2004), 296।

[188] पॉल हैकर, फिलोलॉजी एंड कॉन्फ़्रंटेशन: पॉल हैकर ऑन ट्रेडिशनल एंड मॉडर्न वेदांत द्वारा संपादित
विल्हेम हेल्बफास, (अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस, 1995), 319.

Machine Translated by Google

ईसाई धर्म का ईश्वर ब्रह्माण्ड का एकमात्र ईश्वर नहीं था, या यह कि यीशु कोई ईश्वर नहीं था।
अवतार। इसके बजाय, उन्होंने इस धारणा को चुनौती दी कि मोक्ष विश्वास या विश्वास का विषय है
सिद्धांत यह है कि सभी पंथ और अनुष्ठान ईश्वर के दर्शन का साधन हैं और
और अधिक कुछ नहीं।

उन्होंने निश्चित रूप से देखा कि कार्य नैतिकता के मामले में यूरोप और अमेरिका का क्या योगदान था,
सामाजिक चेतना और भौतिक कौशल। इन सबके बावजूद, उन्होंने अपने विश्वास को मजबूती से थामे रखा
भारत की आध्यात्मिक श्रेष्ठता। वह "आध्यात्मिक पूर्व" की दृष्टि में विश्वास करते थे और
"भौतिक पश्चिम" और आशा व्यक्त की कि वह दिन आएगा जब दोनों एक बेहतर समाज का निर्माण करेंगे
दुनिया। डॉ. वेल्डन, रेव. जे. जे. जॉनसन के 1900 के पत्र में दर्ज है, ने सिखाया कि जब
"पूर्व का काल्पनिक ज्ञान और पश्चिम का व्यावहारिक ज्ञान- सोफिया और
फ्रोनेसिस" मानव बुद्धि "सर्वोच्च लक्ष्य" को प्राप्त करने में बेहतर सक्षम होगी
सत्य।"189 विवेकानंद ने "पूर्व" और "पश्चिम" के मुद्दे को बहुत अलग ढंग से देखा।
वह पश्चिम से केवल रेलमार्ग, खेल और डाक प्रणाली ही लेना चाहते थे, और हर क्षेत्र में
दूसरे तरीके से दुनिया के बाकी हिस्सों को छात्रों के रूप में एक स्थिति में रखा गया, जिसमें हिंदू थे
असली गुरु। उनकी सभी अंतहीन सहिष्णु और सार्वभौमिक शिक्षाओं, उनके मिशन और
हिंदू धर्म का प्रसार भारत के लिए विश्व विजय का प्रयास बना रहा।190

स्वयं विवेकानंद के चरित्र को समझना अभी भी कठिन है।
विवेकानंद की स्कॉटिश शिक्षा, रहस्यवादी रामकृष्ण के साथ उनका संबंध, उनका समय
विदेश में और विशेष रूप से उनकी स्पष्ट रूप से अतिरंजित लेखन शैली उन्हें कुछ हद तक एक अच्छा लेखक बनाती है।
इतिहासकारों के लिए रहस्यमय चरित्र। जहाँ कुछ लोग, जैसे लियो श्नाइडरमैन, पाते हैं कि

---

[189] बी.यू.एल., रेव. जे.जे. जॉनसन, वार्षिक पत्र, 1900, पृ. 536. यह बात 1914 में पुनः व्यक्त की गई जब डब्ल्यू.जी.
सेसिल ने लिखा कि वे सभी "निश्चित रूप से हमारे विश्व के इतिहास में एक महान बिंदु पर थे, जब पूर्व और पश्चिम एक आम सभ्यता में एक साथ मिल गए।"
सीएमएस इंटेलिजेंसर 1914, 14।

[190] वह भारत के लिए "एक अद्भुत और गौरवशाली भविष्य" की प्रतीक्षा कर रहे थे जिसमें वह "अपने शाश्वत सिंहासन पर विराजमान होगा, कायाकल्प होगा, पहले से कहीं अधिक गौरवशाली होगा।" बी.जी. गोखले, "स्वामी विवेकानंद और भारतीय राष्ट्रवाद" जर्नल ऑफ बाइबल एंड रिलीजन 32 अंक 1 (1964), 38.

Machine Translated by Google

अपनी धार्मिक परंपरा के अस्तित्व के लिए संघर्ष करने वाला ईमानदार व्यक्ति,191 पॉल जैसे अन्य लोग
हैकर, एक उग्र राष्ट्रवादी देखो, [192] जबकि अन्य, जैसे नरसिंह पी. सिल, पाते हैं
अहंकारी, स्वार्थी और धोखेबाज़ स्वामी।193 कारण चाहे जो भी हो,
वह संदेश जो वह "पश्चिम" को सुनाना चाहते थे वह अपेक्षाकृत स्पष्ट है: सभी धर्म समान हैं
कि वे, अपने सर्वोत्तम रूप में, ईश्वर के साथ संबंध स्थापित करते हैं - लेकिन वेदान्तवाद श्रेष्ठ है
इसके ज्ञान के लिए। इस तरह, यह पूर्ति के समान उल्लेखनीय लगता है
धर्मशास्त्र, लेकिन इसमें अंतर यह है कि मिशनरियों का मानना था कि पूरी दुनिया बढ़ रही थी
यीशु में विश्वास के माध्यम से मोक्ष की ओर, जबकि विवेकानंद ने सिखाया कि दुनिया
सभी धर्मों के प्रति प्रशंसा की भावना बढ़ रही थी, यह अहसास कि वे सभी एक ही लक्ष्य की ओर ले जाते हैं।
एक ही ईश्वर है। उनके अनुसार, वेदांतवाद श्रेष्ठ है क्योंकि इसने किसी भी अन्य धर्म से पहले इस बात को समझ लिया था।
अन्य परंपरा.

रामकृष्ण मिशन और सीएमएस मिशनरियों के बीच बातचीत

आर्य समाज और सीएमएस के बीच की बातचीत की प्रकृति से बहुत अलग
मिशनरी। आर्य समाज के सदस्यों के विपरीत, रामकृष्ण मिशन के सदस्य
बाज़ार में मिशनरियों का आक्रामक विरोध नहीं किया, या उनके लिए स्कूल और छात्रावास नहीं बनवाए
ईसाई धर्म में धर्मांतरित लोगों को “वापस चुराना” ही इसका एकमात्र उद्देश्य है। कभी-कभी, उन्हें
उन्हें भारतीय से अधिक यूरोपीय और केवल इसलिए "ईसाई विरोधी" कहकर खारिज कर दिया गया क्योंकि वे
"ब्रिटिश विरोधी" थे। उदाहरण के लिए, एई जॉनसन ने 1911 के सीएमएस इंटेलिजेंसर में लिखा था
कि “स्वयंभू विवेकानंद” अपने देश से ज़्यादा यूरोप से प्रेरित थे
धार्मिक परंपरा, इस तथ्य का हवाला देते हुए कि हिंदू धर्म पारंपरिक रूप से ब्राह्मणों को

---

[191] लियो श्राइडरमैन, “धार्मिक आंदोलन के विकास में व्यक्तित्व और सामाजिक कारक” जर्नल फॉर द साइंटिफिक स्टडी ऑफ रिलिजन 8 नंबर 1 (1969), 71.

192पॉल हैकर, फिलोलोजी एंड कंफ़्रंटेशन: पॉल हैकर ऑन ट्रेडिशनल एंड मॉडर्न वेदांत, विल्हेम हेल्बफ़ास द्वारा संपादित, (अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस, 1995), 324. गोखले ने उन्हें “हिंदू राष्ट्रवाद की पूर्णता कहा, जैसा कि 1875 से विकसित होना शुरू हुआ था।” बी.जी. गोखले, “स्वामी विवेकानंद और भारतीय राष्ट्रवाद” जर्नल ऑफ़ बाइबल एंड रिलीजन 32 नंबर 1 (1964), 41.

[193] नरसिंह पी. सिल की पुस्तक ‘विवेकानंद के रामकृष्ण: मिथक निर्माण की एक अनकही कहानी’ में शीर्षक ही सब कुछ कह देता है।
एवं प्रचार-प्रसार” संख्या 40 नं. 1 (1993), 38-62.

Machine Translated by Google

वे धार्मिक गुरु थे और विवेकानंद कायस्थ (एक लेखक जाति) थे।194

मिशनरी ने अनुमान लगाया कि शायद यह उनका अपना प्रभाव था जिसने इसे जन्म दिया

रामकृष्ण मिशन का दान के प्रति समर्पण।195 निःसंदेह, मिशनरी के

वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि, "राम कृष्ण सेवा गृह"

आंदोलन" में जाति, नस्ल या धर्म की परवाह किए बिना सभी को शामिल किया गया। हालाँकि, विवेकानंद के

दान-पुण्य के प्रति उत्साह को अब एक बड़े रुझान के हिस्से के रूप में देखा जाता है196 और संभवतः इससे प्रभावित भी

अमेरिका में बिताए गए समय के दौरान रामकृष्ण मिशन को संदेह की दृष्टि से देखा जाता था।

भारतीय आत्माओं के संघर्ष में मिशनरियों और समाज के साथ प्रतिस्पर्धी।

मिशनरी ने चेतावनी दी कि सभी भारतीय आंदोलनों को “सुधारना, संशोधित करना और फिर से सुधारना”

इसे "गंभीर विचारणीय तत्व" का हिस्सा होना चाहिए क्योंकि वे आत्माओं को छीनने की संभावना रखते थे

जो मूर्तिपूजा के अंधविश्वास से जाग गए थे और "उन्हें बिना किसी भय के मुक्ति का वादा करते थे

मसीह।”198

दयानंद की तरह विवेकानंद ने भी धर्म के मिशनरी स्वरूप को अपनाया और

ईसाई धर्म में कुछ प्रमुख व्यक्ति के रूप में भारतीयों को शामिल किया गया है। जबकि लाला लाजपत राय (1865-

1928) ने दयानंद को हिंदू धर्म का मार्टिन लूथर लिखा, विवेकानंद ने उन्हें हिंदू धर्म का मार्टिन लूथर बनाया।

उन्होंने अपने गुरु रामकृष्ण को मसीहा के रूप में स्थापित कर दिया। वे इस आंदोलन के संत पॉल बन गए।

ऐसा लगता है कि उन्होंने अपने गुरु को अपने गुरु से जोड़कर पश्चिम में वैधता स्थापित करने का प्रयास किया।

---

194 सीएमएस इंटेलीजेंसर 1911, पृ. 524-525.

195 "मेरा विश्वास करो, यह एक बहुत बड़ा बदलाव है। कुछ साल पहले कोई भी उंगली नहीं हिलाता था- वे क्यों हिलाएँ?
जब कोई व्यक्ति गरीब या अंधा पैदा होता है, या जब दुर्भाग्य उस पर हावी हो जाता है, तो वह केवल अपने पूर्व जन्म के दुष्कर्मों का ही फल भोग रहा होता है, और फिर कोई अन्य व्यक्ति क्यों हस्तक्षेप करके ईश्वर को मनुष्य को उसका उचित प्रतिफल देने से रोकेगा?
हालाँकि, धीरे-धीरे ईसाई आदर्श भारत में व्याप्त हो रहा है - आप इसे हर जगह देखते हैं।” सीएमएस इंटेलिजेंसर 1909, 151।

196 उदाहरण के लिए, वाट ने लिखा कि "बीसवीं सदी की शुरुआत में उत्तर भारतीय सामाजिक सेवा और संघ संबंधी पहलों ने गतिशील और गहरी जड़ें जमाए हुए "जीवित परंपराओं" पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि संगठित परोपकार और नागरिक शास्त्र के क्षेत्र में समकालीन भारतीय सामाजिक चिंताओं और वैश्विक विकास से भी प्रभावित थे। पश्चिमी औपनिवेशिक आधुनिकता और उसके प्रवचनों के प्रभाव से इनकार नहीं किया जाता है, लेकिन इसे कई प्रभावों में से एक के रूप में देखा जाता है।" कैरी एंथनी वाट, सर्विंग द नेशन: कल्चर्स ऑफ सर्विस, एसोसिएशन, एंड सिटिज़नशिप इन कोलोनियल इंडिया (ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005), 13।

197 जोन्स, सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन, 43-44.

198 सीएमएस इंटेलिजेन्सर 1892, 331.

Machine Translated by Google

ईश्वर के दर्शन को ईसाई धर्म के पात्रों के दर्शन से जोड़कर देखा जा सकता है। उनका कहना है कि ईसा मसीह ने इसे बुलाया था
ईश्वर को "पिता", संत पॉल ने ईश्वर को "मसीह" कहा, और रामकृष्ण ने ईश्वर को "माता" कहा।199
यह जानबूझकर किया गया था। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि उनका मानना है कि हर कोई इस बारे में बात कर रहा था
एक ही ईश्वर, बस अलग-अलग नामों से। रामकृष्ण को मसीह के रूप में देखने का यह विचार गलत था।
इस शिक्षा को और भी आगे ले जाया गया कि रामकृष्ण भी ईश्वर के समान रूप से संपर्क में थे, लेकिन
यह और भी अधिक वैध था क्योंकि उनके अनुयायियों के पास कहानियाँ गढ़ने के लिए दो सहस्राब्दी नहीं थी
उनके बारे में और उनके संदेश को धुंधला कर दिया। वह आधुनिक दुनिया की जांच के दायरे में थे, क्योंकि
स्वामी निखिलानंद ने लिखा, उनके शब्द "विश्व में पहले सीधे दर्ज किए गए शब्द थे,
विश्व का आध्यात्मिक इतिहास, एक ऐसे व्यक्ति का जिसे बुद्ध की श्रेणी से संबंधित माना जाता है
और मसीह।" [200]

यीशु के व्यक्तित्व के प्रति विवेकानंद के व्यवहार से एक महत्वपूर्ण अंतर का पता चलता है
आर्य समाज और ईश्वरत्व की प्रकृति के बारे में एक बहुत ही हिंदू समझ।
ब्रह्म समाज किसी की दिव्यता में विश्वास नहीं करता था, आर्य समाज किसी की दिव्यता में विश्वास नहीं करता था,
यीशु की दिव्यता जबकि रामकृष्ण मठ और मिशन ने दिव्यता की शिक्षा दी
हर कोई। मिशनरी स्कूलों के छात्रों की तरह जो यीशु के व्यक्तित्व को शिथिल रूप से मानते थे
रामकृष्ण मिशन ने पाया कि आत्म-बलिदान और बुद्धिमत्तापूर्ण शिक्षण का एक उदाहरण होना चाहिए
सुसमाचारों में सार्थक ज्ञान है। विवेकानंद ने आगे बढ़कर सिखाया कि यीशु
ईश्वर का अवतार, हर तरह से उतना ही दिव्य जितना ईसाईयों ने सिखाया है। फिर भी, वह नहीं करता
यीशु को इस देवत्व पर कोई विशेष अधिकार नहीं है। यह उनके संदेश का मुख्य बिंदु है कि
परमेश्वर के साथ एकता का यह स्तर किसी एक व्यक्ति या समय तक सीमित नहीं था।

---

[199] डी.एस. शर्मा, "श्री रामकृष्ण परमहंस का अनुभव" जर्नल ऑफ रिलीजन 7 अंक 2 (1927), 190.

[200] कार्ल ई. पुरिंटन, स्वामी निखिलानंद द्वारा रचित रामकृष्ण: भारत के पैगंबर की समीक्षा , जर्नल ऑफ बाइबल और धर्म 17 नंबर 1 (1949), 68.

Machine Translated by Google

विवेकानंद के लिए, मानवजाति और ईश्वर के बीच इस मिलन में ईश्वर के लिए कोई स्थान नहीं था।
भेद। यह कट्टर अद्वैतवादी (अद्वैत) था। एक बार भौतिक दुनिया से मुक्त हो जाने के बाद,
व्यक्तित्व और वैयक्तिकता पूरी तरह से खो जाएगी। तब, "मुक्ति" कुछ भी नहीं थी
एक व्यक्ति के रूप में हमेशा के लिए अस्तित्व में रहने का ईसाई विचार, यह विपरीत था, अस्तित्व समाप्त हो जाना
एक व्यक्ति के रूप में बिल्कुल भी नहीं। 1896 में हार्वर्ड में दिए गए एक भाषण में, उन्होंने अपने श्रोताओं को समझाया कि उनका
"गैर-द्वैतवादी या अद्वैत" दृष्टिकोण, जिसे वह "द्वैतवादी या" से विकसित होते हुए देखता है
द्वैत" दृष्टिकोण। विवेकानंद के अनुसार, प्रत्येक प्राणी में ईश्वरत्व का अंश निहित है
और अंतिम लक्ष्य स्वतंत्रता या मोक्ष, आत्मा की मुक्ति है।
रामकृष्ण और उनके तात्कालिक शिष्यों के साथ बिताए गए दिन, जो एक खोज पर थे
पुनर्जन्म के चक्र से बच निकलने के लिए। रामकृष्ण को संभवतः बड़े संसार के बारे में बहुत कम जानकारी थी।
दुनिया, अपने तत्काल क्षेत्र के बाहर के जीवन के बारे में, और इसलिए, उसकी "आसान सहनशीलता", जैसे
किसी भी पृथक हिंदू की विचारधारा को अधिक सूक्ष्म सार्वभौमिकता के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।
हालाँकि, उन्होंने निश्चित रूप से किसी भी उपयोगी तकनीक का उपयोग करके एक स्तर तक पहुँचने के मूल्य को देखा।
अपने एक, सार्वभौमिक, ईश्वर के साथ समझ।

विवेकानंद के पाप संबंधी विचार आर्य समाज से इस दृष्टि से भिन्न थे कि जो आर्य पाप करते थे, वे पाप करते थे।
मिशनरियों से बातचीत की और बताया कि नैतिक संहिता का सख्ती से पालन करने से वे
वे पाप से उबर सकते हैं और उसे खुद से दूर कर सकते हैं। विवेकानंद,
हालाँकि, यह सिखाया गया है कि जिसे हम "बुरा" मानते हैं, जरूरी नहीं कि वह वास्तव में "बुरा" हो।
उदाहरण के लिए, एक आदमी बाघ से भाग सकता है, लेकिन बाघ बुरा नहीं हो सकता, क्योंकि वह दुष्टता का हिस्सा है।
एक ही ईश्वर का. [201] सरमा ने रामकृष्ण को उद्धृत करते हुए कहा, "बुराई ईश्वर में विष के रूप में विद्यमान है
एक साँप में। जो हमारे लिए ज़हर है, वह साँप के लिए ज़हर नहीं है, बल्कि एक प्राकृतिक स्राव है।

[201] स्वामी विवेकानंद, वेदांत दर्शन: ग्रेजुएट फिलॉसॉफिकल सोसाइटी के समक्ष एक संबोधन
हार्वर्ड विश्वविद्यालय, 25 मार्च, 1896 (न्यूयॉर्क: द वेदांत सोसाइटी, 1901), 18.

Machine Translated by Google

साँप अपने स्राव से नहीं मरता।”202 यह मनुष्य के बारे में उनके दृष्टिकोण को दर्शाता है, जो
मिशनरी दृष्टिकोण से बहुत अलग था। मिशनरियों के साथ रहने वाले हिंदुओं की तरह
और मिशनरियों द्वारा सिखाए गए "पतन" के विचार को कभी नहीं समझा,
पतन आर्य समाज या रामकृष्ण परमहंस की धार्मिक शिक्षाओं से मेल नहीं खाता।
मठ और मिशन। आर्य समाज नियमित रूप से मिशनरियों को ऐसे आयोजनों के लिए परेशान करता था
एक विश्वास, जबकि विवेकानंद ने सिखाया कि हम भौतिक दुनिया से बंधे हैं, लेकिन
इसका न तो स्पष्टीकरण उपलब्ध है और न ही यह तर्कसंगत है।

फिर भी विवेकानंद ने शिक्षा देने में धर्म के पश्चिमी ढांचे को भी तोड़ा
वह सिद्धांत "धर्म" के लिए आवश्यक नहीं है, बल्कि केवल एक उपकरण के रूप में महत्वपूर्ण है
ईश्वर की समझ। यह विचार कि ईश्वर के चिंतन के अलावा कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है,
रामकृष्ण की शिक्षाओं के बारे में हम जो जानते हैं, उससे यह बात स्पष्ट है। रामकृष्ण की तरह विवेकानंद भी
हमेशा यही सिखाया कि ईश्वर के दर्शन ही वह सब है जिसकी कोई उम्मीद कर सकता है। हालाँकि, उन्होंने इस धारणा को तोड़ दिया
अपने शिक्षक को दूसरों को यह शिक्षा देने में मदद की कि सामाजिक और धर्मार्थ सेवा आत्मा को मुक्त कर सकती है।
इसका प्रमाण रामकृष्ण की मृत्युशय्या पर देखा जा सकता है, जब विवेकानंद ने लड़कों से कहा था
नृत्य के बजाय स्वच्छता को प्राथमिकता दें। वह भारतीय विचार को बनाए रखते हैं कि आप जो "विश्वास" करते हैं वह वास्तव में नहीं है
ईश्वर के दर्शन की चाहत जितनी ही महत्वपूर्ण है। वास्तव में, हिंदुओं में से एक
मिशनरियों से मुलाकात हुई, जो लगातार विवेकानंद की प्रशंसा करते थे और उन्हें उद्धृत करते थे,
उन्होंने कभी भी सही चीजें खाने और पीने की इच्छा नहीं छोड़ी।203 जब विवेकानंद आए
शिकागो में ईसाइयों से कहा कि वे ईसाई बने रहें, ऐसा लगता है कि वे बात कर रहे थे
अपने ही लोगों से कहा कि वे हिंदू बने रहें। स्पष्ट रूप से, यह “धार्मिक” सिद्धांत
सीएमएस मिशनरियों से नहीं लिया गया, जिनका मानना था कि मोक्ष अंततः एक मामला था
सही बात पर विश्वास करना। वास्तव में, जॉर्ज एन्सर ने 1893 के सी.एम.एस. में एक लेख लिखा था

---

[202] सरमा, “श्री रामकृष्ण परमहंस का अनुभव,” 202.
[203] बी.यू.एल., रेव. ई.पी. हर्बर्ट, वार्षिक पत्र, 1897, पृ. 373.

Machine Translated by Google

इंटेलिजेंसर में छपी एक रिपोर्ट में वे इस बात से नाराज दिखे कि किसी ने ईसाइयों को यह सुझाव दिया है कि
"सहिष्णुता" की किसी भी परंपरा से नहीं आया। उनका लेख मैक्स मुलर के जवाब में था
"मानवशास्त्रीय धर्म" जिसमें, एन्सर के अनुसार, बहुत सारे "शक्तिशाली लोग" थे
ईसाई धर्म के बचाव में "तर्क" दिए जा सकते हैं, लेकिन मुलर के लिए उन्हें अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए
यह दावा कि "सहिष्णुता" "ईसाई धर्म की प्रकृति में निहित है।"
एन्सर ने कहा, "चर्च के धर्म में ऐसी कोई सहिष्णुता नहीं थी।" उन्होंने रंगीन ढंग से कहा
पुराने नियम के यहूदी पात्रों से शुरू करते हुए, जिनके बारे में वादा किया गया था, वर्णन करें
ईश्वर द्वारा, कि असहिष्णुता का बचाव "सर्वोच्च सिद्धांत की अभिव्यक्ति थी
धार्मिकता।"204 स्पष्ट रूप से, विवेकानंद की "सहिष्णुता" शायद इसी के समान दिखती थी
पूर्ति धर्मशास्त्र, लेकिन यह कुछ ऐसा नहीं था जो उसने लोगों के साथ बातचीत से सीखा था
मिशनरियों। उनकी शिक्षाएं उस हिंदू महिला से अधिक मिलती-जुलती लगती थीं जो
मिस वर्थिंगटन से कहा कि उन्हें समझ नहीं आ रहा कि उन्हें धर्म परिवर्तन क्यों करना चाहिए, उन्होंने कहा, "मिस
साहब, आपका धर्म हमारे लिए अच्छा है और हमारा धर्म हमारे लिए अच्छा है।''205

विवेकानंद ने भारत को पश्चिम, विशेषकर यूरोप, की तुलना में अधिक धार्मिक बताया।
संयुक्त राज्य अमेरिका में जाति व्यवस्था को बेहतर सामाजिक संरचना बताकर उसका बचाव किया गया है।
अमेरिका में "डॉलर के बैग" के लिए आधुनिक होड़ को कहा जाता है ।206 हालांकि चिंता की बात यह है कि
भविष्य की दुनिया में भारत के स्थान के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि उन्हें स्पष्ट रूप से इस बात से कोई खतरा नहीं है कि वे क्या सोचते हैं।
"पश्चिमी" धर्म, जिसका मतलब ईसाई धर्म से था। उन्होंने पश्चिम को ईसाई धर्म के रूप में देखा।
दुनिया में सूचना फैलाने के साधन तो हैं, लेकिन वास्तव में फैलाने के लिए बहुत कम सूचना है।
यह सिखाते हुए कि ईश्वर का चिंतन सबसे महत्वपूर्ण है, उन्होंने बताया कि कितना कम
समय आमतौर पर कार्य पर खर्च किया जाता था। दिलचस्प बात यह है कि मिशनरी पत्र और विवेकानंद
भाषणों से पता चलता है कि दोनों पक्षों ने एक ही बात के लिए एक दूसरे की आलोचना की। विवेकानंद बताते हैं

---

[204] सीएमएस इंटेलीजेंसर 1893,491.
[205] बी.यू.एल., मिस ई. वर्थिंगटन, वार्षिक पत्र, 1903, पृ. 437.
[206] विवेकानंद, वेदांत दर्शन, 26.

Machine Translated by Google

अमेरिका में हर कोई सरकार की प्रणाली जानता था, लेकिन कुछ भी नहीं जानता था

धर्म के बारे में लोगों को बहुत कुछ पता है, सिवाय इसके कि वे "चर्च जाते हैं।" उन्होंने दावा किया कि भारत में लोग धर्म के बारे में बहुत कुछ जानते हैं।

धर्म के प्रति सम्मान और सरकार के प्रति सम्मान के बारे में बस इतना ही कहें कि, "मैं कर चुकाता हूँ।"207

अपने समय में, उन्होंने लगातार दावा किया कि दुनिया आध्यात्मिक पूर्व और से बनी है

भौतिक पश्चिम। जैसा कि एक मिशनरी ने बताया, यह एक त्रुटिपूर्ण बयान था, स्पष्ट रूप से, क्योंकि

भारत में उन हजारों कॉलेज स्नातकों के साथ तुलना करने के लिए कुछ भी नहीं है जो अपने जीवन को समर्पित करते हैं।

अपने ईश्वर के लिए कष्ट और बीमारी का जीवन जीना पड़ता है। मिशनरी अक्सर

बिल्कुल विपरीत बात कही। उदाहरण के लिए, एचबी डुरंट ने लिखा कि उन्हें लगता है कि भारत

ईसाई धर्म के क्रूर विरोधी, या "भूखे और असंतुष्ट साधक" होने जा रहे थे

सत्य के बाद," लेकिन यह जानकर निराशा हुई कि, अंग्रेजी कॉलेज के छात्रों की तरह, "

प्रचलित रवैया धार्मिक मामलों के प्रति तुलनात्मक रूप से उदासीनता का है।"208

उनके बचे हुए शब्दों का बारीकी से अध्ययन करने पर पता चलता है कि विवेकानंद

दुनिया की कई पारंपरिक हिंदू अवधारणाओं को बनाए रखा, शायद उससे भी अधिक

आर्य समाज की तुलना में, उन्होंने स्पष्ट रूप से मिशनरी टेम्पलेट का अच्छा उपयोग किया और

धर्म के मिशनरी तरीके। रामकृष्ण मिशन निश्चित रूप से इसका एक हिस्सा था

हिंदू धर्म की बढ़ती 'धार्मिकता' के बारे में विवेकानंद कई तरह की शंकाओं से बचने में सफल रहे।

भारत में ईसाइयों द्वारा निर्धारित मापदण्ड

5। उपसंहार

इस पेपर में सीएमएस मिशनरियों के बीच मुठभेड़ को चित्रित करने का प्रयास किया गया है

और उत्तर भारत में आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन। इसने प्रयास किया है

---

207 वही. 16.

208 बी.यू.एल., रेव. एच.बी. डुरंट, वार्षिक पत्र, 1911, पृ. 149.

Machine Translated by Google

इससे पता चलता है कि यद्यपि इन अंतर्क्रियाओं में मिशनरियों का दबदबा था,

बहस के मानदंड बड़े पैमाने पर तय किए गए, भारतीयों ने नई अवधारणाओं या विचारों को नहीं अपनाया

बिना उन्हें पहले एक बड़े भारतीय परंपरा में ढाले और फिट किए। कई मामलों में

उदाहरण के लिए, मिशनरी और भारतीय वास्तव में विचारों का आदान-प्रदान भी नहीं कर रहे थे।

ईश्वरत्व, पाप और मोक्ष की प्रकृति की अवधारणाएँ अक्सर इतनी भिन्न होती थीं कि उन्हें समझना कठिन होता था।

वास्तविक, सार्थक बातचीत की अनुमति दें।

चूँकि सी.एम.एस. मिशनरी किसी को बपतिस्मा देने से डरते थे, इसलिए

इसके तुरंत बाद चले गए, वे अपने इस आग्रह पर कभी नहीं डगमगाए कि प्रत्येक कैटेच्युमेन एक हो

बपतिस्मा से पहले "दिल से ईसाई"। इसका मतलब था कि मिशनरियों के पास अनगिनत अमीर लोग थे

इन भारतीयों के साथ बातचीत। और इन पत्रों को ध्यान से पढ़ने से पता चलता है कि,

कभी-कभी, मिशनरी और हिंदू कुछ मुद्दों पर संपर्क स्थापित करने में सक्षम होते थे।

एक ही देवता की पूजा करना: यीशु का व्यक्तित्व। हालाँकि, कई अन्य उदाहरणों में, वे

एक दूसरे को पूरी तरह से भूल गये।

इस शोधपत्र में यह भी पाया गया कि ब्रिटिश शासन के तहत भारतीयों ने बिना सोचे-समझे ब्रिटिशों की नकल नहीं की।

विदेशी विचार। यहां तक कि जब उन्होंने मिशनरी टेम्पलेट्स और धर्म के रूपों को अपनाया,

भारतीयों ने उन्हें पारंपरिक भारतीय समझ में फिट कर दिया। जब दयानंद ने एक आविष्कार किया

बपतिस्मा की तर्ज पर धर्मांतरण अनुष्ठान, यह जाति और धर्म की धारणाओं से रंगा हुआ था

समूह पहचान व्यक्तिगत आस्था के कार्य से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। जब रामकृष्ण ने शिक्षा दी

ईश्वर का चिंतन, उन्होंने ऐसा इस तरह से किया कि अभी भी यह विचार कायम था कि ईश्वर की आत्मा

प्रत्येक मनुष्य और ईश्वर की आत्मा एक ही थे। और किसी भी समूह ने कभी भी ईश्वर की आत्मा को स्वीकार नहीं किया।

मिशनरी विचार है कि "विश्वास" का कार्य किसी भी प्रकार के उद्धार की ओर ले जा सकता है।

रामकृष्ण मिशन ने यह शिक्षा दी कि ईश्वर का "ज्ञान" या "दर्शन" ही अंतिम लक्ष्य है।

प्रत्येक आस्था का लक्ष्य क्या है, यह कभी नहीं सिखाया गया कि इसे मात्र विश्वास के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

Machine Translated by Google

दोनों तरफ़, लोग ईश्वर, स्वयं और व्यापक विश्व के बारे में अपनी धारणाओं से जूझ रहे थे।
दुनिया। विवेकानंद की शिक्षाएँ निस्संदेह पूर्णता के समान ही दिखती हैं
धर्मशास्त्र। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह नकल थी। बड़ी दुनिया से मिलते हुए, और
लोगों के आश्चर्यजनक रूप से अलग-अलग समूह, मिशनरी और "प्रथम हिंदू मिशनरी" दोनों
संपूर्ण मानव जाति के चरित्रों को एक बहुत बड़ी कहानी में लिखा गया। मिशनरियों के लिए, सभी
हिंदू शिक्षाओं में भी यीशु की आवश्यकता की ओर उसी तरह इशारा किया गया है, जिस तरह पुराने नियम में किया गया था।
विवेकानंद की शिक्षा में, सभी धर्मों ने सफलता के लिए कदम बढ़ाए।
कुछ बड़ा- ईश्वर का दर्शन। ठीक वैसे ही जैसे मिशनरियों ने अपने चेहरे रंगे थे
अपने एकमात्र पवित्र ग्रंथ की कहानियों में, विवेकानंद ने सिखाया कि ईश्वर का अनुभव
यह किसी एक समय या स्थान तक सीमित नहीं था, बल्कि सभी के लिए उपलब्ध था। आर्य समाज के विपरीत,
जिन्होंने यह साबित करके अपने विश्वास का बचाव करने की कोशिश की थी कि यीशु अवतार नहीं थे,
रामकृष्ण मिशन का मानना था कि यीशु एक अवतार थे, जैसा कि स्वयं रामकृष्ण भी मानते थे।
साथ ही ईश्वर के प्रति सचेत लोगों की संभावित अनंत संख्या भी।

यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि सीएमएस मिशनरी और सदस्य दोनों
रामकृष्ण मिशन ईश्वर के साथ व्यक्तिगत, प्रेमपूर्ण संबंध बनाना सिखाता है। यह संदेश
ऐसा लगता है कि यह प्रत्येक समूह द्वारा दूसरे की सबसे कठोर आलोचना से संबंधित है। मिशनरी में
विवरणों में, हिंदुओं को बड़े पैमाने पर "अधार्मिक"209 या केवल उपासक के रूप में चित्रित किया गया था
"शक्ति", चाहे वह प्राकृतिक हो, अलौकिक हो या मानव निर्मित हो। विवेकानंद ने "पश्चिम" का वर्णन किया
उसी तरह, एक समाज के रूप में जो तरीकों का आविष्कार और पुनर्आविष्कार करने में अधिक चिंतित है
अधिक जानकारी तेजी से प्रसारित करें, लेकिन किसी भी तरह की चिंता न करें
भेजने लायक जानकारी। विवेकानंद के लिए, यह "पश्चिम" था जो अधार्मिक था। यह

[209] उदाहरण के लिए, मिस लूस ने 1897 में लिखा था कि "उनकी मानसिक और आध्यात्मिक क्षमता (कोई इसे आध्यात्मिक चेतना भी कह सकता है) इतने लंबे समय से निष्क्रिय रही है कि उन्हें यह एहसास दिलाना लगभग असंभव लगता है कि इस जीवन में आपके दैनिक कार्य करने, खाने और सोने के अलावा भी कुछ है या हो सकता है।"
बी.यू.एल., मिस ई.ए. लूस, वार्षिक पत्र, 1897, पृ. 120.

Machine Translated by Google

ऐसा लगता है कि इन समूहों के बीच बातचीत ने इस बात की बड़ी बातचीत में योगदान दिया कि
धर्म क्या है, पवित्र क्या है और अपवित्र क्या है। शुरू में भारतीयों ने मिशनरियों को बताया
उनका "दान" कोई पवित्र कार्य नहीं था, बल्कि विडंबना यह है कि यह एक अंग्रेज की कर्तव्य भावना थी।
इसी प्रकार, सीएमएस मिशनरी यह तय नहीं कर सके कि जाति एक सामाजिक संस्था है या नहीं।
धार्मिक। एक दूसरे को प्रश्नवाचक दृष्टि से देखने, एक दूसरे के पवित्र ग्रंथ को पढ़ने के बाद,
बातचीत में शामिल होकर, वे धीरे-धीरे इस सवाल का जवाब देने लगते हैं कि पवित्र क्या है
बस, हर चीज़ के साथ। मिशनरी के लिए, सबसे तुच्छ कार्य भी पवित्र हो जाता है
अवतार, और विवेकानंद के लिए, फुटबॉल से लेकर रेलमार्ग बनाने तक कोई भी कार्य संभव था
पवित्रता इस हद तक है कि यह प्रत्येक व्यक्ति को उसकी अपनी पवित्रता का बोध करा सके।
यहाँ, यह स्पष्ट था कि सीएमएस मिशनरी और आर्य और रामकृष्ण प्राप्त कर सकते थे
वास्तविक संवाद के लिए बहुत कम जगह है।

अंततः, इस पत्र में सुझाव दिया गया है कि सीएमएस मिशनरियों और उत्तर भारत के हिंदुओं
भारत ने ईश्वरत्व, पाप और पाप के बारे में एक दूसरे से बिल्कुल अलग-अलग दृष्टिकोण अपनाए।
मोक्ष। दुनिया की इन विभिन्न अवधारणाओं ने वास्तविक मोक्ष को कठिन बना दिया
धार्मिक संवाद होना चाहिए। हालाँकि वे नियमित रूप से बातचीत करते थे, लेकिन बातचीत में वे
अक्सर एक दूसरे को पूरी तरह से भूल जाते थे। कुछ मामलों में वे एक दूसरे से कुछ समय के लिए जुड़ पाते थे।
आर्य समाज और रामकृष्ण मठ और मिशन से पता चलता है कि भारतीयों ने
ईसाई धर्म को लेकर उसमें हिंदू वर्ण न डालें। हो सकता है कि उन्होंने ईसाई धर्म से कुछ उधार लिया हो
धर्म के मिशनरी रूप, धर्मांतरण और धर्मांतरण के तरीके और यहां तक कि
विदेश जाने का विचार उनके मन में नहीं था, लेकिन उन्होंने हमेशा एक बड़ी भारतीय परंपरा के हिस्से के रूप में काम किया,
ईश्वरत्व, पाप और मोक्ष की हिंदू अवधारणाओं को बनाए रखना।
हिंदू धर्म की विकासशील 'धार्मिकता' के बारे में, ऐसा लगता है कि इन दोनों समूहों ने
सीएमएस धर्म के मिशनरी रूपों को अपनाएं, जैसे कि शुद्धि का पुनः आविष्कार या

Machine Translated by Google

पर्चे में उन्होंने ईश्वरत्व, मोक्ष और अन्य की पारंपरिक हिंदू अवधारणाओं को बनाए रखा।

पाप.

Machine Translated by Google

ग्रन्थसूची

सीएमएस इंटेलीजेंसर 1869-1923

चर्च मिशनरी सोसाइटी अभिलेखागार, वार्षिक पत्र, G2 / I4 / O, 1886- 1912, बर्मिंघम विश्वविद्यालय पुस्तकालय, यूके।

मुद्रित प्राथमिक स्रोत

हॉलैंड, डब्ल्यू.ई.एस. द इंडियन आउटलुक: ए स्टडी इन द वे ऑफ सर्विस. लंदन: एडिनबर्ग हाउस प्रेस, 1927.

जॉन विलियम केय, सर. भारत में ईसाई धर्म: एक ऐतिहासिक कथा. लंदन: स्मिथ,
एल्डर, 1859.

लिलिंगस्टन, फ्रैंक. ब्रह्मो समाज और आर्य समाज का उनके प्रभाव पर प्रभाव
ईसाई धर्म; भारतीय ईश्वरवाद पर एक अध्ययन। न्यूयॉर्क: द मैकमिलन कंपनी, 1901.

रामकृष्ण। श्री रामकृष्ण का सुसमाचार अनुवादक एवं संपादक स्वामी निखिलानंद। नया
York: Ramakrishna-Vivekananda Center, 1973.

राय, लाजपत. आर्य समाज का इतिहास: इसकी उत्पत्ति, सिद्धांत और परंपरा का लेखा-जोखा
संस्थापक की जीवनी संबंधी रूपरेखा के साथ गतिविधियाँ, श्री राम शर्मा द्वारा संशोधित, विस्तारित और संपादित। नई दिल्ली:
सर्वेंट्स ऑफ़ द पीपल सोसाइटी, 1992।

राय, लाजपत. यंग इंडिया: एन इंटरप्रिटेशन एंड ए हिस्ट्री ऑफ द नेशनलिस्ट मूवमेंट फ्रॉम विदिन. न्यूयॉर्क: हॉवर्ड फ़र्टिग, 1968.

सरस्वती, दयानंद. सत्य का प्रकाश; या सत्यार्थ का अंग्रेजी अनुवाद
प्रकाश, चिरंजीव भारद्वाज द्वारा अनुवादित। इलाहाबाद: के.सी. भल्ला, द स्टार प्रेस, 1915।

विवेकानन्द, स्वामी. स्वामी विवेकानन्द स्वयं पर। उत्तरांचल: अद्वैत आश्रम,
2006.

विवेकानंद, स्वामी. वेदांत दर्शन: स्नातक के समक्ष एक संबोधन
हार्वर्ड विश्वविद्यालय की फिलॉसॉफिकल सोसाइटी, 25 मार्च, 1896. न्यूयॉर्क: द वेदांत सोसाइटी, 1901.

विल्सन, रॉबर्ट स्मिथ. भारत में ईसाई मिशनों के अप्रत्यक्ष प्रभाव. लंदन: जेम्स क्लार्क एंड कंपनी लिमिटेड, 1927.

द्वितीयक स्रोत

Machine Translated by Google

बेली, सी.ए. “आधुनिक भारतीय इतिहासलेखन” इतिहासलेखन का साथी, माइकल बेंटले द्वारा संपादित। न्यूयॉर्क: रूटलेज, 2006. 677-691.

बेली, सी.ए. आधुनिक दुनिया का जन्म, 1780-1914: वैश्विक संबंध और तुलनाएँ। ऑक्सफोर्ड: ब्लैकवेल पब्लिशिंग, 2004।

बेली, सुसान। “अठारहवीं शताब्दी से आधुनिक युग तक भारत में जाति, समाज और राजनीति।” गॉर्डन जॉनसन द्वारा संपादित द न्यू कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया में, भाग IV खंड 3. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999।

बेकरलेग, ग्विलिम. "वेदांत समाजों का प्रारंभिक प्रसार: इसका एक उदाहरण “आयातित स्थानीयता” न्यूमेन 51, संख्या 3 (2004): 296-320.

बेलेनोइट, हेडन जेए मिशनरी एजुकेशन एंड एम्पायर इन लेट कोलोनियल इंडिया, 1860-1920. लंदन: पिकरिंग एंड चैटो लिमिटेड, 2007.

भट्ट, चेतन. हिंदू राष्ट्रवाद: उत्पत्ति, विचारधाराएँ और आधुनिक मिथक. ऑक्सफोर्ड: बर्ग, 2001.

भट्ट, गौरी शंकर. “ब्रह्मो समाज, आर्य समाज और चर्च-संप्रदाय टाइपोलॉजी” धार्मिक अनुसंधान की समीक्षा 10 (1968), 23-32.

बोस, सुगाता और जलाल, आयशा। आधुनिक दक्षिण एशिया: इतिहास, संस्कृति, राजनीति अर्थव्यवस्था। न्यूयॉर्क: रूटलेज, 1998.

कैम्बर्स, एंड्रयू और वोल्फ, मिशेल। “लेट स्टुअर्ट इंग्लैंड में पढ़ना, पारिवारिक धर्म और इंजील पहचान” द हिस्टोरिकल जर्नल 47, नंबर 4 (2004): 875-896.

केव, सिडनी। रिडेम्पशन हिंदू और ईसाई। फ्रीपोर्ट, एनवाई: बुक्स फॉर लाइब्रेरीज़ प्रेस, 1969।

चैडविक, ओवेन। द माइंड ऑफ द ऑक्सफोर्ड मूवमेंट। स्टैनफोर्ड: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1960.

चैडविक, ओवेन. उन्नीसवीं सदी में यूरोपीय मन का धर्मनिरपेक्षीकरण: एडिनबर्ग विश्वविद्यालय में 1973-4 के लिए गिफर्ड व्याख्यान. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1975.

चटर्जी, अमल. भारत का प्रतिनिधित्व, 1740-1840: भारत का निर्माण औपनिवेशिक कल्पना। न्यूयॉर्क: सेंट मार्टिन प्रेस इंक, 1998।

क्लार्क, सथियानाथन। "हिंदुत्व, धार्मिक और जातीय अल्पसंख्यक, और भारतीय-ईसाई धर्मशास्त्र” हार्वर्ड थियोलॉजिकल रिव्यू 95, संख्या 2 (2002): 197-226।

Machine Translated by Google

कोपले, एंथनी आर.एच. धर्म संघर्ष में: विचारधारा, सांस्कृतिक संपर्क और उत्तर-औपनिवेशिक भारत में रूपांतरण। दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1997।

कोपले, एंथनी आर.एच. इंपीरियल फॉल्ट लाइन्स की समीक्षा: भारत में ईसाई धर्म और औपनिवेशिक शक्ति, 1818-1840 जेफरी कॉक्स द्वारा। अमेरिकी ऐतिहासिक समीक्षा 108 नंबर 4 (2003): 1128-1129।

कॉक्स, जेफ़री. इंपीरियल फ़ॉल्ट लाइन्स: क्रिस्चियनिटी एंड कोलोनियल पावर इन इंडिया, 1818-1840. स्टैनफोर्ड: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002.

कॉक्स, जेफ़री. "क्या विक्टोरियन नॉनकन्फ़र्मिस्ट सबसे बुरे साम्राज्यवादी थे?" विक्टोरियन अध्ययन 46 संख्या 2 (2004): 243-255.

डालमिया, वसुधा. हिंदू परंपराओं का राष्ट्रीयकरण: भारतेंदु हरिश्चंद्र और उन्नीसवीं सदी का बनारस। दिल्ली: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999।

डोनिगर ओ'फ्लेहर्टी, वेंडी. हिंदू पौराणिक कथाओं में बुराई की उत्पत्ति. बर्कले: यूनिवर्सिटी प्रेस, 1980.

डोनिगर ओ'फ्लेहर्टी, वेंडी. "हिंदू पौराणिक कथाओं में विधर्म की उत्पत्ति" धर्मों का इतिहास 10, संख्या 4 (1971): 271-333.

एलिएड, मिर्सिया। पवित्र और अपवित्र: धर्म की प्रकृति। अनुवादक: विलियम आर. ट्रस्क. ऑरलैंडो: हरकोर्ट बुक्स, 1987.

फ़ार्कुहार, जॉन निकोल. भारत में आधुनिक धार्मिक आंदोलन. दिल्ली: मुंशीराम मनोहरलाल ओरिएंटल पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स, 1967.

फ़ार्कुहार, जॉन निकोल. द क्राउन ऑफ़ हिंदूइज़्म. लंदन: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1971.

फ्रेंच, हाल डब्ल्यू. ग्रेट स्वान की समीक्षा : लेक्स हिक्सन द्वारा रामकृष्ण ग्रेट स्वान के साथ बैठकें। जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज 52 नंबर 3 (1993): 753-754।

फ्राइकेनबर्ग, रॉबर्ट एरिक। "भारत में ईसाई धर्म: शुरुआत से लेकर वर्तमान तक।" ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ द क्रिश्चियन चर्च में, हेनरी चैडविक और ओवेन चैडविक द्वारा संपादित। ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2008.

फ्राइकेनबर्ग, रॉबर्ट एरिक। "इतिहास और धर्म के गठजोड़ पर हिंदू धर्म का निर्माण" जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी हिस्ट्री 23 नंबर 3 (1993): 523-550।

फ्राइकेनबर्ग, रॉबर्ट एरिक। "परिचय: विवादित परिभाषाओं और अवधारणाओं से निपटना" विवादास्पद दृष्टिकोण।" भारत में ईसाई और मिशनरी: 1500 के बाद से क्रॉस-सांस्कृतिक संचार, जाति, धर्मांतरण और उपनिवेशवाद के विशेष संदर्भ में, रॉबर्ट एरिक फ्राइकेनबर्ग द्वारा संपादित। मिशिगन: डब्ल्यूएम। बी. एर्डमैन्स पब्लिशिंग कंपनी, 2003.

Machine Translated by Google

फ्राइकेनबर्ग, रॉबर्ट एरिक. “दक्षिण भारत में आधुनिक शिक्षा, 1784-1854: इसकी जड़ें और कंपनी राज के तहत एकीकरण के साधन के रूप में इसकी भूमिका” द अमेरिकन हिस्टोरिकल रिव्यू 91, नंबर 1 (1986): 37-65.

गोयल, सीता राम, हिंदू-ईसाई मुठभेड़ों का इतिहास, 304 ई. से 1996 ई. तक, नई दिल्ली:
वॉयस ऑफ इंडिया, 1996.

गोखले, बी.जी. “स्वामी विवेकानंद और भारतीय राष्ट्रवाद” जर्नल ऑफ बाइबल एंड
धर्म 32, सं.1 (1964): 35-42.

गोस्वामी, मनु. प्रोड्यूसिंग इंडिया: फ्रॉम कोलोनियल इकॉनमी टू नेशनल स्पेस. शिकागो:
शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस, 2004.

गोयल, एस.आर. प्राचीन भारत का धार्मिक इतिहास (लगभग 1200 ई. तक): पूर्व-वैदिक, वैदिक, जैन और बौद्ध धर्म, खंड 1. मेरठ: कुसुमांजलि प्रकाशन, 1984.

हैकर, पॉल। फिलोलोजी एंड कंफ़्रंटेशन: पॉल हैकर ऑन ट्रेडिशनल एंड मॉडर्न वेदांत, विल्हेम हेल्बफ़ास द्वारा संपादित। अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस, 1995।

हॉल, कैथरीन। सिविलाइज़िंग सब्जेक्ट्स: मेट्रोपोल और कॉलोनी इन द इंग्लिश इमेजिनेशन 1830-1867। शिकागो: द यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 2002।

हैचर, ब्रायन ए. “बुर्जुआ वेदांत: मध्यवर्गीय हिंदू धर्म की औपनिवेशिक जड़ें”
जर्नल ऑफ द अमेरिकन एकेडमी ऑफ रिलीजन 75 नंबर 2 (2007): 298-323.

इंडेन, रोनाल्ड. इमेजिनिंग इंडिया. कैम्ब्रिज, एमए: बेसिल ब्लैकवेल लिमिटेड, 1990.

जैफ्रेलोट, क्रिस्टोफर। "दूसरों के प्रति एक वैचारिक प्रतिक्रिया: सुधार से
उन्नीसवीं सदी में पुनरुत्थानवाद” हिंदू राष्ट्रवाद: एक पाठक, क्रिस्टोफर जैफ्रेलोट द्वारा संपादित। प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007।

जोन्स, केनेथ डब्ल्यू. डेविड कोफ़ द्वारा लिखित ब्रह्मो समाज और आधुनिक भारतीय मन की रचना की समीक्षा। जर्नल ऑफ़ एशियन स्टडीज़ 39 अंक 3 (1980): 632-634.

जोन्स, केनेथ डब्ल्यू. “ब्रिटिश भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन।” गॉर्डन जॉनसन द्वारा संपादित द न्यू कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया, भाग III खंड 1 में।
कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989.

जोन्स, केनेथ डब्ल्यू. “स्वामी दयानंद सरस्वती की ईसाई धर्म की आलोचना” ब्रिटिश भारत में धार्मिक विवाद: दक्षिण एशियाई भाषाओं में संवाद, केनेथ डब्ल्यू. जोन्स द्वारा संपादित। अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस, 1992।

जॉर्डन, जे.टी.एफ. “ब्रिटिश भारत में हिंदू धार्मिक और सामाजिक सुधार” भारत का सांस्कृतिक इतिहास, ए.एल. बाशम द्वारा संपादित। लंदन: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1975।

Machine Translated by Google

नाइट, फ़्रांसिस. द नाइनटीन्थ-सेंचुरी चर्च एंड इंग्लिश सोसाइटी. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1995.

कोफ़, डेविड. ब्रह्मो समाज और आधुनिक भारतीय मन का निर्माण. प्रिंसटन:
प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1979.

कृपाल, जेफ़री जे. "काली की जीभ और रामकृष्ण: तांत्रिक परंपरा की "जीभ काटना"" धर्मों का इतिहास 34 अंक 2 (1994): 152-189.

लैयर्ड, माइकल एंड्रयू. बंगाल में मिशनरी और शिक्षा, 1793-1837. लंदन:
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1972.

लुईस, डोनाल्ड एम. लाइटन देयर डार्कनेस: द इवेंजेलिकल मिशन टू वर्किंग-क्लास लंदन, 1828-1860. न्यूयॉर्क: ग्रीनवुड प्रेस, 1986.

लिपनर, जूलियस। "हिंदू: उनके धार्मिक विश्वास और व्यवहार।" लाइब्रेरी ऑफ़ हिंदू में
धार्मिक विश्वास और व्यवहार, जॉन हिनेल्स और निनियन स्मार्ट द्वारा संपादित। न्यूयॉर्क: रूटलेज, 1994।

लोरेंजेन, डेविड एन. "हिंदू धर्म का आविष्कार किसने किया?" समाज और इतिहास में तुलनात्मक अध्ययन 41, संख्या 4 (1999): 630-659।

मीचम, स्टैंडिश. "द इवेंजेलिकल इनहेरिटेंस" द जर्नल ऑफ ब्रिटिश स्टडीज 3, नंबर 1 (1963): 88-104.

मैकलॉघलिन, जेनिफर पेट्राफेसा। "इवेंजेलिकलिज्म का उदय: एडवर्ड्स, व्हाइटफील्ड और वेस्ले का युग" कैथोलिक हिस्टोरिकल रिव्यू 92 नंबर 4 (2006):
638-640।

मैकलियोड, ह्यूग. "विक्टोरियन विश्वास की विविधताएँ" द जर्नल ऑफ़ मॉडर्न हिस्ट्री 64 नंबर 2
(1992): 321-337.

मिलर, ए.ए. एलेक्जेंडर डफ ऑफ इंडिया। एडिनबर्ग, कैनॉनगेट प्रेस, 1992।

मिलिंगटन, कॉन्स्टेंस एम. "चाहे हम बहुत हों या कम:" इतिहास
कैम्ब्रिज/दिल्ली ब्रदरहुड. बैंगलोर: एशियन ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन, 1999.

नोकल्स, पीटर. "चर्च या प्रोटेस्टेंट संप्रदाय? आयरलैंड का चर्च, हाई चर्चमैनशिप और ऑक्सफोर्ड मूवमेंट, 1822-1869" द हिस्टोरिकल जर्नल 41 नंबर 2 (1998): 457-
493.

न्यूमरिच, पॉल डी. कार्ल टी. जैक्सन द्वारा लिखित 'वेदांत फॉर द वेस्ट: द रामकृष्ण मूवमेंट इन द यूनाइटेड स्टेट्स' की समीक्षा। धार्मिक शोध की समीक्षा 37 अंक 2
(1995): 168-169।

Machine Translated by Google

ओडी, जेफ्री ए. “हिंदू धर्म का निर्माण: प्रोटेस्टेंट मिशनरी आंदोलन का हिंदू आत्म-समझ पर प्रभाव।” भारत में ईसाई और मिशनरी: 1500 के बाद से क्रॉस-कल्चरल कम्युनिकेशन, जाति, धर्मांतरण और उपनिवेशवाद के विशेष संदर्भ के साथ, रॉबर्ट एरिक फ्राइकेनबर्ग द्वारा संपादित।

मिशिगन: डब्ल्यूएम. बी. एर्डमैन्स पब्लिशिंग कंपनी, 2003.

ओडी, जेफ्री, ए. कल्पित हिंदू धर्म: हिंदू धर्म के ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट मिशनरी निर्माण, 1793-1900. नई दिल्ली: SAGE प्रकाशन, 2006.

ओडी, जेफ्री ए. मिशनरीज, विद्रोह और प्रोटो-नेशनलिज्म: बंगाल के जेम्स लॉन्ग 1814-1847. सर्री: कर्जन प्रेस, 1999.

ओडी, जेफ्री ए. भारत में सामाजिक विरोध: ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट मिशनरी और सामाजिक सुधार, 1850-1900. नई दिल्ली: मनोहर प्रकाशन, 1979.

पेनिंगटन, ब्रायन के. "औपनिवेशिक धर्म का निर्माण: उभरते का क्रॉनिकल
हिंदू धर्म, 1830-1831” जर्नल ऑफ द अमेरिकन एकेडमी ऑफ रिलीजन 69 अंक 3 (2001): 577-603.

पोर्टर, एंड्रयू. "चर्च का इतिहास, ईसाई धर्म का इतिहास, धार्मिक इतिहास: कुछ
अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध से ब्रिटिश मिशनरी उद्यम पर विचार”
चर्च इतिहास 71 नं. 3 (2002): 555-584.

पोर्टर, एंड्रयू. धर्म बनाम साम्राज्य? ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट मिशनरी और विदेशी विस्तार, 1700-1914. मैनचेस्टर: मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004.

पुरिंटन, कार्ल ई. स्वामी विवेकानंद द्वारा रचित पुस्तक रामकृष्ण: नये भारत के भविष्यवक्ता की समीक्षा
निखिलानंद, एल्डस हक्सले द्वारा अग्रलिखित। जर्नल ऑफ बाइबल एंड रिलीजन 17 अंक 1 (1949): 67-68।

रॉब, केली एन. "क्या पारलौकिकता के बारे में कुछ पारलौकिक है?
श्री रामकृष्ण का दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक अध्ययन” जर्नल ऑफ द अमेरिकन एकेडमी ऑफ रिलीजन 63 अंक 2 (1995): 321-341.

राधाकृष्णन, एस. द हिंदू व्यू ऑफ लाइफ, मैनचेस्टर कॉलेज, ऑक्सफोर्ड में दिए गए अप्टन व्याख्यान, 1926. लंदन: जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड, 1927.

सरमा, डी.एस. “श्री रामकृष्ण परमहंस का अनुभव” द जर्नल ऑफ रिलिजन
7 संख्या 2 (1927): 186-203.

श्नाइडरमैन, लियो. “धार्मिक व्यक्ति के विकास में व्यक्तित्व और सामाजिक कारक”
आंदोलन” जर्नल फॉर द साइंटिफिक स्टडी ऑफ रिलीजन 8 नंबर 1 (1969): 60-71.

शार्प, एरिक जे. फेथ मीट्स फेथ: सम क्रिस्चियन एटीट्यूड्स टू हिंदूइज़्म इन द नाइनटीन्थ एंड ट्वेंटिएथ सेंचुरीज़। लंदन: एससीएम प्रेस लिमिटेड, 1977।

Machine Translated by Google

सिल, नरसिंह पी. "विवेकानंद के रामकृष्ण: मिथक निर्माण और की एक अनकही कहानी"
प्रचार" संख्या 40, सं. 1 (1993): 38-62.

सिंह, के.पी. आर्य समाज आंदोलन: पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सामाजिक-धार्मिक चेतना का अध्ययन, 1875-1926. लखनऊ: तरुण
खंड, 2002.

स्लेटर, थॉमस एबेनेज़र। ईसाई धर्म के संबंध में उच्च हिंदू धर्म; ईसाई दृष्टिकोण से हिंदू विचार के कुछ पहलू। लंदन: इलियट स्टॉक, 1902।

स्मिथ, ब्रायन के. समानता, अनुष्ठान और धर्म पर विचार। ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989।

स्मिथ, डेविड. हिंदू धर्म और आधुनिकता. ऑक्सफोर्ड: ब्लैकवेल पब्लिशिंग, 2003.

स्मिथ, चार्ल्स. "द इवेंजेलिकल मूवमेंट इन पर्सपेक्टिव" कैम्ब्रिज हिस्टोरिकल
जर्नल 7 नं. 3 (1943): 160-174.

स्टडर्ट-केनेंडी, गेराल्ड। प्रोविडेंस और राज: इंपीरियल मिशन और मिशनरी साम्राज्यवाद। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशंस इंक., 1998।

विश्वनाथन, गौरी. विजय के मुखौटे: साहित्यिक अध्ययन और भारत में ब्रिटिश शासन. नई
यॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989.

वाट, सी.ए. राष्ट्र की सेवा: सेवा, संगठन और नागरिकता की संस्कृतियाँ। ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005।

यंग, रिचर्ड फॉक्स. प्रतिरोधी हिंदू धर्म: ईसाई-विरोधी विचारों पर संस्कृत स्रोत
उन्नीसवीं सदी के आरंभिक भारत में क्षमाप्रार्थी। वियना: वियना विश्वविद्यालय में इंडोलॉजी संस्थान, 1981।

ज़ब्रिस्की, अलेक्जेंडर सी. "चार्ल्स शिमोन: एंग्लिकन इवैमजेलिकल" चर्च हिस्ट्री 9 नंबर 2 (1940): 103-119.